Useful For Prelims

Date: 16 - Nov - 2025

गर्भावस्था में हो सकता मददगार

वैज्ञानिकों ने 'जेनेटिक स्विच' का पता लगाया

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

गर्भावस्था की शुरुआत को समझने के लिए किए गए भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के एक अध्ययन के दौरान एक 'जेनेटिक स्विच' के बारे में पता चला है, जिसकी मदद से भ्रूण गर्भाशय की झिल्ली पर चिपक जाता है और फिर गर्भधारण संभव होता है।

गर्भावस्था की शुरुआत के लिए भ्रूण का पहले महिला के गर्भाशय की झिल्ली से जुड़ना और उसमें समाहित होना आवश्यक होता है। लेकिन यह प्रक्रिया कैसे होती है, यह एक रहस्य बना हुआ था। अंतरराष्ट्रीय पत्रिका 'सेल डेथ डिस्कवरी' में प्रकाशित अध्ययन में भ्रूण प्रतिरोपण को नियंत्रित करने वाले एक मौलिक 'जैविक स्विच' का खुलासा किया है।

यह अध्ययन भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य संस्थान (आइसीएमआर-एनआइआरआरसीएच), मुंबई, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू), वाराणसी, और भारतीय विज्ञान संस्थान (आइआइएस), बंगलुरु के बीच सहयोग से किया गया। इस अध्ययन आणविक जीवविज्ञान, जीनोमिक्स और गणितीय माडलिंग के विशेषज्ञों ने सहयोग किया। आइसीएमआर-एनआइआरआरसीएच के वैज्ञानिक और अध्ययन के लेखक डा दीपक मोदी ने बताया कि इससे पता चला कि दो जीन हाक्सा10 और ट्विस्ट2 सही समय पर गर्भाशय की झिल्ली पर एक छोटी सी जगह को खोलने या बंद करने का काम करते हैं। उन्होंने कहा कि गर्भाशय की आंतरिक परत किसी किले की दीवार की तरह होती है। उन्होंने कहा कि यह मजबूत, सुरक्षात्मक और सामान्यतः किसी भी चीज के प्रवेश को रोकने के लिए बंद हो जाती है। इस अध्ययन की प्रमुख लेखिका नैन्सी अशरी ने बताया कि प्रतिरोपण की प्रक्रिया के सफल होने के लिए, इस परत को भ्रूण के आगमन के स्थान पर एक छोटा सा द्वार खोलना होता है। अध्ययन में पता चला कि हाक्सा 10 जीन गर्भाशय की झिल्ली को बंद और सुरक्षित रखता है। आइआइएस, बंगलुरु के डा मोहित जाली ने कहा, 'लेकिन जब भ्रूण झिल्ली में प्रवेश कर जाता है, तो हाक्सा10 उस स्थान पर अस्थायी रूप से बंद हो जाता है। इस छोटे 'स्विच-आफ' के बाद एक अन्य जीन ट्विस्ट2 का काम आता है।

Jansatta Page No-7

अभ्यास फ्रांस के मांट-डे-मार्सन शहर में आयोजित होने वाले संयुक्त अभ्यास में भाग लेने के लिए पहुंचे वायुसेना के जवान।

Jansatta Page No-7

भारत ने संयुक्त राष्ट्र संगठन में सुधार का आह्वान किया

संयुक्त राष्ट्र, 15 नवंबर (भाषा) ।

भारत ने 15 देशों की सदस्यता वाले शक्तिशाली संयुक्त राष्ट्र संगठन में सुधार का आह्वान करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को उद्देश्यपूर्ण बनाने, मौजूदा और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने और अपने कार्यों का उद्देश्यपूर्ण ढंग से निर्वहन करने के वास्ते सक्षम बनाने के लिए आठ दशक पुरानी संरचना को नया स्वरूप देने पर समग्र प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि, राजदूत पर्वतनेनी हरीश ने शुक्रवार (स्थानीय समयानुसार) को कार्यप्रणाली पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की खुली बहस को संबोधित करते हुए कहा कि सुरक्षा परिषद संयुक्त राष्ट्र की संरचना में केंद्रीय है और एक प्रमुख अंग है जिसकी मुख्य रूप से अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की जिम्मेदारी है।

हरीश ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सहायक संगठनों के कामकाज में अधिक पारदर्शिता का आह्वान किया है तथा बिना कोई उचित स्पष्टीकरण दिए संगठनों और व्यक्तियों को आतंकवादी संगठन या आतंकवादी घोषित करने के अनुरोधों को खारिज करने का हवाला दिया है। हरीश ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र के एक अंग के रूप में सुरक्षा परिषद की कार्यप्रणाली इसकी विश्वसनीयता, प्रभावकारिता, दक्षता और पारदर्शिता के लिए महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि इसके कार्यक्षेत्र में कई क्षेत्र शामिल हैं लेकिन सदस्यों की संख्या केवल 15 सदस्यों तक सीमित है। सुरक्षा परिषद कई संकटों से घिरे और कई चुनौतियों का सामना कर रहे विश्व में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

Jansatta Page No-7

विदेश मंत्री ने अमेरिका में भारतीय दूतों के सम्मेलन की अध्यक्षता की

जयशंकर ने द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की

न्यूयार्क, 15 नवंबर (भाषा) ।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अमेरिका में भारत के महावाणिज्य दूतों के सम्मेलन में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों और प्रवासी भारतीयों से संबंधी गतिविधियों को दिए जाने वाले समर्थन की समीक्षा की।

जयशंकर ने सोशल मीडिया पर एक 'पोस्ट' में कहा कि हमारे द्विपक्षीय संबंधों और प्रवासी भारतीयों से संबंधी गतिविधियों के लिए समर्थन की समीक्षा की। भारत-अमेरिका साझेदारी को मजबूत करने के लिए हमारे दूतावास और वाणिज्य दूतावासों की प्रतिबद्धता एवं प्रयासों की सराहना करता हूं।

जयशंकर ने शुक्रवार को न्यूयार्क स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास में आयोजित महावाणिज्य दूत सम्मेलन की अध्यक्षता की जिसमें अमेरिका में भारतीय राजदूत विनय क्षात्रा, वाशिंगटन डीसी स्थित भारतीय दूतावास में मिशन उप प्रमुख नामग्या खम्पा के साथ-साथ अटलांटा, बोस्टन, शिकागो, ह्यूस्टन, लास एंजिलिस, न्यूयार्क, सैन फ्रांसिस्को और सिएटल स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावासों के सभी दूतों ने हिस्सा लिया।

महावाणिज्य दूत विनय प्रधान के नेतृत्व में न्यूयार्क स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि वाणिज्य दूतावास परिसर में जयशंकर का स्वागत करना सम्मान की बात थी। वाणिज्य दूतावास ने कहा कि उनका नजरिया, मार्गदर्शन और नेतृत्व भारत-अमेरिका साझेदारी के लिए काम करने की हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत करता है। जयशंकर ने एक दिन पहले संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस से मुलाकात की थी। जयशंकर के साथ संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि पी. हरीश, संयुक्त राष्ट्र में उप-स्थायी प्रतिनिधि राजदूत योजना पटेल और संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन के अधिकारी भी मौजूद थे।

जयशंकर ने गुरुवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि आज न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस से मिलकर अच्छा लगा। वर्तमान वैश्विक व्यवस्था और बहुपक्षवाद पर इसके प्रभावों के उनके आकलन की सराहना करता हूं। विभिन्न क्षेत्रीय मुद्दों पर उनके दृष्टिकोण की भी सराहना करता हूं।

Jansatta Page No-7

अमेरिकी प्रशासन ने महंगाई से निपटने के लिए उठाया कदम

काफी और फलों पर से हटाया गया शुल्क

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को कहा कि वह मांस, काफी, उष्णकटिबंधीय फलों और कई अन्य वस्तुओं पर शुल्क हटा रहे हैं। ट्रंप प्रशासन पर उच्च उपभोक्ता कीमतों से निपटने के लिए दबाव लगातार बढ़ रहा था, जिसके चलते उन्होंने यह कदम उठाया। ट्रंप ने अपने दूसरे कार्यकाल में घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करने और अमेरिकी अर्थव्यवस्था को ऊपर उठाने के लिए आयातित वस्तुओं पर भारी शुल्क लगाया है।

हालांकि कई खाद्य पदार्थों पर शुल्क वापस लेने का फैसला इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस महीने हुए चुनावों में मतदाताओं ने आर्थिक चिंताओं को शीर्ष मुद्दा बताया था। इसके चलते वर्जीनिया, न्यू जर्सी और देश के अन्य प्रमुख चुनावों में डेमोक्रेट्स को बड़ी जीत मिली। ट्रंप ने फ्लोरिडा के लिए उड़ान भरते समय एअर फोर्स वन में कहा, 'हमने काफी जैसे कुछ खाद्य पदार्थों पर थोड़ा सा शुल्क वापस लिया है।'

अमेरिकी राष्ट्रपति ने स्वीकार किया कि उनके शुल्क संबंधी फैसलों से कुछ मामलों में उपभोक्ता कीमतों में वृद्धि हुई, लेकिन साथ ही कहा कि काफी हद तक इसका बोझ दूसरे देशों पर पड़ा है।

ट्रंप प्रशासन ने जोर देकर कहा है कि उसके शुल्क ने सरकारी खजाने को भरने में मदद की है और देश भर में किराने की दुकानों पर बढ़ती कीमतों का कोई बड़ा कारण नहीं है।

'कनाडा के साथ एफटीए वार्ता शुरू करने के विकल्प खुले'

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि कनाडा के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर वार्ता फिर से शुरू करने के संबंध में सभी संभावनाओं पर विचार किया जा रहा है। वाणिज्य मंत्री ने बताया कि उन्होंने कनाडा के निर्यात संवर्धन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक विकास मंत्री मनिंदर सिद्धू के साथ दो दौर की चर्चा की है और दोनों ही द्विपक्षीय सहयोग तथा रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने के तरीकों पर विचार कर रहे हैं। गोयल ने यहां कहा, 'सभी संभावनाएं खुली हैं। हमने अब तक दो दौर की चर्चा की है। हम दिल्ली में एक उच्च स्तरीय मंत्रिस्तरीय बैठक के लिए आपस में मिले थे।'

प्रदूषण से हाल बेहाल

राजधानी के कई इलाकों में वायु गुणवत्ता सूचकांक 400 के पार

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

दिल्ली की वायु गुणवत्ता शनिवार को लगातार दूसरे दिन भी 'बहुत खराब' श्रेणी में रही और 16 निगरानी केंद्रों में वायु गुणवत्ता 'गंभीर श्रेणी' में दर्ज की गई। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा जारी शाम चार बजे के अनुसार, शनिवार को 24 घंटे का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक 386 रहा, जो 'बहुत खराब' श्रेणी में आता है।

सीपीसीबी के समीर एप के अनुसार, बवाना में सबसे ज्यादा वायु गुणवत्ता 443 दर्ज किया गया, जबकि वजीरपुर में 434, नेहरू प्लेस में 408, चांदनी चौक में 450, सत्यवती कालेज में 469 और बुराड़ी में 477 दर्ज किया गया।

भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आइआइटीएम), पुणे द्वारा वायु गुणवत्ता विश्लेषण और पूर्वानुमान के लिए उपयोग की जाने वाली 'निर्णय समर्थन' प्रणाली (डीएसएस) के अनुसार, शनिवार को दिल्ली के प्रदूषकों में पराली जलाने से होने वाले उत्सर्जन की हिस्सेदारी 16.3 फीसद थी, जबकि वाहनों से होने वाले उत्सर्जन की हिस्सेदारी 18.3 फीसद थी, जो सभी स्रोतों में सबसे अधिक है।

देश में सबसे प्रदूषित रहा ग्रेटर नोएडा

ग्रेटर नोएडा की हवा देश में सबसे प्रदूषित दर्ज की गई। यहां का वायु गुणवत्ता सूचकांक 418 तक पहुंच गया, जो वायु गुणवत्ता की सबसे खराब श्रेणी यानी गंभीर में आता है। प्रदूषण के मामले में दूसरा स्थान भी इसी जिले के शहर नोएडा का रहा, जहां का वायु गुणवत्ता सूचकांक 397 दर्ज किया गया। यह आंकड़ा बहुत खराब श्रेणी के ऊपरी छोर पर है। इसके तुरंत बाद तीसरे नंबर पर गाजियाबाद शहर रहा, जिसका वायु गुणवत्ता सूचकांक 392 दर्ज किया गया, जो बहुत खराब श्रेणी में आता है।

पारा 9.7 डिग्री पर पहुंचा, मौसम का सबसे कम तापमान

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में ठंड का असर बढ़ने लगा है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आइएमडी) के अनुसार, शहर में शनिवार को इस मौसम का अब तक का सबसे कम न्यूनतम तापमान दर्ज किया गया, जो सामान्य से 3.8 डिग्री कम 9.7 डिग्री सेल्सियस रहा। अधिकतम तापमान सामान्य से 1.9 डिग्री कम 26.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। आइएमडी के आंकड़ों के अनुसार, पिछले साल नवंबर का सबसे कम तापमान 29 नवंबर को 9.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था, जबकि 2023 में यह 23 नवंबर को 9.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। इसने रविवार को हल्का कोहरा रहने तथा तापमान 25 डिग्री सेल्सियस (अधिकतम) और 10 डिग्री सेल्सियस (न्यूनतम) के आसपास रहने का पूर्वानुमान व्यक्त किया है।

अगिआंव विधानसभा सीट पर भी मात्र 95 मतों से जय-पराजय | **बिहार चुनाव** | रूपौली में 73,572 मतों का अंतर सबसे बड़ा रहा

संदेश में 27 और रामगढ़ में 30 मत के अंतर से हुई जीत-हार

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजे घोषित हो चुके हैं और तस्वीर साफ है, लेकिन कई सीट पर मुकाबला इतना करीबी रहा कि जीत-हार का अंतर 500 मतों से भी कम है। संदेश, रामगढ़ और अगिआंव निर्वाचन क्षेत्रों में यह अंतर 100 मतों से भी कम रहा। वहीं, रूपौली में सबसे बड़े अंतर 73,572 मतों के अंतर से जीत-हार हुई।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को प्रचंड बहुमत मिला है। निर्वाचन आयोग के आंकड़ों के अनुसार राज्य की संदेश विधानसभा सीट पर सबसे कम 27 मतों के अंतर से जीत हार हुई। संदेश सीट पर जनता दल (एकी) के उम्मीदवार राधा चरण साह को 80,598 मत मिले और उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के दीपू सिंह को 27 मतों के अंतर से हराया। दीपू सिंह को 80,571 हासिल हुए। इसी तरह रामगढ़ विधानसभा सीट पर बसपा के उम्मीदवार सतीश कुमार सिंह यादव केवल 30 मतों से जीते। उन्होंने भाजपा के अशोक कुमार सिंह को हराया जिन्हें 72,659 मत मिले थे। इसी तरह अगिआंव सीट पर भी मात्र 95 मतों से जीत-हार हुई।

> *500* से कम के जीत-हार के अंतर की बात करें तो बलरामपुर में 389, ढाका में 178, फारबिसगंज में 221, नबीनगर में 112 और रामगढ़ में 175 वोट का अंतर दर्ज किया गया। इसके अलावा बख्तियारपुर, बोध गया, चनपटिया और जहानाबाद उन विधानसभा क्षेत्रों में शामिल हैं, जहां जीत-हार का अंतर 1000 से 500 के बीच रहा।

फाइल फोटो

यहां भाजपा के प्रत्याशी महेश पासवान को 69,412 मत और भाकपा (माले) के उम्मीदवार शिव प्रकाश रंजन को 69,317 मत प्राप्त हुए थे। अगर 500 से कम के जीत-हार के अंतर की बात करें तो बलरामपुर में 389, ढाका में 178, फारबिसगंज में 221, नवीनगर में 112 और रामगढ़ में 175 वोट का अंतर दर्ज किया गया। इसके अलावा बख्तियारपुर, बोध गया, चनपटिया और जहानाबाद उन विधानसभा क्षेत्रों में शामिल हैं, जहां जीत-हार का अंतर 1000 से 500 के बीच रहा। बख्तियारपुर में 981, बोधगया में 881, चनपटिया में 602 और जहानाबाद में 793 वोट के अंतर से जीत दर्ज की गई।

वहीं, इन चुनावों में सबसे बड़ी जीत की बात करें तो रूपौली विधानसभा सीट से जद (एकी) के उम्मीदवार कलाधर प्रसाद मंडल ने दर्ज की। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी राजद की प्रत्याशी बीमा भारती को 73,572 मतों के अंतर से हराया। बीमा भारती को 51,254 मत प्राप्त हुए। इसी तरह दीघा में भाजपा उम्मीदवार संजीव चौरसिया ने भाकपा (माले) की उम्मीदवार दिव्या गौतम को 59,079 मतों से हराया। सुगौली में लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के उम्मीदवार राजेश कुमार 58,191 मतों से, गोपालपुर में जद (एकी) के प्रत्याशी शैलेष कुमार 58,135 और औराई से भाजपा उम्मीदवार राम निशाद 57,206 मतों से जीते।

Jansatta Page No-1

निर्वाचन आयोग ने सुप्रीम कोर्ट में कहा

बतौर पहचान आधार के उपयोग का दिया था निर्देश

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

निर्वाचन आयोग ने सुप्रीम कोर्ट को सूचित किया है कि उसने बिहार में संशोधित मतदाता सूची में नाम शामिल करने या हटाने के लिए आधार को नागरिकता के नहीं, बल्कि पहचान के प्रमाण के रूप में इस्तेमाल के निर्देश पहले ही जारी कर दिए थे। शीर्ष अदालत में दाखिल जवाब में आयोग ने कहा कि न्यायालय ने मतदाता सूची को अद्यतन करने के लिए आधार के इस्तेमाल के नियम आठ सितंबर को ही स्पष्ट कर दिए थे।

आयोग ने कहा कि अदालत ने स्पष्ट किया था कि जनप्रतिनिधित्व अधिनियम (आरपीए) 1950 की धारा 23(4) के मद्देनजर आधार कार्ड का इस्तेमाल पहचान स्थापित करने के उद्देश्य से किया जाना चाहिए। आरपीए की धारा 23 मतदाता सूची में नाम शामिल करने से संबंधित है। निर्वाचन आयोग ने कहा, 'उपरोक्त आदेश का पालन करते हुए आयोग ने बिहार के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) को नौ सितंबर 2025 को निर्देश जारी कर दिया था कि राज्य की संशोधित मतदाता सूची में नाम शामिल करने या हटाने के लिए आधार को पहचान के प्रमाण के रूप में इस्तेमाल किया जाए, न कि नागरिकता के प्रमाण के तौर पर।'

आयोग ने अधिवक्ता अश्विनी कुमार उपाध्याय की ओर से दायर उस अंतरिम याचिका पर अपना जवाब दाखिल किया, जिसमें यह निर्देश देने का अनुरोध किया गया था कि आधार का इस्तेमाल आरपीए 1950 की धारा 23(4) की भावना के अनुरूप केवल पहचान स्थापित करने और सत्यापन के उद्देश्य से किया जाए। निर्वाचन आयोग ने कहा कि भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआइडीएआइ) ने अगस्त 2023 में जारी एक कार्यालय ज्ञापन (ओएम) में स्पष्ट किया था कि आधार नागरिकता, निवास या जन्म तिथि का प्रमाण नहीं है।

उसने कहा कि बंबई हाई कोर्ट ने एक मामले में संबंधित कार्यालय ज्ञापन का हवाला देते हुए स्पष्ट किया था कि यह (आधार) वास्तव में जन्मतिथि का प्रमाण नहीं है और इसे (जन्मतिथि) साबित करने का दायित्व आधार धारक पर है।

Jansatta Page No-1

Dainik Jagaran Page No-3

47वें जमनालाल बजाज फाउंडेशन के पुरस्कार विजेता सम्मानित

हसमुख वावूभाई पटेल, पी. एम. मुरुगेसन, सेकाचेवा ल्यूडमिला ल्योनिदोव्ना और त्रिवेणी आचार्य। ● सौ. जमनालाल बजाज फाउंडेशन

मुंबई (वि.) : 47वें जमनालाल बजाज फाउंडेशन पुरस्कार के विजेताओं को मुंबई में सम्मानित किया गया। ये पुरस्कार उन शख्सियतों को प्रदान किया जाता है जिनके प्रभावशाली कार्यों में गांधीवादी आदर्शों और जनकल्याण के मूल सिद्धांतों की साफ झलक दिखाई देती है। इसके तहत चार अलग-अलग वर्गों में विजेताओं को प्रशस्ति पत्र, ट्राफी व 20 लाख का नकद इनाम प्रदान किया जाता है। विजेताओं को मुख्य अतिथि स्वामी चिदानन्द सरस्वती महाराज, जमनालाल बजाज फाउंडेशन के बोर्ड आफ ट्रस्टीज के अध्यक्ष शेखर बजाज, फाउंडेशन के ट्रस्टी एवं अध्यक्ष डा. आरए माशेलकर ने सम्मान से नवाजा।

रचनात्मक कार्य हेतु यह पुरस्कार गुजरात के हसमुख बाबूभाई पटेल को दिया गया। ग्रामीण विकास के लिए विज्ञान एवं टेक्नोलाजी के उपयोग हेतु तमिलनाडु के पीएम मुरुगेसन को इस सम्मान से नवाजा गया। इसके अलावा महिलाओं तथा बच्चों के विकास एवं कल्याण हेतु पुरस्कार (पद्म विभूषण जानकीदेवी बजाज की स्मृति में शुरू किया गया) महाराष्ट्र की त्रिवेणी आचार्य को दिया गया। भारत के बाहर गांधीवादी मूल्यों को प्रोत्साहन देने के लिए अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार रूस की सेकाचेवा ल्यूडमिला ल्योनिदोव्ना को प्रदान किया गया। इस अवसर पर शेखर बजाज ने कहा कि जमनालाल बजाज फाउंडेशन पुरस्कार हर साल ऐसे लोगों की असाधारण कहानियों को दुनिया के सामने लाने का माध्यम है जो आज की दुनिया में निःस्वार्थ भाव से सेवा करते हुए गांधीवादी सिद्धांतों को आगे बढ़ाते हैं।

Dainik Jagaran Page No-17

अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क के जरिये साजिश कर आइएसआइ ने कराया दिल्ली में ब्लास्ट

जांच एजेंसियों का दावा, आतंकी हमले में सीधी भूमिका छिपाने को पाक खुफिया एजेंसी का नया पैंतरा

नई दिल्ली, आइएएनएस: दिल्ली के लाल किला कार ब्लास्ट मामले की जांच में खुफिया एजेंसियों को नए सुराग हाथ लगे हैं। एजेंसियों का दावा है कि पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आइएसआइ ने इस हमले में अपनी सीधी भूमिका छिपाने के लिए अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क की मदद से साजिश रची। इसके लिए अफगानिस्तान और तुर्किये जैसे देशों का इस्तेमाल किया गया। घटना में 12 लोग मारे गए थे, जबकि दर्जनों घायल हो गए थे।

इंटेलिजेंस ब्यूरो के अधिकारियों के अनुसार, आइएसआइ नहीं चाहती थी कि हमला किसी भी तरह पाकिस्तान से जुड़कर सामने आए। पहलगाम हमले के बाद भारत की कड़ी प्रतिक्रिया और 'आपरेशन सिंदूर' के चलते पाकिस्तान पहले ही दबाव में था। वह नहीं चाहता था कि किसी तरह का सुबूत सामने आए और आपरेशन सिंदूर 2.0 जैसा कुछ झेलना पड़े। भारत ने चेतावनी दी थी कि आगे के सभी आतंकी हमलों को देश के साथ युद्ध की तरह देखा जाएगा। इसके अलावा फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) की कड़ी निगरानी को देखते हुए वह दोबारा ग्रे या ब्लैक लिस्ट में जाने का जोखिम नहीं ले सकता था। आइएसआइ ने सुनिश्चित किया कि जब इस घटना की जांच हो तो पाकिस्तान से किसी भी तरह का सीधा संचार न सामने आए। इसी वजह से जम्मू-कश्मीर के रहने वाले मौलवी इरफ़ान अहमद को चुना गया, जिसे भारत के भीतर माड्यूल बनाने और लोगों को भर्ती करने की जिम्मेदारी दी गई। इसी के तहत फरीदाबाद माड्यूल तैयार हुआ। अहमद और कई अन्य आरोपी लगातार अफगानिस्तान में बैठे जैश-ए-मोहम्मद के हैंडलर्स के संपर्क में थे। यह सेल 2021 में सक्रिय किया गया था। जांच में तुर्किये से जुड़े संपर्क भी मिले हैं। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने डा. मुजफ्फर राथर के खिलाफ रेड कार्नर नोटिस की मांग की है। माना जाता है कि वह इस समय अफगानिस्तान में है। राथर के साथ डा. मुजम्मिल अहमद गनई और डा. उमर नबी 2021 में 20 दिनों के लिए तुर्किये गए थे। वे वहां आइएसआइ के नेटवर्क से जुड़े कुछ लोगों से मिले और माड्यूल सेट-अप में मदद मांगी। हालांकि तुर्किये की डायरेक्टरेट आफ कम्युनिकेशंस-सेंटर फार काउंटरिंग डिसइन्फार्मेशन ने बयान जारी कर कहा है कि उसका देश कट्टरपंथ या आतंक से जुड़े किसी भी गतिविधि के लिए इस्तेमाल नहीं होने दिया जाएगा।

जांच

- पाकिस्तान का नाम न जुड़े इसलिए अफगान-तुर्किये से चलाया गया आपरेशन
- आपरेशन सिंदूर 2.0 और एफएटीएफ की ब्लैक लिस्ट से बचने का नया पैंतरा
- अफगानिस्तान में मौजूद जैश-ए-मोहम्मद के सेल को किया गया सक्रिय

लाल किला के पास हुए विस्फोट के बाद का दृश्य ● (फाइल) जागरण

पठानकोट में डाक्टर पकड़ा अल फलाह में कर चुका है काम

जासं, पठानकोट: दिल्ली धमाके में पंजाब कनेक्शन भी सामने आया है। सुरक्षा एजेंसियों ने शुक्रवार रात सुरक्षा एजेंसियों ने शुक्रवार रात पंजाब के पठानकोट के हाइट मेडिकल कालेज एंड अस्पताल से डाक्टर रईस अहमद भट्ट को हिरासत में लिया है। वह जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग का रहने वाला है और सर्जन के पद पर तैनात है। वह पहले फरीदाबाद की अल फलाह यूनिवर्सिटी में काम कर चुका है।

Dainik Jagaran Page No-17

संतान सुख से महरूम हैं तो हो सकती है 'जेनेटिक स्विच' की समस्या

नई दिल्ली, प्रेट्र: संतान सुख से वंचित परिवार क्या कुछ नहीं करते। गर्भधारण के लिए तमाम तकनीकी उपाय, कष्टप्रद प्रक्रियाओं के साथ-साथ लाखों रुपये खर्च करने पड़ जाते हैं। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के विज्ञानियों ने इस समस्या के समाधान की दिशा में बड़ी सफलता हासिल की है। विज्ञानियों ने पता लगाया है कि गर्भधारण की शुरुआत कैसे होती है। विज्ञानियों ने एक 'जेनेटिक स्विच' खोजा है, जो भ्रूण को गर्भाशय की दीवार पर प्रत्यारोपित होने की अनुमति देता है। इसके बाद गर्भधारण की प्रक्रिया पूरी होती है। इस खोज से उम्मीद है कि आइवीएफ जैसी आधुनिक गर्भधारण तकनीक की सफलता दर को कई गुना बेहतर

- **आइसीएमआर के शोध में सामने आया निष्कर्ष, गर्भधारण के लिए अहम है जेनेटिक स्विच**
- **यह भ्रूण को गर्भाशय की दीवार में प्रत्यारोपित करके गर्भ धारण करने में करते हैं मदद**

किया जा सकेगा। गर्भधारण की शुरुआत के लिए, भ्रूण को सबसे पहले मां के गर्भ की दीवार से जुड़ना और उसमें जड़ जमाना जरूरी है। लेकिन ऐसा कैसे होता है, इस पर रहस्य बना हुआ है। विज्ञानियों का ये अध्ययन अंतरराष्ट्रीय जर्नल 'सेल डेथ डिस्कवरी' में प्रकाशित हुआ है, जिसमें इस मूलभूत जैविक स्विच पर नई रोशनी डाली गई है, जो भ्रूण के प्रत्यारोपण को नियंत्रित करता है।

कैसे काम करते हैं ये जेनेटिक स्विच

आइसीएमआर-एनआइआरआरसीएच के विज्ञानी डाक्टर दीपक मोदी ने बताया कि दो जीन- एचओएक्सए10 और टीडब्ल्यूआइएसटी2- गर्भाशय की दीवार पर उचित समय आने पर खुले और बंद छोटे 'द्वार' का काम करते हैं। गर्भाशय की आंतरिक परत एक किले की दीवार की तरह होती है, ताकि किसी भी चीज को अंदर प्रवेश करने से रोका जा सके। अध्ययन की मुख्य लेखक नैंसी अशारी ने बताया कि भ्रूण के प्रत्यारोपण की सफलता के लिए ये जरूरी है कि इस दीवार को एक छोटे से द्वार के जरिये कुछ समय के लिए खोला जाए। जीन एचओएक्सए10 दीवार को बंद रखता है और सुरक्षा करता है। आइआइएससी, बेंगलुरु के डाक्टर मोहित जोली ने बताया कि जब कोई भ्रूण गर्भाशय की अंदरूनी परत के संपर्क में आता है, तो उस स्थान पर एचओएक्सए10 अस्थायी तौर पर बंद हो जाता है। इसके बंद होने से एक अन्य जीन- टीडब्ल्यूआइएसटी2 सक्रिय हो जाता है। इस जीन की सक्रियता गर्भाशय कोशिकाओं को नरम और लचीला बनाकर द्वार खोलती है, जिससे भ्रूण को अंदर जाने का मौका मिलता है।

गर्भपात जैसी समस्या दूर करने में मदद

आइसीएमआर-एनआइआरआरसीएच की निदेशक डाक्टर गीतांजलि सचदेवा ने कहा कि इस खोज से ये समझने में आसानी होगी कि क्यों कुछ महिलाओं को स्वस्थ भ्रूण के साथ भी बार-बार प्रत्यारोपण विफलता या बहुत जल्दी गर्भावस्था के नुकसान का सामना करना पड़ता है। इस जैविक बदलाव को समझने से यह स्पष्ट हो जाएगा कि क्यों कुछ महिलाओं को स्वस्थ भ्रूण के साथ भी बार-बार प्रत्यारोपण विफलता या बहुत जल्दी गर्भावस्था के नुकसान का सामना करना पड़ता है। उन्होंने बताया कि अगर गर्भाशय की दीवार बहुत छोटी खुलती है, तो भ्रूण प्रत्यारोपित नहीं हो सकता, वहीं अगर ये द्वार बहुत ज्यादा खुल जाए तब भी गर्भधारण टिक नहीं सकेगा। दोनों जीन में संतुलन को नियंत्रित करके भविष्य में आइवीएफ (इन विट्रो फर्टिलाइजेशन) की सफलता दर में सुधार के लिए नई रणनीति बनाई जा सकती है।

Dainik Jagaran Page No-17

डब्ल्यूटीओ सुधारों का नेतृत्व करने के लिए तैयार भारत : पीयूष गोयल

कहा, वैश्विक कल्याण के लिए सुधार के एजेंडे पर सभी देशों में बने आम सहमति

विशाखापत्तनम, प्रेट्र: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि भारत विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के सुधारों को आगे बढ़ाने में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए तैयार है। लेकिन उन्होंने जोर देकर कहा कि इन सुधारों की प्रकृति को विकासशील और सबसे कम विकसित देशों के साथ परामर्श करके आकार दिया जाना चाहिए, ताकि ये कुछ विकसित देशों के एजेंडे के बजाय वैश्विक कल्याण की सेवा करें।

गोयल ने कहा कि दुनिया भारत की ताकत और नेतृत्व को पहचानती है और एक जिम्मेदार वैश्विक नागरिक है। हम डब्ल्यूटीओ में सुधारों का नेतृत्व करना चाहेंगे। वह सुधार अन्य विकासशील और कम विकसित देशों के साथ परामर्श के बाद तय किए जाएं। ताकि हम वास्तव में दुनिया के कल्याण के लिए काम कर सकें और केवल कुछ विकसित देशों के एजेंडे के लिए नहीं। सीआइआइ के साझेदारी शिखर सम्मेलन 2025 में भाग लेने आईं डब्ल्यूटीओ की महानिदेशक न्गोजी ओकोंजो-इवेला ने शुक्रवार को कहा था कि भारत को इस वैश्विक संगठन की सुधार प्रतिक्रिया में नेतृत्व की भूमिका निभानी चाहिए। उनके इस बयान पर ही केंद्रीय मंत्री ने प्रतिक्रिया दी है। गोयल ने भी इस सम्मेलन में हिस्सा लिया था।

अमेरिका समेत तमाम विकसित देश डब्ल्यूटीओ में सुधारों के लिए दबाव बना रहे हैं। इन वार्ताओं ने हाल के वर्षों में गति पकड़ी है। वे विवाद निपटान तंत्र, विकासशील देशों के लिए विशेष और भिन्न उपचार और डब्ल्यूटीओ में समझौतों की वार्ता के तरीकों जैसे क्षेत्रों में सुधार की मांग कर रहे हैं। भारत ने लगातार कहा है कि सुधार एजेंडा सभी सदस्य देशों के बीच सहमति से तय किया जाना चाहिए। शुक्रवार को डब्ल्यूटीओ प्रमुख के साथ बैठक में गोयल ने अगले वर्ष मार्च में कैमरून में होने वाले 14वें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन और सुधारों सहित विभिन्न अन्य पहलुओं पर चर्चा की। मंत्रिस्तरीय सम्मेलन इस बहुपक्षीय संगठन का निर्णय लेने वाला सर्वोच्च निकाय है जो वैश्विक व्यापार से संबंधित मामलों से निपटता है। वह सदस्य देशों के बीच विवादों का निपटारा भी करता है।

कनाडा के साथ एफटीए वार्ता शुरू करने पर विचार

वाणिज्य मंत्री ने कहा कि कनाडा के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बातचीत फिर से शुरू करने के संबंध में सभी संभावनाओं पर विचार किया जा रहा है। उन्होंने कनाडा के निर्यात संवर्धन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक विकास मंत्री मनिंदर सिद्धू के साथ दो दौर की चर्चा की है और दोनों ही द्विपक्षीय सहयोग और रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने के तरीके तलाश रहे हैं। भारत और कनाडा के बीच एफटीए वार्ता 2023 से बंद है।

- **विकासशील और सबसे कम विकसित देशों से भी हो परामर्श**
- **केवल कुछ विकसित देशों के एजेंडे के लिए नहीं है डब्ल्यूटीओ**

केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को डब्ल्यूटीओ प्रमुख न्गोजी ओकोंजो-इवेला से द्विपक्षीय मुलाकात भी की थी ● @पीयूष गोयल।

एसईजेड में राहत के उपायों पर चल रहा विचार

पीयूष गोयल ने शनिवार को कहा कि सरकार विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) में उत्पादन बढ़ाने के लिए कुछ राहत उपायों को लागू करने के प्रस्तावों पर विचार कर रही है। मंत्रालय इन क्षेत्रों में अतिरिक्त क्षमता को भारत के घरेलू बाजार में उपयोग के लिए बढ़ावा देने के तरीकों पर विचार कर रहा है। आंध्र प्रदेश विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) में ब्राडिक्स टेक्सटाइल इकाइयों का दौरा करते हुए गोयल ने कहा कि यह एक तरह से आघात प्रतिस्थापन भी होगा क्योंकि अन्य देशों से भारत आने वाले कई सामानों को विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) द्वारा घरेलू टैरिफ क्षेत्रों (डीटीए) को आपूर्ति की तुलना में बेहतर लाभ मिलता है। हम इस अंतर को पाटने की कोशिश कर रहे हैं और हमें पूरी उम्मीद है कि जल्द ही सभी एसईजेड से उत्पादन में भारी वृद्धि होगी। एसईजेड को व्यापार और शुल्कों के लिए विदेशी क्षेत्र माना जाता है, जहां शुल्क-मुक्त घरेलू बिक्री पर प्रतिबंध है। अभी एसईजेड की इकाइयों को अपने उत्पादों को डीटीए में तैयार माल के आधार पर शुल्क के भुगतान पर बेचने की अनुमति है।

Dainik Jagaran Page No-14

रिपोर्ट : नवनिर्वाचित विधायकों में 90 फीसदी करोड़पति

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहार विकसित प्रदेश बनने के लिए संघर्ष कर रहा है। यह तभी संभव होगा, जब यहां के आमलोग की स्थिति सुधरेगी। इसमें कितने साल लगेंगे यह कहना मुश्किल है, लेकिन इस बार चुनकर आए 90 फीसदी विधायक करोड़पति हैं। इनकी संख्या 218 है। 2010 के चुनाव के बाद राज्य में मात्र 20 फीसदी विधायक ही करोड़पति थे। 2015 के चुनाव के बाद इनकी संख्या चढ़कर 67 % 2020 के चुनाव के बाद 81% हो गई थी। राज्य में सभी 243 विधायकों के पास औसत संपत्ति 9.02 करोड़ है, जबकि, 2020 में निर्वाचित हुए विधायकों के पास औसतन 4.32 करोड़ की संपत्ति थी। इस बार स्नातक पास कर चुके 50 फीसदी विधायक निर्वाचित होकर आए हैं। शनिवार को एडीआर और बिहार इलेक्शन वॉच के प्रतिनिधि राजीव कुमार ने यह रिपोर्ट जारी की। इसमें सभी 243 नवनिर्वाचित विधायकों के शपथ पत्र के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

रिपोर्ट के अनुसार, 35 फीसदी विधायकों की शैक्षणिक योग्यता 5वीं और 12वीं के बीच है। जबकि, 60 फीसदी स्नातक हैं। 15 ने अपनी योग्यता डिप्लोमा घोषित की है। जबकि 7 विजेता उम्मीदवार साक्षर हैं। सर्वाधिक 59 % (143) विधायक 41-60 साल के हैं, जबकि, 16% (38) विधायक 25- 40 आयु वर्ग के हैं। 26 % (62) विधायकों की उम्र 62-80 साल है। 243 में से 12% (29) महिला विधायक हैं। पिछले विधानसभा में इनकी संख्या 11% थी। रिपोर्ट के अनुसार, 243 विधायकों में से 130 (53%) विधायकों ने अपने ऊपर आपराधिक मामले घोषित किए थे। 2020 में 241 में से 163 (68%) विधायकों ने अपने ऊपर आपराधिक मामले घोषित किए थे।

विधायकों की संपत्ति

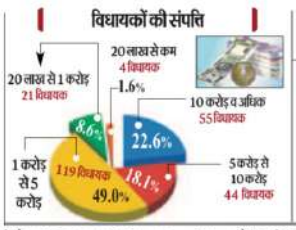

243 नवनिर्वाचित विधायकों के शपथ पत्र के आधार पर विश्लेषण किया गया

विधायक कुमार प्रणय के पास सर्वाधिक संपत्ति

एडीआर की रिपोर्ट के अनुसार, मुंगेर के भाजपा विधायक कुमार प्रणय के पास सर्वाधिक 1,70,81,95,842 रुपये की चल-अचल संपत्ति है। वहीं, दूसरे स्थान पर जदयू के मोकामा से विधायक अनंत सिंह हैं, जिनके पास कुल 1,00,61,73,708 रुपये की चल-अचल संपत्ति है। जबकि, बरबीघा से जदयू के विधायक डॉ. कुमार पुष्पंजय के पास 94,53,02,587 रुपये की चल-अचल संपत्ति है।

इनके पास सबसे कम संपत्ति

विधायक	संपत्ति
मुरारी पासवान, पीरपैंती	₹6,53,585
महेश पासवान, अगिआंव	₹8,55,000
सुजीत कुमार, राजनगर	₹11,06,425

एआईएम आईएम के पांच में चार विधायकों पर गंभीर अपराध के मामले

रिपोर्ट के अनुसार, भाजपा के 89 में से 43 (48%), जदयू के 85 में से 23 (27%), राजद के 25 में से 14 (56 %), लोजपा (रामविलास) के 19 में से 10 (53%), कांग्रेस के 6 में से 3 (50%), एआईएमआईएम के 5 में से 4 (80%), राष्ट्रीय लोक मोर्चा के 4 में से 1 (25%), उम्मीदवारों ने अपने ऊपर गंभीर मामले घोषित किए हैं।

Hindustan Page No- 11

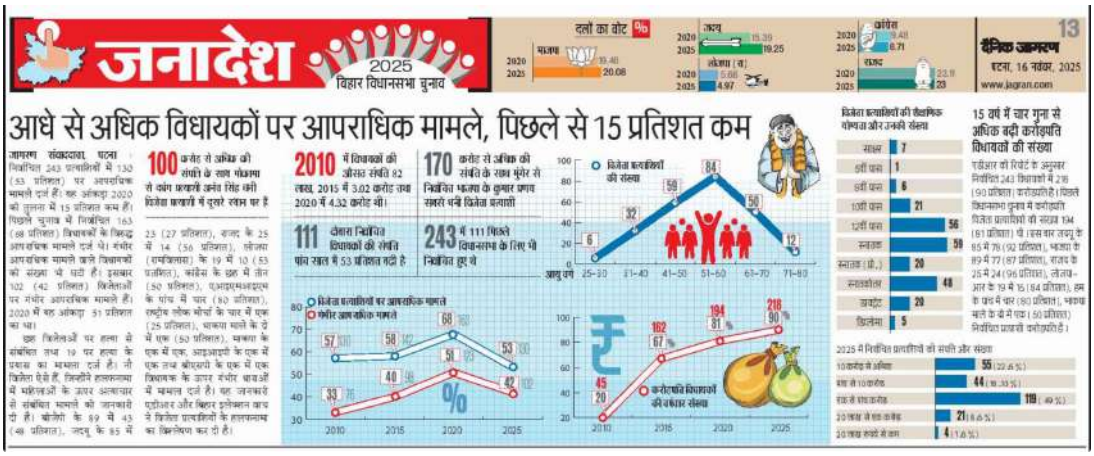

Dainik Jagaran Page No-13

संडे बिग इन्फो | इंडिया स्किल रिपोर्ट 2026

56% युवा जॉब रेडी, महिलाएं पुरुषों से आगे निकलीं... नौकरियां 11% बढ़ेंगी

नई दिल्ली | देश में एम्प्लॉयबिलिटी यानी जॉब रेडी युवा 56.35% हैं। एआई स्किल्स और रिमोट वर्क की इसमें बड़ी भूमिका है। 54% दर के साथ महिलाएं पुरुषों से आगे हैं। सबसे अधिक नौकरी योग्य टैलेंट उत्तर प्रदेश में है। 16% वैश्विक एआई टैलेंट पूल भारत में है, जो लगातार बढ़ता जा रहा है।

ट्रेंड : 6 साल में 10% तक बढ़ गई रोजगार योग्यता की दर

एम्प्लॉयबिलिटी रेट (%)

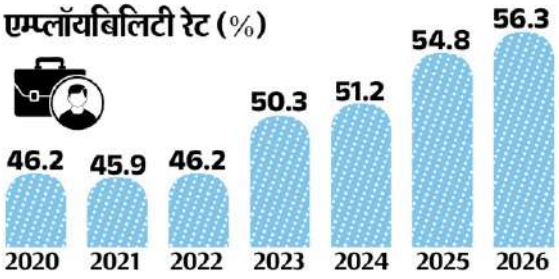

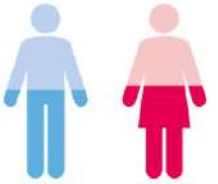

51.5% पुरुष जॉब रेडी हैं

54% महिलाएं हैं एम्प्लॉएबल

40% हैं 2026 की हायरिंग योजनाएं, पिछले साल से 11% ज्यादा, स्किल्ड लोगों के लिए मौके

90% से अधिक कर्मचारी एआई टूल्स यूज करते हैं, यह सकारात्मक रुझान दर्शाता है

एमबीए वाले सबसे ज्यादा रोजगार के लिए तैयार...

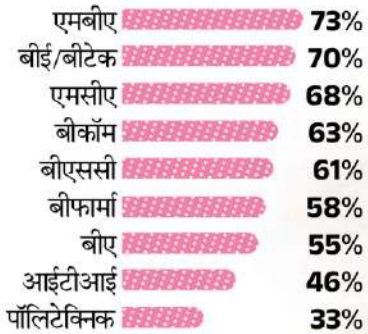

72% काम करने वाले स्थायी नौकरी में, गिग वर्कर्स सिर्फ 16%

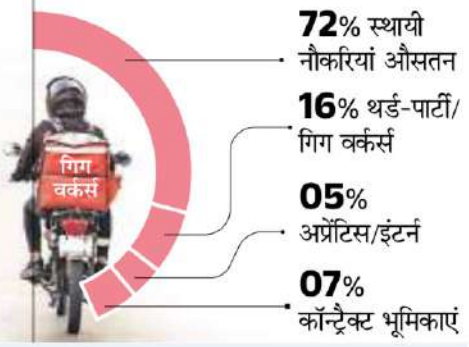

योग्यता के आधार पर शीर्ष-8 राज्य

- उत्तरी व दक्षिणी राज्य मजबूत प्रदर्शन बनाए हुए हैं; दिल्ली और तेलंगाना फिर से रैंकिंग में लौटे हैं।

टियर-2 शहर अब टैलेंट हब बन रहे

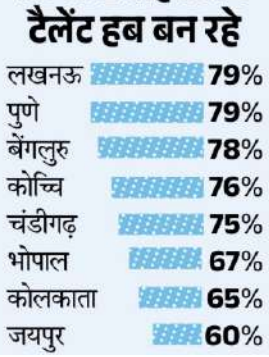

बच्चो, मैं बताता हूं क्या होते हैं पद्म पुरस्कार?

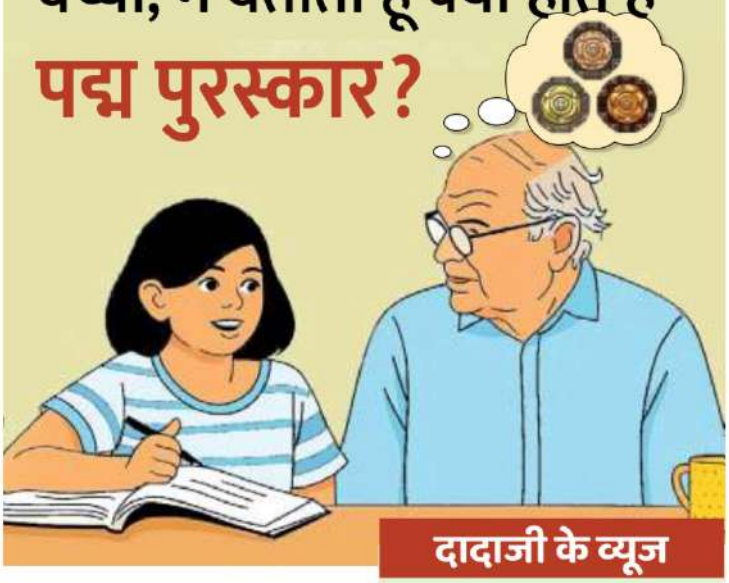

पद्म पुरस्कारों के नॉमिनेशन की खबरें सुनकर ग्रेसी के मन में कई सवाल उठते हैं। अब दादाजी उनके जवाब दे रहे हैं...

ग्रेसी : **दादाजी, ये पद्म पुरस्कार क्या होते हैं?**

दादाजी : क्या बात है बच्चे बहुत अच्छा सवाल पूछा है। आओ मैं बताता हूं। पद्म पुरस्कार देश के तीन सबसे बड़े नागरिक सम्मान हैं। पहले का नाम पद्म विभूषण है। ये असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए, पद्म भूषण उच्चतम स्तर की विशिष्ट सेवा के लिए और पद्म श्री विशिष्ट सेवा के लिए दिया जाता है।

ग्रेसी : **इन पुरस्कारों को कौन देता है दादाजी?**

दादाजी : भारत सरकार द्वारा हर साल ये पुरस्कार घोषित किए जाते हैं बच्चे।

ग्रेसी : **किन क्षेत्रों के लोगों को पद्म पुरस्कार से नवाजा जाता है दादाजी?**

दादाजी : अपने-अपने क्षेत्रों में अच्छा काम करने वाले लोगों को ये पुरस्कार दिए जाते हैं। जैसे कि कोई डॉक्टर, इंजीनियर, टीचर, संगीतज्ञ या किसान कोई भी इस पुरस्कार को पा सकता है।

ग्रेसी : **दादाजी, इनके लिए नॉमिनेशन करने की प्रकिया क्या है?**

दादाजी : बेटा, देशभर के लोग पुरस्कार या गृह मंत्रालय की वेबसाइट पर जाकर स्वयं को या किसी अन्य व्यक्ति को नॉमिनेट कर सकते हैं। चाहे वे किसी भी जाति, धर्म और लिंग आदि से ताल्लुक रखते हैं।

ग्रेसी : **इनके विजेताओं के नाम कैसे फाइनल किए जाते हैं, दादाजी?**

दादाजी : सरकार को नॉमिनेशन मिलते हैं। नॉमिनेशन मिलने के बाद उन नामों को चेक किया जाता है कि जिन कामों का जिक्र आवेदन में किया गया है वे असल में हुए भी हैं कि नहीं। फिर इसके बाद पद्म समिति इन नामों की समीक्षा करती है। इसके बाद गृह मंत्रालय द्वारा जांच की जाती है। इन सब पैमानों पर खरे उतरने के बाद पद्म समिति नामों की सिफारिश प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के समक्ष करती है। इसके बाद ही नाम तय किए जाते हैं। हर साल 26 जनवरी की पूर्व संध्या पर पुरस्कार से सम्मानित होने वाले व्यक्तियों के नामों की घोषणा की जाती है।

ग्रेसी : **कितने लाख रुपए का पुरस्कार विजेताओं को दिया जाता है दादाजी?**

दादाजी : नहीं बच्चे, पद्म पुरस्कार से सम्मानित होने वाले लोगों को किसी भी प्रकार की नगद राशि नहीं दी जाती है। पद्म पुरस्कार से सम्मानित व्यक्ति को बस एक मेडल, प्रमाणपत्र और प्रतीक चिह्न राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रपति के द्वारा दिया जाता है।

दादाजी के व्यूज

बच्चो, देश का सबसे सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न है, उसके बाद पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री आते हैं। पद्म पुरस्कारों की शुरुआत साल 1954 में हुई थी। एक साल में समिति सिर्फ 120 लोगों को ही पद्म पुरस्कारों से नवाज सकती है। पद्म पुरस्कारों के मेडल गोल होते हैं। इनपर बीच में कमल बना होता है। यह पुरस्कार कोई उपाधि नहीं है और इसका उपयोग पुरस्कार प्राप्तकर्ता के लेटरहेड, निमंत्रण कार्ड, पोस्टर, पुस्तक आदि पर उसके नाम के साथ प्रत्यय या उपसर्ग के रूप में नहीं किया जा सकता। किसी भी प्रकार के दुरुपयोग की स्थिति में पुरस्कार प्राप्तकर्ता अपना पुरस्कार गंवा सकता है।

Dainik Bhaskar Page No-15

जो स्वतंत्र रूप से सोच सकते हैं, वही आजाद हैं

जॉर्ज बर्कले

• जन्म: 12 मार्च 1685
• निधन: 14 जनवरी 1753

आयरिश दार्शनिक, लेखक और पादरी थे। उन्हें आर्थर शोपेनहावर ने 'आदर्शवाद का जनक' भी कहा है।

- यह असंभव है कि जो व्यक्ति अपने मित्रों और पड़ोसियों के प्रति झूठा है, वह जनता के प्रति सच्चा हो।
- **बहुत कम लोग सोचते हैं, फिर भी हर किसी की अपनी राय होती है।**
- दूसरे लोग स्वतंत्रता के बारे में बात कर सकते हैं, लिख सकते हैं, या उसके लिए लड़ सकते हैं और उसका दिखावा भी कर सकते हैं। परंतु वास्तव में स्वतंत्र वही होता है जो स्वतंत्र रूप से सोच सकता है।
- एक अच्छे देशभक्त को अपने देशवासियों को ईश्वर की रचना मानना चाहिए और स्वयं को उनके प्रति अपने व्यवहार के लिए उत्तरदायी समझना चाहिए।
- **जो व्यक्ति कहता है कि ईमानदार आदमी जैसा कुछ नहीं है, यह निश्चित समझे कि वही व्यक्ति कपटी है।**
- एक स्वतंत्र मन जो अपनी ही बातों पर विचार करता है... यदि वह दुनिया के लिए कुछ उपयोगी उत्पन्न न भी करे, तो भी उसे स्वयं में आनंद अवश्य मिल जाता है।

Dainik Bhaskar Page No-13

अगर आप जीवन में गलतियां करने से डरते रहेंगे तो कभी भी कुछ महान नहीं कर पाएंगे। चुनौतियों को स्वीकार करें।

इंस्पायरिंग **इलॉन मस्क,** बिजनेसमैन (टेस्ला से उन्हें अब हर साल एक ट्रिलियन डॉलर का सैलरी पैकेज मिलेगा)

कभी न मानें कि आप किसी बड़े काम के लिए छोटे हैं, जोखिम उठाने से भी न डरें

जब मैं भविष्य के बारे में सोचता हूं, तो मन में हमेशा एक ही विचार आता है... हम एक ऐसी सभ्यता हैं जो अपने ही हाथों से कल को गढ़ सकती है। मुझे नहीं लगता कि इंसान केवल जीवित रहने के लिए बना है। मैं मानता हूं कि हम खोजने, रचने और सीमाओं को तोड़ने के लिए बने हैं। यही सोच मुझे हर सुबह उठने के लिए प्रेरित करती है। हम भविष्य को और बेहतर बना सकते हैं, अगर हम उसे डर के बजाय जिज्ञासा से देखें।

'न्यूरालिंक' इसी जिज्ञासा से पैदा हुआ। लोगों ने कहा कि यह असंभव है... मानव मस्तिष्क को कंप्यूटर से जोड़ना एक पागलपन है। लेकिन मैंने हमेशा सोचा, अगर हमारा मस्तिष्क जटिल विद्युत संकेतों से चलता है, तो तकनीक के जरिए हम उसकी बीमारियों को समझ और ठीक क्यों नहीं कर सकते? मुझे यकीन है आने वाले वर्षों में, हम लकवा, अंधापन और याददाश्त की कमी जैसी बीमारियों को मिटाने में सफल होंगे। स्पेसएक्स की शुरुआत इसी 'असंभव को संभव' करने की भावना से हुई थी। जब मैंने कहा कि मैं एक निजी कंपनी से रॉकेट बनाकर अंतरिक्ष में भेजूंगा, तो लोगों ने मुझे पागल कहा। लेकिन मैं जानता था कि अगर हमें मंगल ग्रह तक पहुंचना है, तो किसी को पहला कदम उठाना ही होगा। हमने कई बार असफलता झेली, लेकिन हर बार यही कहा कि अगर पाने लायक कुछ खास है तो आपको कोशिश करना चाहिए, चाहे असफलता की कितनी ही संभावना क्यों न हो।

मैंने सफलता कभी पैसों से नहीं मापी। असली सफलता यह है कि आप कितने लोगों को प्रेरित कर पाए कि वे बड़ा सोचें। अगर कोई बच्चा आज अपने कमरे की दीवार पर रॉकेट या मंगल की तस्वीर बनाता है और यह सोचता है कि वह एक दिन वहां जाएगा, तो वही मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि है। कभी-कभी मुझसे पूछा जाता है कि मैं इतना बड़ा जोखिम क्यों उठाता हूं। मेरा जवाब सरल होता है... सबसे बड़ा जोखिम तो कुछ नया न करना है। अगर आप गलतियां करने से डरते हैं, तो कुछ महान नहीं कर सकते। मैंने असफलताएं देखी हैं, लेकिन हर असफलता एक सबक लेकर आई। असफलता दर्द देती है, लेकिन वही दर्द आपको मजबूत बनाता है। अगर सब कुछ आसान होता, तो कोई बदलाव नहीं होता। जोखिम उठाएं, सवाल पूछें और कभी मत मानें कि आप किसी बड़े काम के लिए छोटे हैं। हर बदलाव की शुरुआत ऐसे व्यक्ति से हुई, जिसने कहा कि मैं कोशिश करूंगा। अगर आप यह कहने की हिम्मत रखते हैं, तो भविष्य आपका है।

काम करना ही प्रेरणा का सबसे बड़ा सोत है

जीवन में कई बार ऐसा होता है जब सब कुछ आपके खिलाफ लगने लगता है। पैसा नहीं, लोग आपके साथ नहीं और हालात मुश्किल हैं... लेकिन सच्ची प्रेरणा वहीं से शुरू होती है। जब कोई रास्ता न दिखे, तो अपना रास्ता खुद बनाना ही नेतृत्व कहलाता है। मैं हमेशा कहता हूं कि कभी भी प्रेरणा का इंतजार मत कीजिए, काम करना ही प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत है।

इस प्रस्तुति को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

Dainik Bhaskar Page No-13

अब वक्त आ गया है कि सुरक्षा परिषद के 1945 के मॉडल में बदलाव कर उसे इस तरह से बनाया जाए कि वह आज की जमीनी हकीकतों को प्रतिबिंबित करे।
- एंटोनियो गुटेरेस, महासचिव, संयुक्त राष्ट्र

दैनिक भास्कर | अब आप रसरंग के सभी आर्टिकल DB एप पर हर रविवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें DB एप

कवर स्टोरी

हर्ष वी. पंत
अंतरराष्ट्रीय मामलों के प्रोफेसर
किंग्स कॉलेज ऑफ लंदन

भारत अनेक वर्षों से सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का स्वाभाविक दावेदार माना जाता रहा है। लेकिन वैश्विक समीकरणों और सुधार प्रक्रिया की जटिलताओं के चलते वह अब भी इस सम्मान से दूर है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता से कितना दूर भारत?

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थाई सदस्यता की दावेदारी का हाल के महीनों में कई देश समर्थन कर चुके हैं। हालांकि इसके बावजूद संयुक्त राष्ट्र में सुधार प्रक्रिया की जटिलता के कारण अब तक कोई ठोस प्रगति नहीं हुई है। सच तो यह है कि यूएन अब प्रासंगिकता खोता जा रहा है। कोविड, यूक्रेन और गाजा युद्ध के दौरान इसकी निष्क्रियता इसका प्रमाण है। ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है कि क्या भारत को सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता के लिए अपने प्रयासों में और तेजी लानी चाहिए या अन्य मंचों पर अपनी भूमिका को मजबूत करने पर ध्यान देना चाहिए।

कृष्ण मेनन के नाम अनूठा विश्व रिकॉर्ड

सुरक्षा परिषद में सबसे लंबा भाषण देने का रिकॉर्ड भारत के वी. के. कृष्ण मेनन के नाम दर्ज है। उन्होंने जनवरी 1957 में 8 घंटे से भी अधिक समय तक चले अपने भाषण में कश्मीर मसले पर बड़े विस्तार से भारत का पक्ष रखा था। इस भाषण के दौरान वे थककर बेहोश भी हो गए थे, लेकिन आराम के बाद फिर बोलना शुरू किया। उनका भाषण दो दिन (23 और 24 जनवरी, 1957) तक चला था।

1. किन वजहों से भारत है स्थाई सदस्यता का वाजिब दावेदार?

भारत अभी चौथी अर्थव्यवस्था है और उम्मीद है कि यह जल्द ही तीसरी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। भारत कहता रहा है कि मानव आबादी के पांचवें हिस्से का प्रतिनिधित्व करने की वजह से अगर उसे अलग रखेंगे तो इससे खुद सुरक्षा परिषद की क्रेडिबिलिटी पर फर्क पड़ेगा। इसके अलावा यह अपने बहुसांस्कृतिक लोकतंत्र और शांति मिशनों में महती भूमिका के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय राजनीति में हाशिये पर पड़े देशों के हितों की आवाज उठाने की वजह से भी परिषद में स्थाई सदस्य के तौर पर एक स्वाभाविक उम्मीदार के रूप में उभरता है। अभी जो स्थाई सदस्य हैं, उनमें आज की स्थिति में ब्रिटेन और फ्रांस काफी कमजोर नजर आते हैं। तो ऐसे में बदलते राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में भारत की दावेदारी को कम करके नहीं आंका जा सकता।

2. कई देशों ने भारत को दिया है खुला समर्थन, क्या इससे बनेगी बात?

बीते कुछ अरसे से कई देश स्थाई सदस्यता के लिए भारत के पीछे लामबंद रहे हैं। यहां तक कि सुरक्षा परिषद के पांच स्थाई सदस्यों में से चार देशों- अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और रूस ने भी अलग-अलग मौकों पर भारत की स्थाई सदस्यता का समर्थन किया है। लेकिन यूएन में सुधार की प्रक्रिया अपने आप में बड़ी जटिल है। यह कोई पॉपुलैरिटी कॉन्टेस्ट नहीं है। इसमें ऐसा नहीं हो सकता कि अगर ज्यादा देश भारत का समर्थन कर रहे हैं तो यह स्वतः स्थाई सदस्य बन जाएगा। चीन के पास वीटो पावर है। इसलिए जब तक पांचों स्थाई राष्ट्र सहमत नहीं होंगे, तब तक सुधार की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ेगी।

3. आखिर कौन बन रहा है भारत की राह में सबसे बड़ा रोड़ा?

चीन कभी नहीं चाहेगा कि सुरक्षा परिषद में हिंद प्रशांत का कोई दूसरा देश स्थाई सदस्यता के तौर पर आए। भारत को चीन वैश्विक शक्ति के तौर पर भी स्वीकार नहीं करेगा। चीन हमेशा भारत की तुलना पाकिस्तान के साथ करते आया है और दिखाने की कोशिश करता है कि भारत केवल दक्षिण एशियाई शक्ति है। हालांकि यह भी सच है कि पिछले कुछ अरसे से भारत-चीन संबंधों में थोड़ा सा बदलाव आया है। फिर भी हमारे रिश्ते वहां तक नहीं पहुंच पाएंगे, जहां चीन हमें स्पष्ट समर्थन दे सके। सैद्धांतिक तौर पर चीन भले इस बात का समर्थन कर सकता है कि यूएन में सुधार की जरूरत है और इसमें भारत सहित कुछ नए सदस्य हो सकते हैं। लेकिन नए सदस्यों में वह संतुलन को लेकर पाकिस्तान की सदस्यता पर जोर दे सकता है, जो किसी भी पैमाने पर भारत के कहीं भी आस-पास नहीं ठहरता है।

4. क्या भारत को अपनी ऊर्जा अन्य मंचों पर नहीं लगानी चाहिए?

सुरक्षा परिषद अपनी प्रासंगिकता खोती जा रही है। अमेरिका, चीन और पश्चिमी शक्तियों तथा रूस के बीच मौजूदा तनाव की वजह से सुरक्षा परिषद कमोबेश निष्क्रिय स्थिति में पहुंच चुकी है। इसलिए बेहतर यही होगा कि भारत को अपनी रणनीतिक पूंजी दूसरे मंचों पर खर्च करनी चाहिए। भारत को जी-20 जैसे प्लेटफॉर्म को ज्यादा तवज्जो देने की जरूरत है और भारत ऐसा करता नजर भी आ रहा है। भारत 'वॉइस ऑफ द ग्लोबल साउथ समिट' आयोजित करता है, जिसमें दक्षिण और विकासशील देशों के मसलों को सामने लाया जाता है। भारत ब्रिक्स, क्वाड, एससीओ का सदस्य है। जो ग्रुप फोकस्ड हैं, भारत को वहां पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। हमें समझना चाहिए कि भारत के न होने से सुरक्षा परिषद की विश्वसनीयता पर असर पड़ रहा है, भारत पर नहीं।

दुनिया में सुरक्षा परिषद का क्यों बजता रहा है डंका?

सुरक्षा परिषद को कई अधिकार मिले हुए हैं, जो उसे वैश्विक व्यवस्था में ताकतवर बनाते हैं:

शांति बलों की तैनाती
इसके पास संघर्षरत क्षेत्रों में शांति बलों की तैनाती का अधिकार होता है। इनका उद्देश्य युद्ध-विराम और नागरिकों की सुरक्षा में मदद करना होता है। कांगो, सूडान जैसे देशों में हुए गृह युद्धों को नियंत्रित करने के लिए शांति बल तैनात किए गए।

सैन्य कार्रवाई की अनुमति
यदि शांति बनाए रखने के उपाय नाकाम हो जाएं तो परिषद सदस्य देशों को बल प्रयोग की अनुमति दे सकती है। उदाहरण के लिए, 1991 में कुवैत से इराकी सेनाओं को हटाने के लिए परिषद ने 'ऑपरेशन डेजर्ट स्टॉर्म' को मंजूरी दी थी।

आर्थिक व सैन्य प्रतिबंध
किसी देश या संगठन द्वारा अंतरराष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन होने पर परिषद उस पर आर्थिक, सैन्य या व्यापार संबंधी प्रतिबंध लगा सकती है। जैसे उत्तर कोरिया पर परमाणु परीक्षणों के कारण कई बार प्रतिबंध लगाए गए।

रसरंग नॉलेज

द्वितीय विश्वयुद्ध के विजेता बने संयुक्त राष्ट्र के कर्णधार

संयुक्त राष्ट्र के गठन के साथ ही 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) भी अस्तित्व में आ गई थी। आज इसमें कुल 15 सदस्य हैं।

यूएन के गठन के दौरान सोवियत संघ के लीडर जोसेफ स्टालिन, अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट और ब्रिटिश पीएम विंस्टन चर्चिल।

5 स्थाई सदस्य: संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में पांच देशों को स्थाई सदस्य का दर्जा प्राप्त है। ये बिग फाइव हैं : ब्रिटेन, अमेरिका, तत्कालीन सोवियत संघ (अब रूस), चीन और फ्रांस।

10 अस्थाई सदस्य: 1965 के पहले तक परिषद में 6 अस्थाई सदस्य होते थे। इसके बाद से अस्थाई सदस्यों की संख्या 10 कर दी गई। इनका कार्यकाल दो साल का होता है। हर साल 5 सदस्य रिटायर हो जाते हैं और उनकी जगह नए सदस्य आ जाते हैं। भारत अब तक 8 बार अस्थाई सदस्य के रूप में चुना जा चुका है।

स्थाई सदस्य 5 ही क्यों?

इसकी ऐतिहासिक वजह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के वैश्विक सत्ता संतुलन में छिपी है। संयुक्त राष्ट्र की स्थापना द्वितीय युद्ध के बाद हुई थी। इस युद्ध में धुरी राष्ट्रों (जर्मनी, इटली, जापान तथा अन्य) पर निर्णायक विजय पाने वाले मित्र राष्ट्रों की अगुवाई इन पांच देशों- ब्रिटेन, अमेरिका, तत्कालीन सोवियत संघ (अब रूस), चीन और फ्रांस ने की थी। चूंकि उस दौर में विश्व राजनीति, सैन्य क्षमता और प्रभाव के सबसे बड़े केंद्र यही पांचों देश थे। इसलिए महत्वपूर्ण निर्णय लेने की शक्ति इन्हीं देशों को मिलनी स्वाभाविक थी। वैश्विक शक्ति संतुलन और भविष्य के टकरावों को रोकने के लिए इन पांचों सदस्यों को वीटो का अधिकार भी दिया गया।

किसने कितनी बार किया वीटो का इस्तेमाल?

कितना होता है बजट?

2024-25 में शांति बलों यानी पीसकीपिंग फोर्सेस की तैनाती के लिए सुरक्षा परिषद को करीब 5.6 अरब डॉलर का बजट मिला था। जानते हैं इसमें कौन देता है कितना योगदान:

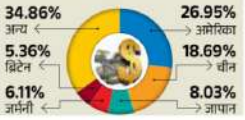

भास्कर एक्सक्लूसिव उद्योगों के भूमि उपयोग नियमों में बदलाव, फैक्ट्री के पीछे और बगल में जमीन छोड़ने की पाबंदी भी खत्म

उद्योगों को अब ज्यादा एफएआर...33% तक ज्यादा निर्माण कर सकेंगे

विवेक त्रिवेदी | भोपाल

मप्र के मंडीदीप, गोविंदपुरा और पीथमपुर जैसे औद्योगिक क्षेत्र लंबे समय से जमीन की कमी की जूझ रहे हैं। यहां नए निवेश के लिए जमीन लगभग खत्म हो चुकी है। नतीजा यह कि नए उद्योग बाहर जा रहे हैं, वहीं पुरानी इकाइयां विस्तार नहीं कर पा रही हैं। इसे देखते हुए अब सरकार ने उद्योगों को भूमि उपयोग नियमों में छूट दी है। अब उद्योगों को पहले से खरीदी गई जमीन पर 33% तक अधिक निर्माण करने की जगह मिल सकेगी।

इसके साथ ही औद्योगिक प्लॉट पर निर्माण में पीछे की तरफ और बगल में जमीन खाली छोड़ने की बाध्यता नहीं होगी। साल 2012 के भू-उपयोग नियमों में उद्योगों की जमीन पर 1.25 से लेकर 1.50 तक एफएआर की अनुमति दी गई थी। अब अलग-अलग श्रेणियों के औद्योगिक प्लॉट में 0.25 से लेकर 0.50 तक एफएआर में छूट दी गई है। इसका गजट नोटिफिकेशन हो चुका है। हालांकि पुराने नियमों में फ्रंट एमओएस के लिए भवन की ऊंचाई से आधी ऊंचाई के बराबर जमीन खाली छोड़ने का प्रावधान था, इसमें कोई बदलाव नहीं होगा।

1500 के प्लॉट पर 2250 की जगह 3000 वर्गफीट बना सकेंगे : 1500 वर्गफीट के प्लॉट पर अब तक 1.50 एफएआर के हिसाब से 2250 वर्गफीट निर्माण की अनुमति थी। जबकि अब एफएआर 2 मिलने पर इसी आकार के प्लॉट पर कुल 3000 वर्गफीट निर्माण हो सकेगा यानि 750 वर्गफीट अतिरिक्त बिल्टअप मिलेगा। एसोसिएशन ऑफ ऑल इंडस्ट्रीज मंडीदीप के अध्यक्ष विकास मूंदड़ा ने कहा कि एफएआर बढ़ाना अच्छा है। एक करोड़ में नई जमीन लेने की जगह 30 लाख में मौजूदा जमीन में निर्माण कर दें तो 70 लाख वर्किंग कैपिटल मिल जाएगी।

मंडीदीप और गोविंदपुरा जैसे औद्योगिक क्षेत्रों में नहीं बची है जमीन, बाहर जा रहा निवेश

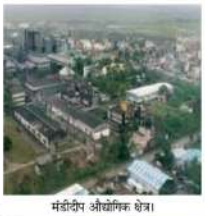

मंडीदीप औद्योगिक क्षेत्र।

किस प्लॉट में कितना मिलेगा अतिरिक्त एफएआर

जमीन (हेक्टेयर में)	पुराना FAR	नया FAR
0.045 से 0.10	1.25	1.50
0.10 से 2	1.00	1.25
0.15 हेक्टेयर (फ्लैटेड)	1.50	2.00

फैसला इसलिए अहम : • मंडीदीप में जमीन की कमी की वजह से पतंजलि और जेबीएम समूह वापस लौट गए, जबकि एचईजी, वॉल्वो-आयशर और प्रॉक्टर एंड गैम्बल ने नए प्लांट अन्य जगहों पर लगाए हैं।
• गोविंदपुरा में जमीन खत्म होने से सिग्मा इंडस्ट्रीज, सुपर स्क्रीन, सैनफील्ड, टेस्ला इंडिया जैसी कंपनियां बाहर चली गईं।

पुराने नियमों में बहुत कम जमीन उपयोग का प्रावधान है, इसलिए सुधार किए हैं ताकि उद्योग फायदा ले सकें। इनकी जमीन की जरूरत घटेगी तो नए उद्योगों को निवेश के लिए अधिक जमीन दे पाएंगे। इससे प्रदेश में निवेश और आर्थिक गतिविधियां बढ़ेंगी। - **चंद्रमौलि शुक्ला**, एमडी, एमपीआईडीसी

एक्सपर्ट व्यू

विजय सावलकर, रिटायर्ड ज्वाइंट डायरेक्टर टाउन एंड कंट्री प्लानिंग

उत्पादन व रोजगार दोनों बढ़ेंगे

ये सरकार का अच्छा कदम है। इससे न केवल नए उद्योगों को काम करने की अधिक जगह मिलेगी बल्कि पुराने उद्योगों को अधिक निर्माण करने की छूट मिलेगी। इससे उद्योगों को नई जमीनों में निवेश नहीं करना होगा। जो पूंजी बचेगी, उसका निवेश उद्योग में होगा। इससे उत्पादन व नौकरियां बढ़ेंगी और कुल मिलाकर आर्थिक गतिविधियां बढ़ेंगी। उद्योगों को रॉ मटेरियल सहित कई सामान रखने की जगह चाहिए होती है। पुराने औद्योगिक क्षेत्रों पर दबाव कम होगा। फ्लैटेड उद्योगों के लिए 0.50 एफएआर बढ़ाया गया है। संदेश साफ है कि जमीनों की कमी है तो अब वर्टिकल विकास हो।

भास्कर एक्सक्लूसिव चेन्नई के एनआईओटी में समुद्रयान का मुख्य ढांचा पहुंचा

समुद्रयान; इसके 50% हिस्से स्वदेशी, 4 घंटे में 6 किमी की गहराई में पहुंचेगी ये खास वैज्ञानिक पनडुब्बी

अनिरुद्ध शर्मा | चेन्नई

चेन्नई के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओशन टेक्नोलॉजी (एनआईओटी) में गहमागहमी है। समुद्रयान आकार ले रहा है। इस वैज्ञानिक पनडुब्बी के हिस्से असेम्बल हो रहे हैं। दिलचस्प बात है कि पहले समुद्रयान के शत-प्रतिशत पार्ट्स इंपोर्ट किए जाने थे। लेकिन कोविड और जियो पॉलिटिकल कारणों से पार्ट्स नहीं मिल पाए। नतीजतन अब 2025 में समुद्रयान के 50% हिस्से भारतीय संस्थानों ने ही तैयार कर लिए। एनआईओटी के उपनिदेशक एस. रमेश ने कहा कि समुद्रयान का बेसिक फ्रेम, मत्स्य-6000, कम्युनिकेशन, नेविगेशन और कंट्रोल सिस्टम सॉफ्टवेयर भारत में ही विकसित किए गए हैं। कुछ कैमरे, सेंसर, अकॉस्टिक फोन और सिंटेक्टिक फोम आयात करने पड़े। लक्ष्य है कि 2027 में गगनयान के मानव मिशन के साथ ही हिंद महासागर में 3 भारतीय एक्वानॉट्स के 6 किमी गहराई में गोता लगाने से पहले 2026 में 30 मीटर, 200 मीटर व 500 मीटर की गहराई में समुद्रयान के तीन अलग-अलग रिहर्सल और टेस्ट होंगे। सभी उपकरणों और हर हिस्सों को नार्वे की एजेंसी डीएनवी (डेट नॉर्स्क वेरीटास) से सर्टिफिकेशन हासिल हो चुका है।

इसे बनाने में देश में पहली बार इलेक्ट्रॉन बीम वेल्डिंग का इस्तेमाल

समुद्रयान का टाइटेनियम मिश्रधातु से बना मुख्य ढांचा एनआईओटी परिसर के असेंबली हॉल में आ चुका है। इसे तैयार करने में इलेक्ट्रॉन बीम वेल्डिंग का देश में पहली बार इस्तेमाल हुआ है।

मत्स्य-6000 को इस तरह डिजाइन किया गया है कि इसमें 3 एक्वानॉट यात्रा कर सकेंगे। 2.1 मीटर व्यास के व्हीकल में सामान्य रूप से 12 घंटे, इमरजेंसी में 96 घंटे रहने का प्रावधान है।

मिशन मॉड्यूल... 30 मीटर प्रति मिनट की गति से गहराई में जाकर सैंपल लिए जाएंगे

सागर निधि जहाज से समुद्रयान हिंद महासागर पहुंचेगा। 30 मीटर प्रति मिनट की गति से उतरते हुए करीब 4 घंटे में यह 6 किमी की गहराई तक पहुंचेगा। सैंपल कलेक्शन, सर्वे, स्कैनिंग और साइंटिफिक गतिविधियों के लिए चार घंटे मिलेंगे। समुद्रयान के मोबाइल व्हीकल मत्स्य 6000 में एक्वानॉट सैंपल लेंगे।

तैयारी... दो एक्वानॉट के नाम तय हो चुके, तीसरे को चुनने के लिए तीन नामों का पैनल

समुद्रयान में दो एक्वानॉट जतिंदर पाल सिंह (पायलट) और राजू रमेश (को-पायलट) जाएंगे। दोनों हाल ही में फ्रांस की नॉटाइल पनडुब्बी से 4 से 5 हजार मीटर की गहराई में गए थे। तीसरा एक्वानॉट एनआईओटी उपनिदेशक एस. रमेश, ग्रुप डायरेक्टर वेदाचलम् और प्रोजेक्ट डायरेक्टर सत्या नारायणन में से चुना जाएगा।

दस हजार का तड़का

बाखबर

सुधीश पचौरी

> एक चर्चा में एक पुरानी पत्रकार पूछती हैं कि कुछ दिन बाद भाजपा नीतीश को हटा कर अपना मुख्यमंत्री बनाएगी, जैसा कि महाराष्ट्र में हुआ, तो जवाब में राजग के प्रवक्ता साफ करते हैं कि हमारे नेता कह चुके हैं कि न प्रधानमंत्री की जगह खाली है, न मुख्यमंत्री की।

चौदह नवंबर की सुबह बिहार के चुनाव परिणाम आते हैं। मतदान के बाद हुए सर्वेक्षण अपने नतीजे दे चुके थे और एकाध को छोड़ सब राजग को जिताते दिखे। कुछ राजग को डेढ़ सौ सीट भी देते दिखे और एकाध ने तो 170 से 180 सीटें तक दीं।

आठ बज रहे हैं। सारे खबर चैनल बिहार विधान सभा के चुनाव के आरंभिक रुझानों पर खबर देने की तैयारी कर चुके हैं। कुछ देर में 'डाक मतपत्र' गिने जा रहे हैं। फिर 'ईवीएम' के वोटों की गिनती शुरू और यहां से बहुत-सी सीटों पर राजग की जीत के रुझान नजर आने लगते हैं। महागठबंधन हर पल पीछे होता दिखता है और राजग आगे बढ़ता नजर आता है। एकाध एंकर को छोड़ अधिकतर एंकरों के चेहरे रुझानों को देख कुछ चकित नजर आते हैं। फिर उनमें से कई अपनी खुशी को नहीं छिपाते, कुछ अपनी खुशी को दबाते हुए महागठबंधन की खबर लेते हैं कि कथित 'एंटी इन्कंबेंसी' यानी सत्ता विरोधी रुझान का क्या हुआ। आपके समीकरणों का क्या हुआ? क्या इस चुनाव ने 'बिहार में जातिवाद निर्णायक है' के 'विचार' को ध्वस्त कर दिया? क्या महागठबंधन का सामाजिक फार्मूला नाकाम हो गया और राजग का पास हो गया? कई एंकर और संवाददाता कल तक नीतीश के 'बीमार' होने, उनके 'अक्षम' होने की कामना करने वालों से सवाल पूछने लगते हैं कि कल तक आप महागठबंधन की बड़ी जीत का दावा कर रहे थे, तो उस दावे का क्या हुआ? महागठबंधन का एक प्रवक्ता किसी तरह संभालता है कि अभी कुछ भी कहना उचित नहीं, अंतिम परिणामों का इंतजार करें।

दोपहर के बारह बज रहे हैं। राजग के जीतने के रुझान बताते हैं कि अब आईं उनकी इतनी सीटें। आंकड़ा हर पल, कुछ बढ़ता, कुछ घटता नजर आता है। फिर रुझान पलटने लगते हैं। राजग की बढ़त दो सौ सीटों से घटकर अचानक 190 तक आ जाती है, लेकिन फिर 'बढ़त' नजर आने लगती है। दोपहर के करीब दो बजे राजग 200 पार पर पहुंचा दिखता है, जबकि महागठबंधन कुछ पैंतीस-छत्तीस सीट वाला नजर आता है, जबकि 'जन सुराज' शून्य पर आ जाता है और बाकी सहयोगी दो से पांच के बीच दिखते हैं।

एक निर्लिप्त कांग्रेसी वक्ता कहने लगते हैं कि भाजपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं में जीत की जो भूख है, वह अतुलनीय है। यह उसका ही परिणाम है। उनकी राजनीति से असहमत हुआ जा सकता है, लेकिन उनकी यह कर्मठता तारीफ के योग्य है। एंकर चहकती है कि लीजिए इनका भी हृदय परिवर्तन हो गया। फिर महागठबंधन के एक प्रवक्ता आते हैं और कहने लगते हैं कि अभी जल्दी है, इंतजार करें, लेकिन एक बड़े प्रवक्ता आते हैं जो अपनी असफलता के कारणों का ठीकरा चुनाव आयोग पर फोड़ कर चले जाते हैं कि यह चुनाव ज्ञानेश गुप्ता (मुख्य चुनाव आयुक्त) बरक्स बिहार की जनता के बीच हुआ है। पत्रकार पूछते हैं तो वे फिर वही 'ज्ञानेश बरक्स बिहार की जनता' की बात को दुहराते रहते हैं। फिर एक पुराने प्रवक्ता आकर यह कहकर बात संभालते हैं कि अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी... सारे परिणाम आने दीजिए..!'

यानी कि फिर वही... 'वोट चोरी' और 'चुनाव चोरी' के आरोप। फिर एक बहस में महागठबंधन के एक वक्ता 'चुनाव चोरी' को 'चुनाव डकैती' में बदल देते हैं। एंकर कहता है कि आपके 'वोट चोरी' के आरोप को तो सुप्रीम कोर्ट तक ने 'नकार' दिया, फिर भी आप इसी पर अटके हैं और अब तो आप 'चोरी' की जगह 'डकैती' कहने लगे हैं, कल को क्या कहेंगे?

कुछ एंकर और विपक्षी प्रवक्ता इन परिणामों को 'कौन बनेगा मुख्यमंत्री' की ओर ले आते हैं और भाजपा के प्रवक्ताओं से बार-बार पूछने लगते हैं कि नीतीश मुख्यमंत्री बनाए जाएंगे या नहीं। एक चर्चा में एक पुरानी पत्रकार पूछती हैं कि कुछ दिन बाद भाजपा नीतीश को हटा कर अपना मुख्यमंत्री बनाएगी, जैसा कि महाराष्ट्र में हुआ। जवाब में राजग के प्रवक्ता साफ करते हैं कि हमारे नेता कह चुके हैं कि न प्रधानमंत्री की जगह खाली है, न मुख्यमंत्री की। एक प्रवक्ता तो यह तक कह देते हैं कि आप हमको आपस में लड़ाने की जुगत न करें। इससे कुछ होने वाला नहीं।

अपराह्न के तीन बजे हैं। बढ़त के रुझान ठहर से गए हैं। राजग की बढ़त 200 पार पहुंच गई दिखती है। इसके बरक्स महागठबंधन की बढ़त इकतीस सीटों पर ठहर गई दिखती है। हार के कारणों पर विचार करते हुए एक 'विश्लेषक' कहते हैं कि महागठबंधन वाले कई नेता कार्यकर्ता आम जनता के बीच काम नहीं करते, लेकिन राजग, खासकर भाजपा के नेता व कार्यकर्ता चुनाव जीतने के लिए चौबीसों घंटे सातों दिन काम करते हैं। एक एंकर बताती है कि जब महाराष्ट्र का चुनाव चल रहा था, तभी भाजपा के नेताओं ने बिहार के चुनाव की 'योजना' शुरू कर दी थी। यह 'आशातीत चुनाव परिणाम' राजग के 'जनहितकारी कार्यों' का सुफल है। वे अपनी जनता के सीधे संपर्क में रहते हैं... फिर राजग सरकार ने हर महिला को "दस हजार का तड़का" दिया।

Jansatta Page No-30

जनादेश के मायने

मन को वे बातें झकझोर देती हैं जिसकी हम कल्पना तक नहीं कर पाते हैं। बिहार का जनादेश कुछ वैसा ही है। सभी अनुमान, पक्ष-विपक्ष का मूल्यांकन, सर्वे और अध्ययन सब धराशायी हो गए। ऐसा कैसे और क्यों हुआ, यह गहन चिंतन और अध्ययन का विषय है। भारत में बुद्धिजीवी इतने पूर्वाग्रह के शिकार हैं कि उन्होंने सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने की स्वयं की क्षमता घटा ली है। ऐसा मान लिया गया था कि सामाजिक सोच अपरिवर्तनीय स्थिति में है। सुविधावादी राजनीति इसे और भी बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करती रही है। यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य अपने मूल स्वभाव से प्रगतिशील होता है और आदर्श उसे लुभाता है। इसलिए किसी भी परिस्थिति में संकीर्णता आधारित जीवन मूल्य उसकी बाध्यता होती है, न कि वैचारिक बुनियाद। इसलिए जैसे ही उसे अवसर मिलता है, वह उस घरौंदे से बाहर निकल जाता है।

बिहार का जनादेश सामाजिक यथास्थिति को त्यागने का एक उदाहरण है। जनादेश ने दिखा दिया कि सर्वसमावेशी विकास में परंपरागत सोच को खत्म करने की अद्भुत क्षमता होती है। आर्थिक संपन्नता व्यक्ति को स्वावलंबी बनाती है। निर्णय लेने से उसकी स्वायत्तता बढ़ती है। राज्य की कल्याणकारी भूमिका एक बार फिर से परिभाषित हुई है। वर्ष 2014 के बाद से प्रधानमंत्री का सामाजिक दर्शन आर्थिक समूहों को चिह्नित कर उन्हें स्वावलंबी बनाना रहा है। वर्ष 2014 से पूर्व दी जाने वाली सहायता राज्य के विवेक पर निर्भर थी और उसमें अनिश्चितता रहती थी। मगर 2014 के बाद दी जाने वाली सहायता अधिकार आधारित, नीतिगत है और उसमें निश्चितता है। कल्याणकारी राज्य की अवधारणा में यह बुनियादी परिवर्तन है।

बिहार में बड़ी संख्या में किसानों को मिल रहा किसान सम्मान निधि इसका उदाहरण है। स्वास्थ्य, शिक्षा और आवास से जुड़ी कल्याणकारी योजनाओं में राज्य की सक्रियता ने ग्रामीण भारत की राजनीतिक चेतना को बढ़ाया है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि अधिकांश नव कल्याणकारी योजनाएं प्रधानमंत्री के सामाजिक आर्थिक दर्शन से उपजी हैं। वे दिन प्रतिदिन की जरूरत या संभावित परेशानियों के समाधान के रूप में हैं। इसलिए हाशिये के लोगों के मन में वे स्थायी रूप से घर कर चुके हैं।

कल्याणकारी राज्य का यह विकास माडल बिहार में सबसे प्रभावी रूप से महिलाओं तक पहुंचा। ग्रामीण महिलाएं आमतौर पर अपने पति या परिवार के किसी पुरुष अथवा पड़ोसी पर अपने राजनीतिक निर्णय के लिए निर्भर रहती थीं। लेकिन अब वे पितृसत्तात्मक सोच से आंशिक या पूर्ण रूप से मुक्त हैं। बदलाव की इस ऐतिहासिक प्रक्रिया को परंपरागत राजनीतिक शैली के लोग समझ पाने में विफल रहे हैं। महिलाओं ने अपने आर्थिक हितों के आईने में राजनीतिक विकल्पों को देखना शुरू कर दिया है। बिहार में पुरुषों एवं महिलाओं का मतदान फीसद क्रमशः 62.98 और 71.78 है। सात जिलों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं ने अधिक मतदान किया है। यह बिहार में लोकतंत्र का संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों विस्तार है।

औपचारिक राजनीति के इतर राज्य के लाभार्थियों में अनौपचारिक चिंतन प्रक्रिया पिछले एक दशक से चल रही है। चुनाव परिणाम के बाद चिंतकों की नींद टूट गई है। बिहार के चुनावी परिवेश में महिलाओं के मन में मद्यपान निषेध की नीति में बदलाव का भय भी था। वर्ष 2016 में पूर्ण शराबबंदी के निर्णय से बिहार को प्रत्येक वर्ष लगभग साढ़े तीन हजार करोड़ की क्षति हुई। बिहार जैसे विपन्न राज्य के लिए यह नीतीश कुमार का बड़ा निर्णय था। आर्थिक लाभ के लिए सामाजिक सौहार्द की बलि नहीं चढ़ाई जा सकती है। पांचवें राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण की रपट के अनुसार मद्यपान के कारण 83 फीसद महिलाएं, घरेलू हिंसा की शिकार होती थीं। उस पर विराम लग गया।

भारत के 'वाम उदारवादियों' की एक बड़ी विडंबना है। जब देश में जातियां हकीकत थीं, तब वे 'वर्ग चेतना' की पुस्तक लेकर घूम रहे थे और जब नव उदारवाद ने आर्थिक वर्गों की श्रेणियों का निर्माण कर दिया है, तब वे जाति-चेतना पर बात करने में लगे हैं। बिहार में भारतीय जनता पार्टी और भाकपा (माले) को छोड़ कर किसी भी दल के पास जीवंत राजनीतिक संरचना नहीं है। इसलिए राष्ट्रीय जनता दल का तर्क कि 'जंगल राज' इतिहास हो गया है, लोगों के गले नहीं उतर पाया।

इसलिए 2025 का जनादेश शुचिता आधारित सर्वसमावेशी शासन व्यवस्था की अग्रिम जिम्मेदारी भी है। प्रधानमंत्री द्वारा उल्लिखित चार नई

संदर्भ

राकेश सिन्हा

> बिहार का जनादेश सामाजिक यथास्थिति को त्यागने का एक उदाहरण है। जनादेश ने दिखा दिया कि सर्वसमावेशी विकास में परंपरागत सोच को खत्म करने की अद्भुत क्षमता होती है। आर्थिक संपन्नता व्यक्ति को स्वावलंबी बनाती है। निर्णय लेने से उसकी स्वायत्तता बढ़ती है। राज्य की कल्याणकारी भूमिका एक बार फिर से परिभाषित हुई है। वर्ष 2014 के बाद से प्रधानमंत्री के सामाजिक दर्शन में आर्थिक समूहों को चिह्नित कर उन्हें स्वावलंबी बनाना रहा है।

जातियों का उत्थान ही संपूर्ण क्रांति माना जा सकता है। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इसमें थोड़ी भी चूक उतनी ही तीव्रता से पुरानी राजनीति या प्रतिक्रियावाद के पुनरागमन का अवसर तैयार कर देगी।

बिहार ने 1967 और 1977 में इसी प्रकार का जनादेश देकर राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित किया था। रचनात्मक राजनीति सामाजिक प्रगतिशीलता को आगे बढ़ाती है और पीढ़ियों के लिए नया प्रतिमान प्रस्तुत करती है। सहजानंद सरस्वती, सच्चिदानंद सिन्हा, राजेंद्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण और कर्पूरी ठाकुर ऐसे कुछ नाम हैं, जिनका राजनीतिक योगदान से कहीं अधिक सामाजिक योगदान है। बिहार के जनतंत्र का इतिहास सदियों पुराना है। लिच्छवी गणतंत्र का अभिषेक पुष्करणी सरोवर उसकी स्मृति के रूप में वैशाली में आज भी विद्यमान है। इसमें स्नान कर प्रतिनिधि पद और गोपनीयता की शपथ लेते थे। उसी संदर्भ में भगवान बुद्ध का विज्जी संदेश आज भी प्रासंगिक हो जाता है। जिस गणतंत्र की विधायिका जन सरोकार पर निरंतर बहस करती है, जहां महिलाओं को सम्मान मिलता है और जनप्रतिनिधि का चरित्र पारदर्शी होता है, उस गणतंत्र का कभी विनाश नहीं हो सकता है।

Jansatta Page No-30

तोत्तो चानः खिड़की पर बैठी लड़की

जनसत्ता सरोकार

अमर किरदार

तो चान आम बच्चों से थोड़ी अलग थी। उसका ध्यान किसी एक चीज पर केंद्रित नहीं रह पाता था। वह स्कूल में खिड़की पर बैठ कर राहगीरों से बात करने लगती थी। इन सब वजहों से उसे स्कूल से निकाल दिया गया। लेकिन तोत्तो चान की मां ने अपनी बेटी का पूरा साथ दिया। मां ने अपनी बेटी के लिए एक ऐसा स्कूल खोज लिया जहां हर कुछ उतना ही अलग और अद्भुत था, जैसी अन्य बच्चों के बीच में तोत्तो चान थी। स्कूल का पहला दिन था और तोत्तो चान के नए स्कूल के प्रधानाध्यपाक को चार घंटे तक उसकी बातें सुननी पड़ी। उन्होंने तोत्तो चान की बातें ऐसे सुनी, जैसे इतनी अद्भुत बातें कभी सुनी ही नहीं हो।

इस नए स्कूल में तोत्तो चान पेड़ पर चढ़ सकती है तो उसका दोस्त क्यों नहीं चढ़ सकता है? अपने पोलियो के शिकार दोस्त को वह पेड़ पर चढ़ाने की कोशिश करती है। आम स्कूलों की तरह ऐसा करने पर वह सजा नहीं पाती है। हां, वह अपने दोस्त की शारीरिक स्थिति को अब और बेहतर तरीके से समझ सकती है। स्कूल के प्रिंसिपल बागवानी करने वाले माली को भी बच्चों के शिक्षक की तरह ही देखते हैं। स्कूल में बच्चों के लिए दोपहर का दो तरह का भोजन बनता था-कुछ समुद्र से कुछ पहाड़ से।

तोत्तो चान, असल जिंदगी की वह अमर किरदार है जो मुक्त शिक्षा व्यवस्था की प्रतिनिधि चेहरा बन चुकी है। एक स्कूल और उसका माहौल क्या ऐसा हो सकता है कि वह स्कूल ही दुनिया भर के स्कूलों के लिए पाठ्यक्रम सरीखा हो जाए। जापान में तोत्तो चान को पढ़ाने वाला स्कूल तोमोए गाकुएन ने ऐसा ही कर दिखाया। स्कूल की स्थापना की थी सोसाकू कोबायाशी ने। वे स्कूल के प्रधानाध्यापक भी थे। कोबायाशी द्वारा अपनाई गई शिक्षा पद्धति ने स्कूल की छात्रा तेत्सुको कुरोयानागी को इतना प्रभावित किया कि उसने इस पर एक आत्मकथात्मक किताब लिख डाली। 'मादोगीवा नो तोत्तो-चान' के नाम से 1981 में प्रकाशित हुई इस किताब ने सीखने-सिखाने की संवेदनशील दुनिया को काफी प्रभावित किया।

> **मूल रूप से जापानी भाषा में लिखी इस किताब का अंग्रेजी अनुवाद डोरोथी ब्रिटन ने 'तोत्तो चान द लिटिल गर्ल एट द विंडो' के नाम से किया। डोरोथी के सहज अनुवाद ने इस किताब को दुनिया भर में लोकप्रिय बना दिया।**

मूल रूप से जापानी भाषा में लिखी इस किताब का अंग्रेजी अनुवाद डोरोथी ब्रिटन ने 'तोत्तो चान द लिटिल गर्ल एट द विंडो' के नाम से किया। डोरोथी के सहज अनुवाद ने इस किताब को दुनिया भर में लोकप्रिय बना दिया।

तोत्तो चान के जरिए कुरोयानागी पाठकों को ऐसे स्कूल में ले जाती है, जहां बच्चे की आंखों से लेकर दिमाग तक पर किसी भी तरह के अनुशासन का पहरा नहीं लगाया जाता। तोत्तो चान की बालसुलभ हरकतें बड़ों की दुनिया को बड़ा संदेश देती हैं कि बच्चों की स्वाभाविक दुनिया में किसी तरह की बंदिशें नहीं लगानी चाहिए। अपने सोचे को करने की आजादी ही बच्चों को आत्मनिर्भर, संवेदनशील नागरिक बनाती है। आज यह किताब दुनिया भर के भाषाओं में अनूदित हो चुकी है। खास कर स्कूली शिक्षा से जुड़े लोगों और अभिभावकों के लिए तो इसे अनिवार्य माना जाता है।

Jansatta Page No-31

केदार

पल्लवी सक्सेना

कहानी

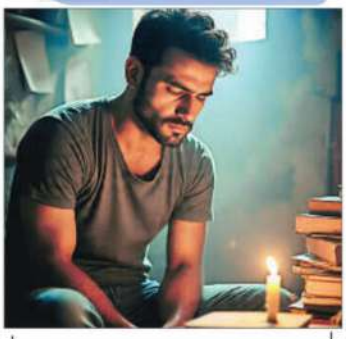

मो श कहें या शांति। आप इसे कोई और भी नाम दे सकते हैं। लेकिन यह जितना मृत व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण होता है, उतना ही जीवित इंसानों के लिए भी मायने रखता है। पूजा-हवन कर हम मान लेते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्राप्त हो गई होगी। जीवित व्यक्ति के लिए तो ऐसा कुछ नहीं होता। वह तो जीते जी ही शांति की खोज में भटकता रहता है। विशेष रूप से यदि वह किसी ग्लानि का शिकार हो।

यह कहानी है केदार की। अनाथ बच्चा केदार किसी दिन सड़क पर रुके वाहन साफ करता, तो किसी दिन लोगों के जूते। अक्सर उसे भूखे पेट ही सोना पड़ता था। कई बार उसका मन किया कि भीख मांगकर खा ले। कई बार उसके आस-पास रहने वाले उसी के जैसे लोग उसे थोड़ा बहुत अपने साथ मिल बांटकर खाने को कहते, क्योंकि वे सभी लोग बहुत अच्छे से जानते थे कि भूख क्या चीज होती है। लेकिन केदार हमेशा उनसे यही कहता, 'मुझे खाना नहीं चाहिए। कहीं कोई काम मिल रहा हो तो बताओ!' एक दिन एक चाय की दुकान पर ग्राहकों को चाय देने और बर्तन आदि साफ करने का काम उसे मिल गया।

उसने अपनी कड़ी मेहनत और ईमानदारी से अपने मालिक का दिल जीत लिया। फिर एक दिन मालिक ने उससे पूछा-'तुझे क्या चाहिए? कभी तो अपने मुंह से कुछ मांग लिया कर बेटा, ग्राहक भी जब कभी तेरे से खुश होकर तुझे कुछ देते हैं तो तू साफ मना कर देता है'। 'मुझे कोई कुछ दे, यह अच्छा नहीं लगता बाबा। मैं कोई मंगता थोड़े ही हूं'। यह सुनकर बाबा को हंसी आ गई और उन्होंने कहा, 'जैसा तेरा नाम, वैसा ही तेरा व्यवहार है। एकदम भोला! कुछ भी तुझे बिन मांगे मिले उसे लेने में कोई बुराई नहीं है। वह भीख नहीं, तेरा हक है। तेरी मेहनत के बल पर मिल रहा है न कि तूने उसे किसी से मांगा है। मैं तुझे कुछ देना चाहता हूं और वो कोई दया या भीख नहीं है मेरे बच्चे, तेरा अधिकार है'। 'अधिकार...! उसका तो आप मुझे पैसा देते है ना...?' 'तेरा बाबा होने के नाते मेरा भी मन करता है कि मैं भी तुझे कुछ दूं'। बहुत देर तक केदार अपने चाय वाले बाबा का चेहरा देखता रहा और बहुत सोचने के बाद बोला, 'अच्छा यदि मैं तुमसे कुछ मांगूं तो क्या तुम मुझे सच में दे सकोगे..?' 'माना की मैं भी कोई रईस नहीं हूं। लेकिन अपने बच्चे की मांग पूरी कर सकूं, इतना तो सामर्थ्य रखता हूं। बता तुझे क्या चाहिए?'

'बाबा मैं पढ़ना चाहता हूं। दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाना चाहता हूं।' 'बस इतनी सी बात? मैं तो समझा जाने क्या मांग लेगा तू मुझ से'। 'यह इतनी सी बात नहीं है बाबा'। केदार ने उदास मन से कहा। 'यदि मैं स्कूल जाने लगा तो दुकान पर काम नहीं कर सकूंगा। फिर तुम्हारा भी कितना नुकसान हो जाएगा, और मैं ऐसा किसी कीमत पर नहीं होने देना चाहता। बाबा ने केदार से कहा, 'तुझे दुकान की चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। तेरे जैसे और भी न जाने कितने केदार होंगे जिन्हें मेरी जरूरत है वह कर लेंगे दुकान का काम, तू तो अपनी पढ़ाई पर ध्यान लगा'।

> **उसने अपनी कड़ी मेहनत और ईमानदारी से अपने मालिक का दिल जीत लिया। फिर एक दिन मालिक ने उससे पूछा-'तुझे क्या चाहिए? कभी तो अपने मुंह से कुछ मांग लिया कर।'**

समय बीतने के साथ 12-13 साल का केदार पढ़-लिखकर इतना बड़ा हो गया कि अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद एक अच्छी कंपनी में अच्छे पद पर जा पहुंचा। आज उसका कद उसके बाबा से ऊंचा हो चुका है और बाबा की कमर झुक चुकी है। फिर एक दिन उसके जीवन में एक लड़की आई जिसका नाम पार्वती था। उसने केदार के व्यवहार के पीछे छिपे उसके सोने जैसे दिल को देखा, परखा, समझा। दोनों में प्रेम हुआ। पार्वती भी केदार के साथ उसी कंपनी में काम करती थी। लड़की के परिवार को यह रिश्ता मंजूर नहीं था क्योंकि केदार एक अनाथ व्यक्ति था। दोनों ने कोर्ट में जाकर शादी कर ली। बाबा को केदार की वजह से कोई परेशानी न हो, इसलिए अब वह अपनी पत्नी के साथ अलग घर में रहने के लिए चला गया था। दोनों बहुत खुश थे। उधर पार्वती की मां को कुछ रिश्तेदारों ने मिलकर केदार और उनकी बेटी के खिलाफ भड़काना प्रारंभ कर दिया। बात इतनी बिगड़ गई कि उन लोगों ने केदार को जान से मारने का मन बना लिया।

इधर केदार को पार्वती ने बताया कि वह बहुत जल्द ही पिता बनने वाला है। अब केदार अपनी पत्नी का खूब ध्यान रख रहा था। एक दिन दोनों अपनी होने वाली संतान के साथ आने वाले जीवन की सुनहरी कल्पना करते हुए अस्पताल से निकल ही रहे थे कि केदार को याद आया, वह गाड़ी की चाबी तो डाक्टर के केबिन में ही भूल आया था। उसने पार्वती को कार के पास जाने के लिए कहा और खुद चाबी लाने अंदर चला गया। कुछ ही देर में जब वो वापस आ रहा था, तो उसने दूर से ही गाड़ी खोलने के लिए चाबी के छल्ले में लगे बटन को दबाया ताकि पार्वती उसे खोलकर उसमें बैठ सके। जैसे ही उसने बटन दबाया, एक जोर का धमाका हुआ और सब खत्म हो गया। केदार को जब होश आया तब तक उसकी दुनिया उजड़ चुकी थी। उसकी आंखों के सामने वह विस्फोट अब भी बार-बार लगातार हो रहा था। उसका मानसिक संतुलन हिल गया था। उसकी समझ में यह बात कभी आई ही नहीं कि ऐसा सच में हुआ है। बाबा और उनके परिवार ने मिलकर पार्वती के अंतिम संस्कार के कर्मकांड किए। तभी किसी ने केदार को बताया कि, 'इस सब के जिम्मेदार पार्वती के परिवार वाले हैं, जो वास्तव में मारना केदार को चाहते थे, लेकिन शिकार खुद उनकी अपनी बेटी हो गई।

केदार की आंखों में ज्वाला भड़क उठी। वह क्रोध से तमतमाता हुआ सीधा पार्वती के घर पहुंचा, जहां खुद उसकी मां शोक सभा में बैठी विलाप कर रही थी और रोते हुए अपनी मरी हुई बेटी की तस्वीर के आगे क्षमा मांग रही थी। केदार ने क्रोध की अग्नि में जलते हुए कहा, 'तूने अपनी सगी बेटी की जान सिर्फ इसलिए ली कि उसने मुझ अनाथ से प्रेम किया था। एक मां होकर तूने दूसरी मां की जान ले ली। यह सुन कर पार्वती की मां के पैरों तले जमीन खिसक गई। तभी पुलिस वहां आ पहुंची और पार्वती की मां के साथ-साथ उसके परिवार के अन्य लोगों को भी गिरफ्तार कर ले गई।

केदार अपनी पत्नी के दुख में पूरी तरह पागल सा हो गया। कभी अपने आप से बातें करता, तो कभी सड़क पर खड़ी किसी भी गाड़ी को देखकर चिल्लाने लगता, लोगों को रोकता फिरता कि उसमें मत बैठना उसमें बम है मर जाओगे। न उसे अब खाने का होश रहा, न पहनने का, न नहाने का, मैले पुराने फटे हाल कपड़े पहने बढ़ी हुई दाढ़ी मूंछों के साथ बिखरे बाल लिए अक्सर वह उसी क्लीनिक के बाहर लोगों को आते-जाते देखता रहता और अपनी अदृश्य पार्वती से घंटों बातें करता रहता। उसकी पार्वती को तो शायद मोक्ष मिल भी गया होगा। लेकिन जीते जी केदार की जिंदगी से शांति हमेशा के लिए खत्म हो चुकी थी जो अब शायद उसकी मृत्यु के बाद ही उसे नसीब होगी।

Jansatta Page No-31

व्यक्ति की मुक्ति का काव्यात्मक बोध

जनसत्ता सरोकार

इक्कीसवीं सदी के पच्चीसवें बरस में 13 नवंबर को जयंती पर जब मुक्तिबोध याद किए गए, तब भी उन्हें समझना उतना ही मुश्किल रहा, जितना बीसवीं सदी में। गजानन माधव मुक्तिबोध हिंदी साहित्य को व्यक्ति की मुक्ति का जो बोध देकर गए हैं, वह काल और समय के अनुसार अद्यतन हो रहा है। नए आजाद भारत में शुरू हुई उनकी शाब्दिक अभिव्यक्ति बेमियादी हो चुकी है। उन्हें समझने के लिए पाठक को समय और स्वयं से टकराना होता है।

मुक्तिबोध का नाम लेते ही दिमाग में कौंधती है, उनकी सबसे चर्चित कविता 'अंधेरे में'। कविता का अर्थ जब मानव के अस्तित्व को झकझोरने लगे तो, बगल में मुक्तिबोध खड़े मिलते हैं। 'अंधेरे में' की रचना 1958 में हुई। यह वह समय था, वैसे रचनाकार थे, जब मुठभेड़ करती हुई पृष्ठभूमि से कविता का जन्म होता था। वैसा कारण, जो इतना व्यग्र कर दे कि अभिव्यक्ति समय और शब्द से परे चली जाए। मुक्तिबोध के मन में इस कविता की संरचना पत्रकारिता करते हुए बनी। नागपुर के एंप्रेस मिल के मजदूरों ने 1956 में हड़ताल की थी। जब मिल के मजदूरों पर लाठी व गोलियां चलाई जा रही थीं, उस वक्त मुक्तिबोध वहां बतौर पत्रकार मौजूद थे। इस गोलीकांड का मंथन उनके दिमाग में चलता रहा जो 1958 में 'अंधेरे में' के रूप में पूरा हुआ। हिंदी साहित्य में इस कविता को समझना और लिखना किसी शोध-पत्र को पूरा करने जैसा बन गया। पत्रकार, संपादक, कवि, आलोचक- मुक्तिबोध हर रूप में अपनी पैनी नजर को यथार्थ तक ले जाते हैं। हालांकि हिंदी का एक बड़ा तबका उन पर व्यक्तिवादी होने का भी आरोप लगाता है। 47 साल के अपने लघु जीवनकाल में वे हिंदी साहित्य को वर्तमान से लेकर इतिहास के द्वंद्वों को एक फलक पर लाने की वृहत्तर विधा दे गए।

गजानन माधव मुक्तिबोध

साजिश के तार

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

दिल्ली में बम फटने के अगले दिन लाउडस्पीकर लगा कर लोगों को सावधान करने का काम किया गया था, लेकिन दूर तक आतंकवाद से लड़ने में प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मी नहीं दिखे मुझे। कहना यह चाहती हूं मैं कि अक्सर होता यह है कि किसी आतंकवादी घटना घटने के बाद हम सब भूल जाते हैं कि आतंकवाद एक ऐसा कायर युद्ध है जिसके खिलाफ लड़ने के लिए युद्धस्तर की तैयारी होनी चाहिए प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मियों द्वारा।

लालकिले पर आतंकी हादसे के अगले दिन संयोग से मैं अपने एक कश्मीरी दोस्त से मिली। उन्होंने कहा, 'याद है मैंने तुमको क्या कहा था जब हम श्रीनगर में मिले थे दो साल पहले? उस वक्त पर्यटकों की बहार थी। ऐसा लगता था कि जिहादियों का बिल्कुल सफाया हो गया है और मैंने तुमको कहा था कि शांति सिर्फ ऊपर-ऊपर से है। याद है कि यह भी कहा था मैंने कि लोगों में अंदर से गुस्सा है जो कभी भी शांति को अशांति में बदल डालेगा। मेरा यह दोस्त एक कामयाब कारोबारी है जिसका ज्यादातर कारोबार दिल्ली से चलता है इसलिए कि असली पैसे मिलते हैं शालें, कालीन और अन्य कश्मीरी चीजें निर्यात करने से। इसकी न जिहादियों से कोई हमदर्दी है और न ही वह कश्मीर की सियासत से कोई वास्ता रखता है, लेकिन कश्मीर के उस दौरे पर मैंने उसकी बात राजनेताओं और पत्रकारों से भी सुनी थी।

घाटी पर जो शांति की चादर बिछी थी वह इतनी नाजुक थी कि कभी भी फट सकती थी, लेकिन मालूम नहीं क्यों केंद्र सरकार की खुफिया एजंसियों को यह बात पता नहीं थी। हर दूसरे दिन कोई आला राजनेता या अफसर बयान देता आया है कि घाटी से आतंकवाद को बिल्कुल समाप्त कर दिया गया है। यह बात केंद्रीय गृहमंत्री से हमने बहुत बार सुनी है और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार से भी। पहला झटका उनको लगा जब पहलगाम में आतंकवादी हमला हुआ था। उसको हमने पाकिस्तान के सिर थोप कर आपरेशन सिंदूर द्वारा उस देश के अंदर 'घुस कर' आतंकवादियों के मुख्यालय नष्ट किए, लेकिन इस बात पर किसी ने नहीं ध्यान दिया कि घाटी के लोगों में भी जिहादी विचारधारा ने ऐसी मजबूत जड़ें बनाई हैं कि उनको उखाड़ना आसान नहीं है। जिन कश्मीरी डाक्टरों पर लालकिले वाली घटना को अंजाम देने का इल्जाम है, वे अपनी नजरों में अल्लाह के लिए लड़ रहे हैं अन्याय के खिलाफ।

ऐसा कह कर मैं बिल्कुल जिहादी आतंकवाद को सही नहीं कह रही हूं। मेरी नजरों में आतंकवादी कायर होते हैं, योद्धा नहीं, लेकिन इतना जरूर कह रही हूं कि इस जिहादी सोच को खत्म करना आसान नहीं होगा। देश भर में मुझे मिलते हैं मुसलमान, जो आकर्षित हुए हैं जिहादी सोच से, जबसे हिंदुत्व के नाम पर गौरक्षकों ने ऐसी जंग छेड़ी है कि कई बार उनका शिकार बने हैं बेगुनाह कारोबारी, किसान और आम लोग। जब पढ़े-लिखे डाक्टर ही बनने लगते हैं आतंकवादी, तो वास्तव में चिंता होनी चाहिए देश के नेताओं को और हमको भी।

लालकिले वाली घटना के बाद खबर पत्रकारों को दी गई है कि हमारी सुरक्षा एजंसियों ने सतर्कता न दिखाई होती, तो तेरह लोग नहीं कई और मर सकते थे। सारी साजिश रची थी अल फलाह विश्वविद्यालय से जुड़े चार डाक्टरों ने, जिनसे साबित हो गया है कि एक ने लालकिले के सामने अपनी गाड़ी को बम बना कर बेगुनाह लोगों की जानें लीं और बीस से अधिक लोगों को गंभीर चोटें पहुंचाई। साबित हो गया है कि इस डाक्टर का नाम था उमर मोहम्मद राठर। जितनी भी जानकारी आप तक पहुंची है, वह सुरक्षा एजंसियों ने पत्रकारों तक चुपके से पहुंचाई है। तो पहला सवाल यह है कि औपचारिक तौर पर क्यों नहीं देश को यह जानकारी दी जाती है जैसे विकसित पश्चिमी देशों में होता है। 'सूत्रों' द्वारा जब पत्रकार जानकारी लेते हैं, तो खोजी पत्रकारिता नहीं करते हैं। करते तो शायद अल फलाह विश्वविद्यालय के डाक्टरों में तकरीबन चालीस फीसद कश्मीर घाटी से क्यों आते हैं, यह बताते। जानकारी शायद मिलती कि इस विश्वविद्यालय को जिहादियों के मुख्यालय में कैसे तब्दील किया गया और क्यों नहीं पहले किसी ने इस बात पर ध्यान दिया था। जब डाक्टरों की गुप्त मुलाकातें होती थीं कमरा नंबर-13 में, जिसमें जिहादी साजिशें रच रहे थे, तो कैसे हो सकता है कि अल फलाह विश्वविद्यालय के मालिक तक यह खबर किसी ने नहीं पहुंचाई?

सबसे बड़ा सवाल यह है कि इतनी बड़ी साजिश दो-तीन राज्यों में जैश-ए-मोहम्मद के प्यादों ने कैसे रची। इसके बारे में हमारी खुफिया एजंसियों को खबर क्यों इतनी देर से मिली? इस सवाल का जवाब मैं विनम्रता से खुद देना चाहती हूं। मुंबई में रहती हूं और जब भी नवंबर का महीना आता है, तो मुझे याद आता है 26/11 वाला हमला। हर बार ध्यान में आता है कि जो हुआ था, वह दोबारा अगर पाकिस्तान के आतंकी संगठन करना चाहते हैं, तो उतनी ही आसानी से कर सकेंगे, जितनी आसानी से 2008 में उन्होंने किया था। कारण यह है कि जो प्रशिक्षण देना चाहिए था मुंबई के आम पुलिसवालों को, उसके आसार तक नहीं देखने को मिले हैं। जिस प्रशिक्षण को 'काउंटर-टेररिज्म' कहते हैं अंग्रेजी में, वह बहुत खास है और अपने देश में, अभी तक इसको सिर्फ उन सुरक्षा कर्मियों को दिया जाता है जो वीआइपी सुरक्षा के लिए रखे जाते हैं। आम थानों में जो पुलिसवाले तैनात हैं उनको आतंकवादियों से लड़ने के लिए कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है।

दिल्ली में बम फटने के अगले दिन शहर के बाजारों में लाउडस्पीकर लगा कर लोगों को सावधान करने का काम किया गया था, लेकिन दूर तक आतंकवाद से लड़ने में प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मी नहीं दिखे मुझे। कहना यह चाहती हूं मैं कि अक्सर होता यह है कि किसी आतंकवादी घटना घटने के बाद हम सब भूल जाते हैं कि आतंकवाद एक ऐसा कायर युद्ध है जिसके खिलाफ लड़ने के लिए युद्धस्तर की तैयारी होनी चाहिए प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मियों द्वारा। उम्मीद करती हूं कि हमारे शासक अपनी पीठ थपथपाने के बदले सुरक्षा में असली परिवर्तन लाने के प्रयास करना शुरू करेंगे अब।

मतदान से बड़ी जिम्मेदारी

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

> **क्या** बिहार गरीब है? क्या यहां बड़े पैमाने पर बेरोजगारी है? क्या करोड़ों लोग नौकरी की तलाश में दूसरे राज्यों में पलायन कर रहे हैं? क्या बहुआयामी गरीबी लोगों के एक बड़े वर्ग को प्रभावित करती है? क्या शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा की स्थिति दयनीय है? 'शराबबंदी' के बावजूद क्या शराब खुलेआम उपलब्ध है? हर सवाल का जवाब 'हां' है। अगर ऐसा है, तो लोगों ने हाल ही में संपन्न चुनावों में जिस तरह से मतदान किया, उसका कोई स्पष्ट कारण नजर नहीं आता है।

बिहार की जनता ने अपना फैसला सुना दिया है। राजग को 202 सीटें और महागठबंधन को 35 सीटें मिली हैं। सभी नागरिकों को इस निर्णय को स्वीकार करना चाहिए। नई सरकार हमारी शुभकामनाओं की पात्र है, चाहे मुख्यमंत्री कोई भी हो। वैसे शुभकामनाओं की सबसे ज्यादा हकदार बिहार की जनता है।

बिहार में चुनावी गतिविधियों के प्रकाशन एवं प्रसारण में मीडिया ने खुद को गौरवान्वित नहीं किया है। कुछ मीडिया संस्थान (अखबार और टेलीविजन समाचार चैनल), जिन्होंने थोड़ा अलग रास्ता अपनाया था, वे भी इस भीड़ में शामिल हो गए। विभिन्न क्षेत्रों में मौजूद पत्रकार भी एक स्वर में बोल रहे थे: लोग जाति के आधार पर वोट कर रहे हैं; नीतीश कुमार के खिलाफ कोई सत्ता-विरोधी लहर नहीं है; तेजस्वी यादव चुनाव प्रचार में ऊर्जा तो लाए, लेकिन अपने पारंपरिक आधार से आगे अपनी नीतियों और विचारों का विस्तार नहीं कर पाए; प्रशांत किशोर ने मतदाताओं के सामने नए विचार रखे, लेकिन उन्हें एक नौसिखिया और अप्रमाणित माना जा रहा है; नरेंद्र मोदी मतदाताओं से तत्काल जुड़ जाते हैं; राहुल गांधी अपने मुख्य मुद्दे वोट चोरी और बेरोजगारी वगैरह पर अड़े रहे, आदि-आदि। नतीजे मीडिया के शोरगुल को सही साबित करते दिख रहे हैं। एकमात्र नया गीत था- मतदान से पहले, मतदान के दौरान और मतदान के बाद हर घर की एक महिला को दस हजार रुपए की नकद राशि देना।

निचले पायदान पर

बिहार के लोगों की याददाश्त बहुत गहरी है। उन्होंने लालू प्रसाद (या उनकी पत्नी) की 15 साल की सरकार (1990-2005) को याद किया और तेजस्वी यादव को बेवजह दोषी ठहराया, जो उस समय मुश्किल से 16 साल के थे, जब सरकार सत्ता से बाहर हुई थी। उन्होंने नीतीश कुमार (या उनके प्रतिनिधि) की 20 साल की सरकार को भी याद किया, लेकिन ऐसा लगता है कि उनकी तमाम नाकामियों के प्रति लोगों में कोई नाराजगी नहीं है।

क्या बिहार गरीब है? क्या यहां बड़े पैमाने पर बेरोजगारी है? क्या करोड़ों लोग नौकरी की तलाश में दूसरे राज्यों में पलायन कर रहे हैं? क्या बहुआयामी गरीबी लोगों के एक बड़े वर्ग को प्रभावित करती है? क्या शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा की स्थिति दयनीय है? 'शराबबंदी' के बावजूद क्या शराब खुलेआम उपलब्ध है? हर सवाल का जवाब 'हां' है। अगर ऐसा है, तो लोगों ने हाल ही में संपन्न चुनावों में जिस तरह से मतदान किया, उसका कोई स्पष्ट कारण नजर नहीं आता है। एक लेख में शेखर ने व्यंग्यात्मक लहजे में लिखा कि 'बिहार आज जो सोचता है, वह परसों भी नहीं सोचता था।' जो भी हो, इसके पीछे शायद कुछ अच्छे कारण हो सकते हैं, जो चुनाव बाद के सर्वेक्षणों में सामने आएंगे।

मैं बिहार के लोगों से चंपारण युग की भावना को पुनः खोजने का आग्रह करता हूं। छात्रों को अयोग्य शिक्षकों; पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं और शिक्षकों से रहित कालेजों एवं स्कूलों; पर्चाफोड़; परीक्षाओं में सामूहिक नकल; हेरफेर किए गए परिणाम; बेकार डिग्रियां; और हास्यास्पद लोक सेवा भर्ती को चुपचाप बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। युवाओं को अपने राज्य में नौकरियों की कमी को चुपचाप स्वीकार नहीं करना चाहिए और दूर-दूर ऐसे राज्य में किसी भी नौकरी के लिए नहीं जाना चाहिए, जहां के लोग, भाषा, खान-पान और संस्कृति उनके लिए अपरिचित हों। माता-पिता और परिवारों को यह भाग्य मानकर स्वीकार नहीं करना चाहिए कि पुरुष हमेशा उनसे दूर रहेंगे। बिहार के लोगों को अब अपने पिता और दादी की तरह नहीं रहना चाहिए।

संगठन ही कुंजी

स्पष्ट तौर पर विपक्षी राजनीतिक दल जनता के सामने एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने और बदलाव की इच्छा जगाने में विफल रहे। प्रशांत किशोर ने ऐसा किया, लेकिन वे कई कमियों से घिरे रहे। अगर यह सच है, तो इसका दोष पूरी तरह से विपक्षी राजनीतिक दलों पर है। केवल सक्षम नेता और संसाधन ही पर्याप्त नहीं हैं; उनके पास जमीनी स्तर पर मजबूत पकड़ और एक सशक्त संगठन होना चाहिए। चुनाव जीतने में पार्टी के नेताओं या उम्मीदवारों से ज्यादा संगठन और कार्यकर्ता की भूमिका अहम होती है। एक नियम के रूप में- कुछ अपवादों को छोड़कर- हर चुनाव एक ऐसी पार्टी या पार्टियों के गठबंधन द्वारा जीता जाता है, जिसके पास संगठनात्मक शक्ति होती है, जो मतदाताओं को अपने पक्ष में मतदान करने के लिए प्रेरित कर सकता है। बिहार के नतीजों को देखते हुए ऐसा लगता है कि वहां पर भाजपा और उसके सहयोगी जद (एकी) के पास यह संगठनात्मक शक्ति थी।

दायित्व किसका

चुनाव आयोग की भूमिका सवालों के घेरे में रही। बिहार चुनाव से कुछ दिन पहले आयोग ने मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण की घोषणा की- केवल बिहार में- और बहस को भटका दिया। मतदान फीसद में वृद्धि आंशिक रूप से इसलिए हुई, क्योंकि मतदाता सूचियों में कुल मतों की संख्या कम थी, और इसका श्रेय विशेष गहन पुनरीक्षण को जाता है।

चुनाव की तारीखों की घोषणा से दस दिन पहले प्रधानमंत्री की ओर से मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के एलान पर चुनाव आयोग ने आंखें मूंद लीं। महिलाओं के खाते में दस हजार रुपए का हस्तांतरण घोषणा से पहले शुरू हुआ और चुनाव प्रचार के दौरान जारी रहा; चुनाव आयोग ने इसे किसी भी स्तर पर नहीं रोका। यह धन हस्तांतरण मतदाताओं को एक खुली रिश्वत थी। तमिलनाडु में चुनाव आयोग की कार्रवाई से तुलना कीजिए। वहां किसानों के लिए नकद सहायता योजना मार्च 2003 में शुरू की गई थी; जब 2004 में लोकसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा हुई, तो यह योजना बंद कर दी गई। वर्ष 2006 से एक मुफ्त रंगीन टीवी योजना लागू थी; 2011 में जब विधानसभा चुनावों की घोषणा हुई, तो इस योजना को अचानक स्थगित कर दिया गया (स्रोत: द हिंदू)। बिहार में चुनाव आयोग का पक्षपातपूर्ण आचरण स्पष्ट था।

इस सबके बावजूद, यह मानना होगा कि राजग ने शानदार जीत हासिल की।

मुझे इस बात की ज्यादा चिंता है कि अगले पांच वर्षों में राज्य सरकार को उसके वादों और जवाबदेही के लिए कौन जिम्मेदार ठहराएगा। बिहार की जनता ने राज्य विधानसभा में एक मजबूत विपक्ष के लिए वोट नहीं दिया है, और इसी वजह से जिम्मेदारी फिर से जनता पर ही आ जाती है। यह मत के अधिकार के इस्तेमाल से भी बड़ी जिम्मेदारी है।

सफेदपोश

पेशेवर वैधता को सुरक्षा कवच के रूप में इस्तेमाल करते रहे हैं आतंकवादी
लाल किला विस्फोट में सुरक्षा एजंसियों की लापरवाही पर उठे सवाल

दिल्ली में लाल किले के पास सोमवार शाम हुए विस्फोट के कई ऐसे बिंदु हैं, जो खुफिया एवं सुरक्षा एजंसियों की चूक की ओर इशारा करते हैं। साफ है कि सफेदपोश संदिग्ध आतंकी तंत्र ने महीनों तक तैयारी की और आतंकी हमले को तब अंजाम दिया, जब आपरेशन सिंदूर को लेकर देश भर में उच्च सुरक्षा बरती जा रही थी। धमाके में 13 लोगों की जान गई। इस विस्फोट की कड़ी फरीदाबाद से बरामद विस्फोटकों से जुड़ी। इन्हीं विस्फोटकों को कश्मीर के नौगाम ले जाया गया क्योंकि यह मामला वहीं दर्ज था। जब शुक्रवार को नौगाम थाने में विस्फोटकों की जांच की जा रही थी, तो उनमें हुए धमाके से नौ लोगों की मौत हो गई और 32 घायल हो गए। विस्फोटकों की बरामदगी और दिल्ली में धमाके का सबसे चिंताजनक पहलू है, इसमें शामिल लोगों का चिकित्सा पेशे से जुड़ा होना। इन्हें सफेदपोश आतंकवादी कहा गया है। ये अपने मूल काम की आड़ में आतंकी गतिविधियों में संलिप्त रहते हैं। साल 2018 में कश्मीर में ऐसे लोगों को 'हाइब्रिड' आतंकी का नाम दिया गया था। दिल्ली में हुए विस्फोट ने आतंक के इस खतरनाक स्वरूप को उघाड़ने के साथ ही सुरक्षा एजंसियों की नाकामी को भी सामने ला दिया। सरोकार की एक निगाह...

जनसत्ता सरोकार

फरीदाबाद में विस्फोटक जुटा कर रखने वाले सफेदपोशों की पाकिस्तान में संदिग्ध नंबरों पर बात होती रही, लेकिन खुफिया एजंसियों को भनक नहीं लगी। धमाके के बाद कई संदिग्धों को हिरासत में लिया गया है। यहां सवाल है कि कई स्तरों पर हुई चूक की जवाबदेही कौन लेगा, जबकि केंद्र का दावा है कि आपरेशन सिंदूर जारी है और खुफिया विभाग और सुरक्षा एजंसियों से जुड़े विभाग सतर्क हैं। ऐसे में दिल्ली के लाल किले के पास विस्फोट करने में संदिग्ध कैसे कामयाब हो गए।

सीसीटीवी फुटेज से साफ है कि धमाके वाले दिन मुख्य संदिग्ध डाक्टर उमर नबी दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के रास्ते हरियाणा से दिल्ली आया। सोमवार सुबह करीब 8:13 बजे बदरपुर टोल प्लाजा पार किया और दिल्ली में प्रवेश किया। वहां से उमर ने ओखला और औद्योगिक क्षेत्र सहित दक्षिण-पूर्वी दिल्ली के कई इलाकों से होते हुए, कनाट प्लेस पार किया और फिर उसे पूर्वी दिल्ली और बाद में मध्य दिल्ली के रिंग रोड के पास देखा गया। उमर ने जानबूझ कर मुख्य सड़कों से परहेज किया और भीड़-भाड़ वाले इलाकों से बार-बार रास्ते बदलता रहा। हैरान करने वाली बात यह है कि देश की राजधानी में सड़कों पर उमर विस्फोटक लेकर घूमता रहा और आखिरकार लाल किले के पास पार्किंग में पहुंचा, जहां करीब तीन घंटे तक कार में बैठा रहा। बाद में उसने खुद को कार के साथ उड़ा लिया।

सवाल उठता है कि लाल किले की पार्किंग में उमर विस्फोटक के साथ था, पर इसकी भनक सुरक्षाकर्मियों को नहीं लगी। कहा जा रहा है कि लाल किला धमाके के चार संदिग्ध डाक्टर मुजम्मिल गनई, डाक्टर अदील अहमद राथर, डाक्टर शाहीन सईद और डाक्टर उमर नबी पिछले कुछ समय से पाकिस्तान में बैठे आकाओं के संपर्क में थे। आखिरकार कहां चूक हुई और सुरक्षा एजंसियां इन चारों की बातचीत क्यों नहीं पकड़ पाईं?

पाकिस्तान से ड्रोन की मदद से जम्मू-कश्मीर के खेतों में विस्फोटक गिराया गया था, जहां से नेटवर्क से जुड़े सदस्य सेब की आड़ में ट्रक से फरीदाबाद तक लेकर आए। वास्तव में दो राज्यों के बीच सीमाओं पर आरटीओ और स्थानीय पुलिस सबसे पहले वाहन के पंजीकरण, बीमा और प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र जैसे दस्तावेजों की जांच करते हैं। उसके बाद चालक के पहचान पत्र (जैसे आधार कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस) और अन्य आवश्यक पहचान की जांच की जाती है। सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस वाहन के भीतर किसी भी अवैध या प्रतिबंधित वस्तु, जैसे मादक पदार्थ या हथियार की तलाश कर सकती है। वहीं, संदेह होने पर पुलिस वाहन को रोकने और उसकी गहन जांच करवाने के लिए कह सकती है। यही नहीं

> **कहा** जा रहा है कि लाल किला धमाके के चार संदिग्ध डाक्टर मुजम्मिल गनई, डाक्टर अदील अहमद राथर, डाक्टर शाहीन सईद और डाक्टर उमर नबी कुछ समय से पाकिस्तान में बैठे आकाओं के संपर्क में थे।

मुजम्मिल गनई (ऊपर) अदील अहमद (दाएं) और शाहीन सईद (नीचे बाएं)।

अंतरराज्यीय सीमाओं पर सीमा पार करने वाले वाहनों की और भी कड़ाई से जांच की जाती है। इसमें सामान, दस्तावेज और अन्य वस्तुओं की तलाशी शामिल हो सकती है। क्या सीमाओं पर इस प्रकार की जांच की गई थी? यदि की गई तो कोई ट्रक विस्फोटक लेकर जम्मू-कश्मीर से हरियाणा के फरीदाबाद तक कैसे पहुंच गया। जानकार मानते हैं कि नाके के पक्का नियमों की अनदेखी कर वसूली कर ट्रक को दूसरे राज्यों में प्रवेश दे दिया जाता है। नाके पर तैनात कर्मचारियों की इसी प्रकार की लापरवाही किसी बड़े साजिश को होने देती है। यदि नियमों का सख्ती से पालन किया जाए तो जघन्य आतंकी घटनाओं को रोका जा सकता है।

जानकार बताते हैं कि खाद बनाने वाली एक कंपनी कितना अमोनियम नाइट्रेट रख सकती है, यह पूरी तरह से उसके उपयोग, भंडारण की क्षमता और सुरक्षा नियमों पर निर्भर करता है। लेकिन अमोनियम नाइट्रेट एक विस्फोटक पदार्थ है। इस कारण इसकी मात्रा को नियंत्रित करने और सुरक्षा दिशानिर्देशों का पालन करने की आवश्यकता होती है। अभी तक की जांच में सामने आया है कि चारों संदिग्ध डाक्टर मुजम्मिल गनई, डाक्टर अदील अहमद राथर, डाक्टर शाहीन सईद और डाक्टर उमर नबी ने 26 लाख रुपए विस्फोटक खरीदने के लिए एकत्रित किए थे। जमा की गई इस राशि से उन्होंने गुरुग्राम, नूंह और आसपास के शहरों से लगभग तीन लाख रुपए मूल्य की लगभग 26 कुंतल एनपीके खाद खरीदी थी।

यहां सवाल उठता है कि इन संदिग्धों ने इतनी मात्रा में अमोनियम नाइट्रेट जैसा विस्फोटक पदार्थ खरीदा और वहां की स्थानीय खुफिया यूनिट (एलआइओ) या फिर खुफिया एजंसी के निगाहों से कैसे बच गए? क्या उस कंपनी ने भी इसमें यह जानने की कोशिश नहीं की कि वे इतनी मात्रा में अमोनियम नाइट्रेट का क्या करेंगे, जबकि दिल्ली पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि अन्य रसायनों के साथ मिश्रित इस उर्वरक का इस्तेमाल आमतौर पर इंप्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आइईडी) बनाने में किया जाता है। जांच में यह भी सामने आया है कि धमाके में इंप्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आइईडी), आरडीएक्स, सीएनजी गैस सिलेंडर व अमोनियम नाइट्रेट का इस्तेमाल किया गया था। डाक्टर उमर नबी ने जानबूझकर तैयार किए गए विस्फोटक को धमाके वाली कार की पेट्रोल टंकी के समीप रखा था, ताकि धमाके का असर कहीं अधिक हो और हुआ भी ऐसा ही। विस्फोट के कारण गुरुवार तक 13 लोगों की मौत हो गई।

चारों संदिग्ध देश के एक भाग से दूसरे भाग में आते-जाते रहे और अपने नेटवर्क को मजबूत बनाते रहे। हैरान करने वाली बात यह है कि करीब एक महीने तक संदिग्ध बड़ी मात्रा में विस्फोटक की खेप फरीदाबाद में दो ठिकानों पर एकत्रित करने में कामयाब रहे। पर इसकी भनक वहां के स्थानीय खुफिया विभाग को नहीं लगी। हालांकि, छह महीने पहले जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों के समर्थन में लगाए गए पोस्टर से खुफिया विभाग को जानकारी मिली और सुरक्षा एजंसियों व स्थानीय पुलिस ने जम्मू कश्मीर, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में फैले इस आतंकी नेटवर्क का भंडाफोड़ करने के बाद लगभग 2900 किलोग्राम अमोनियम नाइट्रेट, पोटेशियम क्लोराइड और सल्फर जब्त किया। इसके बाद संदिग्ध आतंकवादी हड़बड़ा गए और सोमवार शाम को विस्फोट को अंजाम दिया। इतनी बड़ी मात्रा में विस्फोटक फरीदाबाद तक कैसे पहुंचा। इस सवाल से न केवल सुरक्षा एजंसियां, बल्कि दिल्ली व हरियाणा की पुलिस जांच का हवाला देकर बच रही है।

दिल्ली पुलिस की अभी तक की जांच में पता चला कि मुख्य संदिग्ध डाक्टर उमर नबी मूल रूप से पुलवामा का रहने वाला था। उसने दिल्ली के न्यू सीलमपुर में मौलमपुरी, मस्जिद के पास एक मकान किराए पर लिया था। बाद में पुलवामा की जगह दिल्ली का पता आधार कार्ड में संशोधित कराया। पुलिस के सामने यह बड़ी चुनौती है कि आखिरकार उमर पुलवामा का स्थानीय निवासी होने के बाद कैसे अपने आधार कार्ड पर न्यू सीलमपुर का पता लिखवाने में सफल रहा। क्या उसकी मदद न्यू सीलमपुर के स्थानीय निवासियों ने की? नहीं तो यह कैसे संभव हो सकता है कि पुलवामा का निवासी दिल्ली में आधार कार्ड का पता संशोधित करवा ले।

विस्फोट के तार दिल्ली, हरियाणा और जम्मू-कश्मीर से जुड़े हैं। शुरुआत से ही फरीदाबाद स्थित अल-फलाह विश्वविद्यालय की भूमिका संदिग्ध मानी जा रही है। विश्वविद्यालय से कुछ दूरी पर स्थित संदिग्ध आतंकियों के दो ठिकानों से 2,921 किलो विस्फोटक मिला। धौज गांव से 358 किलो विस्फोटक बरामद किया गया। वहीं फतेहपुर टगा गांव से 2563 किलोग्राम विस्फोटक मिला। अल-फलाह विश्वविद्यालय में पढ़ाने वाले डाक्टर मुजम्मिल अहमद गनई ने धौज गांव में किराए पर कमरा लिया था, जहां 358 किलो विस्फोटक का जखीरा तीन दिनों में पहुंचाया गया। दूसरा कमरा विश्वविद्यालय के पास फतेहपुर टगा गांव में लिया गया था, जहां चार-पांच दिनों में खेप पहुंचाई गई।

फतेहपुर टगा गांव में जिस मकान में विस्फोटक छुपा कर रखा गया था, वहां मजदूर रहते हैं। मकान के निचले हिस्से में दुकान और ऊपरी मंजिल पर सात कमरे बने हैं, जिनमें से एक कमरा मुजम्मिल अहमद गनई ने किराए पर ले रखा था। जांच में यह भी पता चला कि अमोनियम नाइट्रेट आठ बड़े सूटकेस और चार छोटे सूटकेस में छुपा कर रखे गए थे। मकान मालिक ने तीन साल पहले 60 गज का यह प्लाट खरीदा था और मकान बनवाकर उसका एक कमरा डाक्टर मुजम्मिल को किराए पर दे दिया था।

मोदी की गारंटी से एनडीए की हुई जीत

बिहार विधानसभा चुनाव, 2025 का परिणाम भारतीय लोकतंत्र के उन महत्वपूर्ण क्षणों में दर्ज हो चुका है, जब जनता केवल सरकार नहीं चुनती, बल्कि अपने भविष्य की दिशा भी तय करती है। इस चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और उनकी गारंटी पर भरोसा करते हुए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने एक बार फिर निर्णायक और प्रचंड बहुमत हासिल किया है। बिहार की जनता ने यह साबित कर दिया कि बिहार की राजनीति अब स्थिर सुशासन, विकास आधारित नीतियों और मजबूत नेतृत्व पर ही आगे बढ़ रही है।

भाजपा ने 101 सीटों पर चुनाव लड़ा और 89 सीटों पर जीत दर्ज कर राज्य की सबसे बड़ी अकेली पार्टी के रूप में उभरकर प्रदेश की राजनीति के केंद्र में अपनी जगह और मजबूत कर ली है। यह जीत मात्र संख्यात्मक उपलब्धि नहीं है, बल्कि भाजपा के जनाधार के विस्तार, व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता और प्रभावी बूथ प्रबंधन का संकेतक है। इन आंकड़ों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बिहार की जनता ने एक बार फिर से स्थिर शासन और विकास-प्रधान राजनीति को चुना है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के मंत्र पर अपना भरोसा कायम रखा है।

इस चुनाव में एनडीए की रणनीति का केंद्र रहा जनकल्याण, पारदर्शिता और सुशासन का माडल। राज्य भर में जनता की भारी भागीदारी और उससे निकले परिणाम यह बताते हैं कि अब बिहार की राजनीति काम के आधार पर आगे बढ़ रही है। एनडीए के उम्मीदवारों की जीत का सीट स्तर पर विश्लेषण दर्शाता है कि यह समर्थन अकेले शीर्ष नेतृत्व की लोकप्रियता का परिणाम नहीं, बल्कि उन प्रयासों का भी फल है, जो पिछले कई वर्षों में गांव-गांव में किए गए। बिहार के मतदाताओं ने इस चुनाव में केवल मतदान नहीं किया, बल्कि आने वाली राजनीति की दिशा भी तय कर दी। जनता ने विपक्ष की नकारात्मकता, भ्रम और भय फैलाने की राजनीति को खारिज कर दिया। जहां एनडीए ने पूरे चुनाव में विकास और सुशासन को केंद्र में रखा, वहीं विपक्ष भय और नकारात्मकता

संजय मयूख

यह जीत भाजपा के जनाधार के विस्तार व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता और प्रभावी बूथ प्रबंधन का संकेतक है।

वाली राजनीति में उलझा रहा। जनता की आकांक्षाओं को समझने में विपक्ष विफल रहा और पुरानी जातिगत राजनीति पर निर्भर रहा। जनता ने स्पष्ट संदेश दिया कि बिहार अब इन पुराने पैमानों पर राजनीति स्वीकार नहीं करेगा। इस बार का जनादेश इस बात का प्रमाण है कि बिहार उस पुराने दौर से बाहर आ चुका है जब राजनीति जातिगत समीकरणों और अविश्वास पर आधारित रहती थी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकसित हो रहे नए भारत की यात्रा में बिहार अब आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है। आज जब मैं बिहार की जनता के इस ऐतिहासिक जनादेश को देखता हूं, तो यह साफ नजर आता है कि यह चुनाव केवल सीटों का नहीं, बल्कि विश्वास और आकांक्षाओं का चुनाव था। दशकों तक जो चंपारण की धरती हमेशा संघर्ष और परिवर्तन का प्रतीक रही है, जो 'मिनी चंबल' के नाम से बदनाम था। यह इलाका लंबे समय तक नक्सलवाद और अपराध की चुनौतियों से जूझता रहा, लेकिन एनडीए सरकार के प्रयासों से चंपारण अब उद्योग और निवेश का नया केंद्र बन रहा है। सड़कों का विस्तार, कृषि आधारित उद्योगों में वृद्धि और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर इस क्षेत्र की नई पहचान बन चुके हैं। यहां हुआ रिकार्ड मतदान यह बताता है कि जनता पुराने दौर में लौटने को बिल्कुल तैयार नहीं है। इसी तरह मगध क्षेत्र अपनी प्राचीन धरोहर और सांस्कृतिक महत्व के लिए प्रसिद्ध रहा है, लेकिन इस चुनाव में नालंदा, गया और राजगीर की सीटों पर एनडीए की मजबूती दिखाती है कि जनता ने प्राचीन विरासत को आधुनिक विकास से जोड़ने के प्रयासों का स्वागत किया है। नालंदा विश्वविद्यालय को नई पहचान, राजगीर में पर्यटन केंद्र का विस्तार और गया में आधारभूत संरचना का विकास जीत के प्रमुख कारण रहे।

कहते हैं कि जब जनता ठान लेती है, तो विकास की गति को कोई रोक नहीं सकता। सीतामढ़ी और शिवहर में इस बार दर्ज की गई भारी मतदान संख्या केवल राजनीतिक प्रक्रिया का हिस्सा नहीं थी। यह सांस्कृतिक चेतना और आस्था का भी प्रमाण थी। पुनौरा धाम में माता सीता के भव्य मंदिर निर्माण का संकल्प जनता के मन से जुड़ा हुआ विषय है। इसे केवल एक निर्माण परियोजना नहीं, बल्कि बिहार की गौरवशाली सांस्कृतिक परंपरा के पुनर्जीवन का प्रयास माना गया। जनता ने इसी भावना पर भरोसा जताते हुए अभूतपूर्व मतदान किया और एनडीए के प्रति अपना समर्थन मजबूत किया। एक समय शाहाबाद क्षेत्र नक्सलवाद और जातीय तनाव का केंद्र माना जाता था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में सुशासन माडल के कारण यहां के हालात पूरी तरह बदल चुके हैं।

लोकसभा चुनाव में जिस-जिस जगह भाजपा थोड़ा पीछे रही, वहां जनता के मन में एक दुख था कि हमारे कारण मोदी को 240 पर रुकना पड़ा। ऐसे में जनता ने कमर कस लिया कि अब मोदी जी को ऐतिहासिक रूप से मजबूत करना है। अब रुकना नहीं है। इसका परिणाम हमने महाराष्ट्र में देखा, हरियाणा में देखा और अब बिहार में भी हमने ये देखा। बिहार का लगभग 89 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण है। हिमाचल प्रदेश के बाद, बिहार देश में दूसरा सबसे अधिक ग्रामीण प्रतिशत वाला राज्य है। जिस तरह बिहार ने एनडीए को तीन-चौथाई बहुमत का आशीर्वाद दिया है, इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण भारत भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ मजबूती से खड़ा है। ये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व की जीत है, साथ ही नीतीश बाबू के सुशासन की भी।

संजय मयूख, भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी
(भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया सह-प्रमुख, राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं बिहार विधान परिषद में भाजपा के मुख्य सचेतक)

Dainik Jagaran Page No-12

बड़ी जीत ने अपेक्षाएं भी बढ़ाईं

संजय गुप्त

चूंकि राजग ने प्रचंड जीत हासिल की है, इसलिए बिहार के लोगों को उसकी डबल इंजन सरकार से उम्मीदें भी कहीं अधिक बढ़ गई हैं

बिहार में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की जो अप्रत्याशित जीत हुई, उसने बिहार की यह छवि तोड़ने का काम किया कि यहां के मतदाता जाति और मजहब के आधार पर वोट करते हैं। यदि बिहार के नतीजों में सत्ता विरोधी प्रभाव नहीं दिखा तो इसका प्रमुख कारण यह रहा कि यहां के मतदाताओं ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चेहरे पर अधिक भरोसा किया। जहां राजद की ओर से महिलाओं को तीस हजार रुपये सालाना और हर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी का वादा था, वहीं भाजपा-जदयू के नेतृत्व वाले राजग ने महिलाओं को दस हजार रुपये देने का वादा तो किया ही, उस पर अमल भी शुरू करके यह संदेश दिया कि वह जो कह रहा है, उसे पूरा करने को प्रतिबद्ध है। महागठबंधन का वादा अधिक लुभावना तो था, लेकिन वह पूरा किए जाने लायक नहीं दिख रहा था। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि आखिर हर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देना कैसे संभव है? राजनीति में लोक-लुभावन वादे से अधिक यह महत्व रखता है कि उसे कर कौन रहा है और वह पूरा करने लायक है या नहीं? इस मामले में बिहार की जनता ने नीतीश और मोदी पर अधिक भरोसा किया तो उनके पिछले रिकार्ड के कारण। यह भी स्पष्ट है कि डबल इंजन सरकार के नारे ने बिहार में असर दिखाया।

जदयू के लिए भाजपा किस तरह एक ताकत और सहारा बनी, इसका प्रमाण यह है कि वह सबसे बड़े दल के रूप में उभरी। दूसरी ओर राजद के लिए कांग्रेस बोझ साबित हुई। उसे मात्र छह सीटें मिलीं। यदि भाजपा जदयू की ताकत बनी तो प्रधानमंत्री मोदी की सशक्त नेता की छवि और उनकी सरकार के कामकाज के कारण। राजग की जीत में मोदी की लोकप्रियता एक बड़ा कारण रही। बिहार की जनता यह देख रही थी कि जहां मोदी के चलते भाजपा देश भर में अपनी राजनीतिक जमीन मजबूत करती जा रही है, वहीं कांग्रेस खोती जा रही है। राहुल गांधी ने जहां वोट चोरी का मुद्दा उठाकर बिहार के लोगों को बरगलाने की नाकाम कोशिश की, वहीं प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषणों से राज्य के लोगों की नब्ज पर हाथ रखा। जब प्रधानमंत्री ने जंगलराज की चर्चा की तो कांग्रेस उस पर सफाई देती दिखी। जंगलराज की चर्चा से राजद को इसलिए भी नुकसान उठाना पड़ा, क्योंकि उसके कई समर्थकों ने यह दिखाया कि यदि महागठबंधन सत्ता में आया तो कानून एवं व्यवस्था को चुनौती दी जाएगी। राजद की जो छवि लालू यादव के समय बनी, उससे वह अब भी मुक्त नहीं हो सकी है। यह छवि उसके लिए फिर से परेशानी का सबब बनी। तेजस्वी यादव से उम्मीद थी कि वह बीस साल पुरानी राजद की छवि को तोड़कर एक सार्थक और समन्वय वाली राजनीति की तरफ आगे बढ़ेंगे, पर वे ऐसा कर नहीं सके। वे अपने समर्थकों को संयमित आचरण के लिए भी समझा नहीं सके। इसी का उल्लेख करते हुए मोदी ने आगाह किया कि कट्टा वाली सरकार की वापसी नहीं होनी चाहिए।

अवधेश राजपूत

राजग की बड़ी जीत में जहां प्रधानमंत्री मोदी की सशक्त नेता की छवि काम आई, वहीं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की कुशल प्रशासक और बेदाग नेता की छवि भी एक बड़ा आधार बनी। नीतीश ने मतदाताओं के एक बड़े वर्ग को अपने पक्ष में गोलबंद किया है। इसमें सबसे प्रभावी वर्ग है महिलाओं का। मोदी की तरह नीतीश भी महिलाओं को अपने पक्ष में लाने के लिए सक्रिय हैं। अपने शासनकाल के प्रारंभ में उन्होंने स्कूली लड़कियों को साइकिल देकर महिला मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित किया, फिर उन्हें स्थानीय निकायों के साथ नौकरी में आरक्षण देने के साथ उनके हित में अन्य कई फैसले किए। इनमें एक बड़ा फैसला शराबबंदी का रहा। शराबबंदी भले ही प्रभावी ढंग से लागू न हो सकी हो, लेकिन महिलाएं उसे अपने हित में मानती हैं। बिहार में सड़कों का जो जाल बिछा है और बिजली, पानी की सुविधा बढ़ने के साथ कानून एवं व्यवस्था में जो सुधार हुआ है, उसका श्रेय नीतीश कुमार को जाता है। जदयू-भाजपा ने यह जो दिखाया कि नीतीश पहले से अधिक सक्षम और प्रभावी सरकार दे सकते हैं, उसके कारण ही राजग को प्रचंड जीत मिली। राजग के मुकाबले महागठबंधन ने जिन मुद्दों को चुनावी मुद्दा बनाया, उन्होंने सुर्खियां तो बटोरीं, लेकिन जनता ने उन्हें महत्व नहीं दिया। ऐसा ही एक मुद्दा था वोट चोरी का। चुनाव आयोग की ओर से मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर को वोट चोरी करार दिया गया। इसे लेकर राहुल एवं तेजस्वी ने वोटर अधिकार यात्रा निकाली और यह संदेश देने की कोशिश की कि चुनाव आयोग गलत काम कर रहा है। एसआइआर को सुप्रीम कोर्ट में भी चुनौती दी गई, पर विपक्ष को वहां से भी कोई राहत नहीं मिली। कांग्रेस और राजद ने जिस मुद्दे को खूब उछाला, उसकी चुनाव आते-आते हवा निकल गई, क्योंकि बिहार के लोग समझ गए कि एसआइआर एक जरूरी प्रक्रिया है।

बिहार में राजग की विजय केवल नरेन्द्र मोदी और नीतीश कुमार की कैमेस्ट्री का ही नतीजा नहीं, वह इस गठबंधन के सभी घटकों के बीच बेहतर सामंजस्य का भी परिणाम है। राजग के मुकाबले महागठबंधन अनबन और अविश्वास से ग्रस्त दिखा। इसका एक प्रमाण यह रहा कि 11 सीटों पर उसके प्रत्याशी आमने-सामने थे। इसकी तुलना में राजग ने सीट बंटवारे से लेकर चुनाव प्रचार में तालमेल दिखाया। इसके कारण भाजपा, जदयू के साथ-साथ चिराग पासवान, जीतनराम मांझी, उपेंद्र कुशवाहा के दलों ने भी बेहतर प्रदर्शन किया। पिछली बार जदयू इसलिए कमजोर साबित हुआ था, क्योंकि चिराग पासवान ने नीतीश को निशाने पर लेते हुए अलग चुनाव लड़ा था। चूंकि राजग ने प्रचंड जीत हासिल की है, इसलिए बिहार के लोगों की नीतीश सरकार से उम्मीदें कहीं अधिक बढ़ गई हैं। बिहार अभी भी एक पिछड़ा हुआ राज्य है और यहां बहुत कुछ करना बाकी है। इतनी बड़ी जीत के साथ जो सरकार बनेगी, उसे लोगों की बढ़ी हुई अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए तैयार रहना चाहिए। यह ठीक है कि धीरे-धीरे बिहार सही रास्ते पर आ गया है, लेकिन उसे पिछड़े राज्य की छवि से मुक्त होने की आवश्यकता है। बिहार के लोगों में जो मेधा है, उसका कोई सानी नहीं, पर उद्योग-धंधों के अभाव से राज्य पिछड़ गया है। अब यहां की डबल इंजन की सरकार से उम्मीद है कि वह बिहार को तेजी से विकास की ओर ले जाए।

response@jagran.com

Dainik Jagaran Page No-12

रेड जोन में पहुंचा राजधानी का वायु प्रदूषण स्तर

सबसे ज्यादा समनपुरा का 309 एक्यूआइ तो सबसे कम तारामंडल के पास 113

जागरण संवाददाता, पटना : ठंड बढ़ने के साथ शहर की हवा भी धीरे-धीरे प्रदूषित हो रही है। ठंड के कारण तापमान गिरने से वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआइ) में वृद्धि हो रही है। शनिवार को पटना का औसत एक्यूआइ 162 दर्ज किया गया, जबकि समनपुरा का बढ़कर 309 तक पहुंच गया है। इसे रेड जोन में रखा गया है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के अनुसार, राजगीर की हवा सबसे स्वच्छ रही। यहां का एक्यूआइ 88 दर्ज किया गया। दानापुर में एक्यूआइ 147, शेखपुरा में 130, तारामंडल के पास 113, मुसल्लहपुर में 138 तो राजवंशी नगर में 135 दर्ज किया गया। समनपुरा में प्रदूषण बढ़ने का मुख्य कारण निर्माण कार्य और सड़कों की ठीक से सफाई न होना, जिससे सड़क किनारे धूलकणों की मोटी परत का जमना है। मौसम विज्ञानी ने बताया कि सर्दी में तापमान कम होने से हवा ठंडी हो जाती है। ठंडी हवा गर्म हवा की तुलना में भारी होती है और नीचे आ जाती है। इससे हवा की गति कम हो जाती है और प्रदूषित तत्व हवा में ही फंसे रह जाते हैं। सर्दियों में हवा में नमी कम होती है। नमी प्रदूषित कणों को आपस में चिपकाने और जमीन पर गिरने में मदद करती है, लेकिन जब नमी कम होती है तो प्रदूषक कण हवा में तैरते हैं।

रेलवे स्टेशन के पास छाई धुंध। सबसे कम दृश्यता आठ सौ मीटर पूर्णिया में दर्ज हुआ ● जागरण

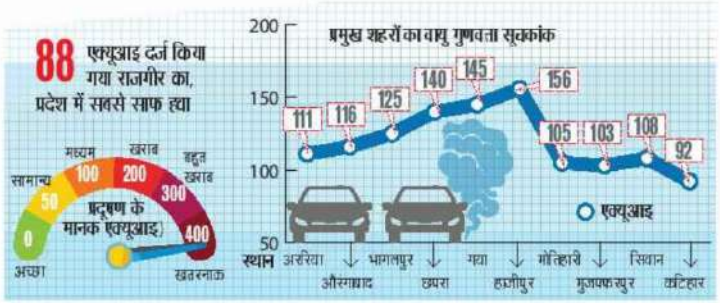

पछुआ के प्रभाव से लुढ़का तापमान

जागरण संवाददाता, पटना : प्रदेश के अधिसंख्य भागों में कोहरे छाए रहने के साथ पछुआ के कारण मौसम शुष्क बना रहेगा। सुबह-शाम गुलाबी ठंड का प्रभाव रहेगा। मौसम विज्ञान केंद्र पटना के अनुसार, चार से पांच दिनों के दौरान तापमान में विशेष गिरावट की संभावना नहीं है। तापमान में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। शनिवार को पटना सहित 14 जिलों के अधिकतम तापमान में गिरावट दर्ज की गई। पटना का अधिकतम तापमान 27.3 डिग्री सेल्सियस एवं 30.2 डिग्री सेल्सियस के साथ अररिया के फारबिसगंज में सर्वाधिक तापमान दर्ज किया गया। पटना व आसपास इलाकों में पछुआ के कारण मौसम शुष्क बने होने के साथ सुबह-शाम हल्की ठंड का असर बना रहा। कुछ स्थानों पर हल्के स्तर का कोहरा छाए रहा। सबसे कम दृश्यता आठ सौ मीटर पूर्णिया में दर्ज हुआ। शनिवार को पटना सहित 12 जिलों के न्यूनतम तापमान में वृद्धि दर्ज की गई। मौसम विभाग के अनुसार दिसंबर से प्रदेश में पश्चिमी विक्षोभ के कारण तापमान में भारी गिरावट आने के साथ कड़ाके की ठंड पड़ेगी।

Dainik Jagaran Page No-5

अमेरिका की योजना • यूएन में इस पर वोटिंग कल

गाजा दो हिस्सों में बंटेगा; ग्रीन जोन में निर्माण, रेड जोन खंडहर ही रहेगा

भास्कर न्यूज | राफेह/वॉशिंगटन

गाजा को लेकर अमेरिका की नई सैन्य प्लानिंग पर विवाद खड़ा हो गया है। अमेरिका ने गाजा को 2 हिस्सों (ग्रीन और रेड जोन) में बांटने का प्रस्ताव तैयार किया है। ग्रीन जोन में इजराइली और अंतरराष्ट्रीय सैनिकों की मौजूदगी में कंस्ट्रक्शन शुरू किया जाएगा, जबकि रेड जोन को फिलहाल खंडहर की स्थिति में ही छोड़ने की बात कही गई है। यह पूरी योजना उसी इजराइल-नियंत्रित 'येलो लाइन' पर आधारित है, जिसने युद्ध के दौरान गाजा को दो हिस्सों में बांटा था। अमेरिका के इस प्रस्ताव पर सोमवार को संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में इस योजना पर वोटिंग होगी।

अमेरिकी येलो लाइन से बंटवारा

Dainik Bhaskar Page No-17

घुटन, घुटना और घोटाला

अपने साहित्यिक-सांस्कृतिक कलेवर के लिए प्रसिद्ध हिंदुस्तान टाइम्स समूह की हिंदी भाषा की विशिष्ट मासिक पत्रिका 'कादम्बिनी' का साठ वर्षों से अधिक का गौरवशाली इतिहास रहा है। इस यशस्वी परंपरा को पुनः आपके सामने हिंदुस्तान के फीचर परिशिष्ट के अंतर्गत 'कादम्बिनी' नाम से आरंभ किया गया है। इसमें हम पत्रिका के पुराने अंकों की सामग्री देते हैं, ताकि पुराने दौर की 'कादम्बिनी' की झलक आज के नए पाठक भी पा सकें। इस पृष्ठ की सारी सामग्री कादम्बिनी दिसंबर, 2002 अंक से ली गई है।

व्यंग्य

कृष्ण गोपाल सिन्हा

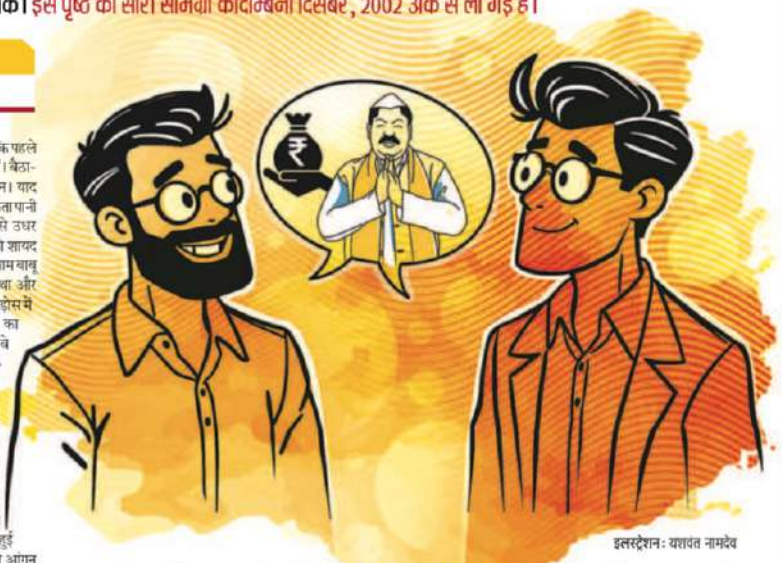

इलस्ट्रेशनः यशवंत नामदेव

कल घंटाघर से लौटकर घर बैठा ही था कि पहले से घिरती घटाएं और घनघोर होने लगीं। बैठा-बैठा याद करने लगा अपना बचपन। याद आया बरसातू काका के छप्पर से टपकता पानी और पानी से बचने के लिए इधर से उधर खिसकती उनकी खटिया। बादल को शायद किसी का इंतजार था। इस बीच घनश्याम बाबू मेरे यहां आ टपके। उनका टपकना था और बादलों का जमकर बरसना था। मेरे पड़ोस में दो-चार घर छोड़ घनश्याम बाबू का पुश्तैनी निवास है। मेरे लिए आज भी वे एक बहुत अच्छे पड़ोसी हैं। सुख-दुख, वक्त-बेवक्त हम दोनों एक-दूसरे के साथ होते हैं, तो मुहल्ले वालों को बड़ा अटपटा लगता है। हमारी इस साथ की बुनियाद कोई तीस साल पुरानी है। तीस साल का अरसा कम नहीं होता। दूसरी पीढ़ी पल-बढ़ कर, पढ़-लिख कर रोजगार नौजवान का रुतबा हासिल कर लेती है। अपनी जन्म कुंडली के अनुसार मंगली नहीं हुई व समय से सब कुछ सामान्य रहा, तो आंगन में तीसरी पीढ़ी की किलकारियां सुनाई देने की पूरी गारंटी ली जा सकती है।

मेरा और घनश्याम बाबू का रिश्ता पड़ोसी और दोस्ती दोनों का ही है। अपने इसी दोस्ती के बूते पर उनका चरित्र-चित्रण करना अपना हक मानता हूं। आप इतना समझ लें कि मेरे मित्र बहुत ही समझदार व भले-बुरे की पहचान करने में माहिर हैं। वे वक्त की नजाकत को नजरअंदाज होने से पहले ही अपनी आंखों से जकड़ लेने में उस्ताद व बिना किसी कागज, कैल्कुलेटर और कंप्यूटर के ही नफा-नुकसान का बैलेंस शीट तैयार करने में निपुण भी हैं। वैसे और भी कई अच्छाइयां उनमें हैं, पर मुझे ये जगजाहिर करने में किसी प्रकार का संकोच नहीं है कि घनश्याम बाबू अव्वल दर्जे के घाघ किस्म के इंसान हैं। मेरी जानकारी के अनुसार उनके इन गुणों के बारे में मेरे सिवा कोई नहीं जानता, चाहे वे घर के लोग हों या घरवाली, पड़ोसी या रिश्तेदार, मातहत हों या अफसर।

डरता हूं कि कहीं आप मेरे कथन को लालू-चालीसा की तरह घनश्याम-चालीसा समझने की भूल न कर बैठें। चलिए छोड़िए, बात कर रहा था अपने मित्र की। हम दोनों घनघोर बारिश को घूर रहे थे। अपने घूरने की क्रिया में बिना व्यवधान डाले मैंने कहा, 'घनश्याम बाबू, मानसून के देर से ही सही आने से कितनी राहत महसूस हो रही है।'

घनश्याम बाबू मुसकराए, बोले, 'समय से अब होता ही क्या है। अब तो समय से पहले ही या समय के बाद ही कुछ घटता है। रही राहत की बात तो दिल से दिल को राहत कहां मिलती है। अब तो बाढ़, सूखे, भूकंप से राहत मिलती है, किसे मिलती है यह बात और है।'

मैंने सिर हिला कर सहमति व्यक्त करते हुए कहा, 'मेरा आशय गरमी से, तपन से, घुटन से राहत को लेकर है।'

घनश्याम बाबू ने एक लंबी सांस ली, कहने लगे, 'गरमी-जाड़ा-बरसात तो कुदरत का खेल है, पर इस कुदरत के खेल पर भी लोग सट्टे खेलते हैं। सुना है, नाली चलेगी या नहीं चलेगी, इस पर भी लाखों के वारे-न्यारे हो जाते हैं। आप जिस घुटन की बात कर रहे हैं उसकी पूछिए मत। पहले तो घुट-घुट कर उन्हें आहें भरनी पड़ती थीं, जो किसी के प्यार-मुहब्बत में मुब्तिला होकर रुसवाई में जीते-मरते थे, पर आज घुटन ही घुटन है। घर में, दफ्तर में, सफर में, पॉलिटिक्स में...।'

मेरे मुंह से 'पॉलिटिक्स में...' ही निकल पाया था कि लगा वे मुझे दबोच लेंगे। कहने लगे, 'टिकट कटे तो घुटन, हारे तो घुटन, सरकार में हिस्सेदार हो तो घुटन, बोले तो घुटन, चुप रहे तो घुटन, गोया इतनी घुटन तो सारी कायनात में भी नहीं होगी। सरकार में रहते किसी घोटाले में नाम आए तो घुटन, न आए तो बीबी-बच्चों के तानों की घुटन, यह तो उनसे पूछो जिन पर बीतती है। आप ही बताएं कि जनादेश न मिलने पर भी, सरकार बनाने के लिए समर्थन देने की मजबूरी हो या फिर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में मतदाताओं द्वारा सर-माथे पर बिठाए जाने के बावजूद नंबर गेम में फिसड्डी रह जाने की बेचारगी हो, क्या कम घुटन होती होगी।'

कैसी विडंबना है कि हार कर भी घुटना टेके और जीत कर भी घुटना टेके। सरकार बनाने की कवाइद गुंजाइश नहीं, फिर भी हालात ऐसे पैदा कर दिए जाएं कि बनानी ही पड़े और कभी-कभी तो बनने वाली सरकार भी आने से पहले ही प्रस्थान की तैयारी कर ले, तो इसे क्या आप करें-करावे पर पानी फिर जाने से होने वाली घुटन नहीं कहेंगे। घनश्याम बाबू के घुटन भरे स्वर ने मुझे खामोश रहने को मजबूर कर दिया। उन्होंने मेरी ओर देखा और खामोशी ने उन्हें अपनी बात जारी रखने के लिए प्रेरित किया। बोले, 'मित्र, मेरी बातों को गंभीरता से लेने के लिए यदि आप तैयार हैं, तो समझ लें कि घुटन बढ़ने के भी ठोस कारण हैं। समझने की बात यह है कि घटनाओं-दुर्घटनाओं में प्रतिशत की दर से बढ़ोतरी नहीं, बल्कि यह कई गुना बढ़ गई है।'

घनश्याम बाबू की बातें मेरे सर से दो-चार बालिश्त ऊपर से निकल रही थीं। घबराकर पूछ बैठा, 'आप कैसी घटनाओं की बात कर रहे हैं।' संभवतः बहुत देर से उन्हें मेरे किसी प्रश्न की प्रतीक्षा थी। प्रश्न के बाद मैं ठीक तरह से सांस के नहीं ले पाया था कि घनश्याम बाबू फिर शुरू गए, 'अरे भाई घटनाओं, दुर्घटनाओं के घटने का सवाल ही नहीं उठता। हमारे बहुजातीय, बहुदलीय, बहुभाषीय समाज में भांति-भांति की सोच और धंधे वाले लोग रहते हैं। भारत एक विकासशील देश है, जनसंख्या है, बाजार है, सड़कें हैं, रेल है, मोटरगाड़ी हैं, सैकड़ों साल पुराने पुल हैं। कभी-कभार कुछ एक अच्छाइयां घट भी जाती हैं, तो बार-बार बुरा ही घटता है और जो अच्छे या बुरे हैं, वे उस घटनास्थल पर जाकर अक्सर घड़ियाली आंसू बहाने से बाज नहीं आते।'

घनश्याम बाबू की साफगोई का तो मैं पहले से ही कायल रहा हूं। आज उस पर कुछ और परतें चढ़ती जा रही थीं। इन परतों को थोड़ी और मोटी करने की गरज से मैंने कहा, 'कितने अफसोस की बात है कि जिन लोगों को असलियत का पता होना चाहिए वे आंखें मूंदे पड़े हैं।' मित्र ने मेरी अज्ञानता दूर करने का प्रयास किया, 'आप भी कमाल की बात करते हैं। आंखें बंद करने से कहीं घपलों और घोटालों की घटना-ओं का न घटना क्या आपके बस में होगा। आप क्या सोचते हैं, हमारे देश में घोटालों पर घोटाला, एक के बाद दूसरा, एक से बढ़ा दूसरा, क्या किसी ऐरे-गैरे के बस की बात है। खैर, आप को कुछ लगे या न लगे मुझे तो साफ लगने लगा है कि झूठ, फरेब, धोखा, भ्रष्टाचार, खुदगरजी हम लोगों को घुट्टी में पिला दिया गया है और इसमें भी लगता है कि आईएसआई वालों का हाथ हो सकता है। वरना, बुरी बातों की कोई तो हद होती होगी। लोग समझते हैं कि बड़े देश में घोटाले भी तो बड़े होने चाहिए।'

वैसे आम आदमी से मुझे मेरा घुटना भी याद आ रहा है। आप भी याद करिए, बच्चे पहले घुटने के बल चलते थे, पर अब डायरेक्ट वे पइयां-पइयां चलने लगते हैं, इसीलिए तो घुटने में अब वह दम नहीं रहा जो पहले होता था। मेरी ये बातें शायद घनश्याम बाबू को अच्छी लग रही थीं। मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर वे कहने लगे, 'भई उन घुटनों के बारे में भी तो सोचो, जो लाचारियों और मजबूरियों में केवल टेके जाने के काम आते हैं। रही बात दो-चार बिरले और मजबूत घुटनों की, तो वे लाखों कमजोरियों के होते भी टेके जाने को तैयार नहीं होते। मैंने आज तक कभी किसी के सामने घुटने नहीं टेके। मेरे घुटनों में न कोई दर्द है न कोई परेशानी। मैं चाहता हूं कि मेरे घुटनों की तरह देश के सारे घुटने इस काबिल हों कि वे बिना किसी कमजोरी से समझौता किए अपनी चाल को और अधिक गति दें।'

इतना कहकर घनश्याम बाबू बड़ी फुर्ती से खड़े हो गए, 'बरसात रुक गई है, अब मुझे चलने की अनुमति दीजिए वरना अगर बारिश फिर होने लगी, तो निकलना मुश्किल हो जाएगा।' मैं मित्र को वैसे भी मुश्किल में नहीं डालना चाहता था। मेरी सहमति से घनश्याम बाबू ने प्रस्थान किया और मैं बैठकर घुटन, घुटना और घोटाले के बारे में घनश्याम बाबू की बातों पर गहराई से मनन करने लगा।

सरकार में रहते किसी घोटाले में नाम आए तो घुटन, न आए तो बीबी-बच्चों के तानों की घुटन। यह तो उनसे पूछो जिन पर बीतती है। आप ही बताएं कि जनादेश न मिलने पर भी, सरकार बनाने के लिए समर्थन देने की मजबूरी हो या फिर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में मतदाताओं द्वारा सर-माथे पर बिठाये जाने के बावजूद नंबर गेम में फिसड्डी रह जाने की बेचारगी हो, क्या कम घुटन होती होगी।

रहिमन धागा प्रेम का

रहीम मध्यकालीन सामंतवादी संस्कृति के कवि थे। इनका व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न था। वे एक ही साथ सेनापति, प्रशासक, आश्रयदाता, दानवीर, कूटनीतिज्ञ, कलाप्रेमी, कवि और विद्वान थे। ये भारतीय सामासिक संस्कृति के अनन्य आराधक थे। उनके बारे में कुछ रोचक जानकारी जानिए डॉ. दर्शन सेठी से

लाहौर में जन्मे रहीम के पिता बैरम खां तेरह वर्षीय अकबर के अतालीक और अभिभावक थे और खान-ए-खाना की उपाधि से सम्मानित थे। जब रहीम पांच वर्ष के थे, तब इनके पिता बैरम खां की हत्या कर दी गई, इसलिए रहीम का पालन-पोषण अकबर ने अपने धर्म-पुत्र की तरह किया। शाही खानदान की परंपरानुरूप रहीम को 'मिर्जा खां' का खिताब दिया गया। रहीम ने बाबा जंबूर की देख-रेख में गहन अध्ययन किया। शिक्षा समाप्त होनेपर अकबर ने अपनी धाय की बेटी माहबानो से रहीम की शादी कर दी। इसके बाद रहीम ने गुजरात, कुंभलनेर, उदयपुर आदि यद्धों में विजय प्राप्त की। इस पर अकबर ने अपने समय की सर्वोच्च उपाधि 'मीरअर्ज' से रहीम को विभूषित किया। इसके बाद सन् 1584 में अकबर ने रहीम को खान-ए-खाना की उपाधि से सम्मानित किया।

दरअसल, रहीम तुर्की, अरबी, फारसी, संस्कृत तथा हिंदी के कुशल कवि थे। वे जन्मजात प्रतिभा-संपन्न कवि थे। जीवन का उन्हें अत्यधिक क्रियात्मक अनुभव था। रहीम कवियों में कल्पतरु, याचकों के कर्ण तथा गुणीजनों के भोज थे। विरोध गुणों का सराहनीय समन्वय एवं संतुलन उनके व्यक्तित्व का सहज अंग था। सेनापति की कठोरता और कवि की कोमलता का उनके व्यक्तित्व में स्तुत्य सामंजस्य था। कलाकार की कल्पना प्रवणता तथा प्रशासकों की यथार्थवादी दृष्टि उन्हें प्राप्त थी।

कलियुग के कर्ण

दानशीलता में रहीम कलियुग के कर्ण थे। दान, रहीम के जीवन का सहज स्वभाव था। रहीम दान को जीवन का आधार मानते थे-

तब ही लौं जीबो भलो, दीबो होय न धीम।
बिन दीबो जगत, हमें न रुचै रहीम ॥

रहीम शरणागत के रक्षक थे। उनका यह गुण विश्वविख्यात था। 'मआसिरे-रहीमी' में रहीम के इन गुणों का विस्तृत वर्णन भी हुआ है। रहीम सभी भाषाओं को समान रूप से प्रेम करते थे। हिंदी कवि गंग को रहीम ने एक छप्पय छंद पर प्रसन्न होकर 36 लाख रुपये पुरस्कार में दिए थे।

वह छंद इस प्रकार है- *चकित भंवर रहि गयो, गमन नाहि करत कमल वन। अहि फन मनि नहिं लेत, तेज नहिं बहुत पवन धन।।*

यही नहीं, रहीम दानशील होते हुए भी विनयशील थे। कवि गंग ने उनकी अपूर्व दानशीलता के संबंध में यह दोहा लिखकर भेजा था- *सीखे कहां नवाबजू, ऐसी दैनी दैन।*
ज्यों-ज्यों कर ऊंचो करो, त्यों-त्यों नीचे नैन ॥

रहीम ने इसका उत्तर इस प्रकार दिया था

देनहार कोउ और है, भेजत सो दिन-रैन।
लोग भरम हम पर धरें, यातें नीचे नैन ।।

रहीम के व्यक्तित्व में दानशीलता और विनयशीलता का मणिकांचन संयोग था। इस संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का यह कथन सत्कार के योग्य है, जिसके अनुसार- 'इनकी (रहीम की) दानशीलता हृदय की सच्ची प्रेरणा के रूप में थी। कीर्ति की कामना से उसका कोई संपर्क न था।'

रहीम तुर्की, अरबी, फारसी, संस्कृत तथा हिंदी के कुशल कवि थे। वे जन्मजात प्रतिभा-संपन्न कवि थे। रहीम कवियों में कल्पतरु, याचकों के कर्ण तथा गुणीजनों के भोज थे।

अनाथों के नाथ

रहीम अनाथों के नाथ भी थे। अन्य अनेक कवियों के आश्रयदाता थे। रहीम की दानशीलता के साथ उनकी अपूर्व काव्य प्रतिभा के भी दर्शन होते हैं। एक प्रसिद्ध घटना है कि एक दरिद्र ब्राह्मण अपनी कन्या के विवाह के लिए तुलसीदास के पास सहायता के लिए आया। तुलसीदासजी ने यह पंक्ति लिखकर उसे रहीम के पास भेज दिया-

सुर-तिय नर-तिय नाग-तिय,
यह चाहत सब कोय।

रहीम ने ब्राह्मण की इच्छा पूर्ण की और साथ ही तुलसीदासजी को इन शब्दों में सम्मान दिया-

गोद लिये हुलसी फिरें तुलसी सो सुत होय ॥

तुलसीदास ने जो प्रशंसा रहीम की की थी, रहीम ने इस पंक्ति द्वारा वही प्रशंसा तुलसीदास की कर दी। रहीम के असाधारण व्यक्तित्व के संबंध में कुछ जनश्रुतियां अत्यधिक प्रख्यात हैं। उनमें से एक यहां प्रस्तुत है-जिन दिनों रहीम मुगल साम्राज्य के वकील मुतलक थे, उन दिनों एक बार सेना के पैदल सैनिकों का वेतन बंटवा रहे थे, तो भूल से एक सैनिक के नाम के आगे दाम के स्थान पर तनका लिखा गया। तनका उस समय चांदी का सिक्का होता था और उसका मूल्य चालीस दाम के बराबर होता था। इस प्रकार एक हजार दाम अर्थात पच्चीस रुपये के स्थान पर एक हजार रुपया हो गया।

जब रहीम का ध्यान इस भूल की ओर दिलाया गया, तो उन्होंने कहा कि इस सैनिक के भाग्य में इतना ही लेना लिखा था। अतः उसे उतना ही दे दिया जाए। इस घटना से रहीम की उदारता तथा भाग्य के प्रति असीम आस्था का बोध होता है।

गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित यशपाल जैन ने संस्मरण लेखन में खूब ख्याति पाई। इसके अलावा कहानी, कविता, निबंध, डायरी, पत्र-लेखन और आत्म वृत्तांत जैसी विधाओं से भी हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। 'अजंता एलोरा', 'अहिंसा', 'अचूक शस्त्र' आदि इनकी उल्लेखनीय कृतियां हैं। पद्मश्री और सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध कवि-कथाकार यशपाल जैन के यात्रा-संस्मरण 'उत्तराखंड के पथ पर' से संपादित अंश...

केदारनाथ की ओर बढ़े हमारे कदम

इलस्ट्रेशन : यशवंत नामदेव

अद्भुत यात्रा संस्मरण-37

यशपाल जैन

जन्म : 01 सितंबर, 1912, निधन : 10 अक्टूबर, 2000

रात को नींद बहुत कम आई। सवेरे जल्दी उठकर चलना चाहते थे, इसलिए बार-बार आंख खुल जाती थी कि कहीं देर न हो जाए। उधर अलकनंदा का अनवरत शोर नींद में खलल डाल रहा था। इन सब विघ्न-बाधाओं के अतिरिक्त थोड़ी-सी परेशानी बोझियों की ओर से भी हो रही थी। हम लोगों ने सारा सामान देवप्रयाग में तुलवा लिया था और वहीं से चार बोझी साथ ले लिए थे। अस्सी रुपये मन के हिसाब से पर्ची भी कटवा ली थी, लेकिन बोझियों का अंदाज था कि सामान के जितने वजन की पर्ची कटी है, उससे वह कुछ ज्यादा है। इससे वे अनमने-से दीख रहे थे।

उनका मेट वीर बहादुर बड़ा भला लड़का था। असल में बात यह थी कि बोझी उसके नियंत्रण में नहीं थे। जो हो, रात को ही एक और बोझी तय कर लिया गया था। विजय के लिए एक कंडी भी कर ली गई थी, लेकिन सोते समय मेट ने बताया कि कंडी नहीं है और वह बालक को पीठ पर कपड़े से बांधकर ले जाएगा।

सवेरे चार बजे उठे। चारों ओर अंधकार का राज था। हम लोग झटपट निवृत्त हुए। दर्जनों सीढ़ियां पार करके जब संगम में हाथ-मुंह धोने पहुंचे, तो वहां के दृश्य को देखकर मन सिहर उठा। अधिकांश यात्री उठ गए थे और चलने की जल्दी में थे। रात्रि की नीरवता को भंग करता हुआ उनका कोलाहल अलकनंदा और मंदाकिनी के स्वर को और भी प्रखर बना रहा था। अनेक यात्री इतने तड़के संगम में नहा रहे थे। पानी इतना ठंडा था कि छूते ही फुरफुरी आती थी। यात्रियों को उसी शीतल जल में स्नान करते देखकर मन में विचार आया कि वास्तव में श्रद्धा बहुत बड़ी चीज है। वही तो दुर्बल तथा क्षीणकाय व्यक्तियों तक को जाने कहां-कहां से खींचकर इस दुर्गम यात्रा पर आने का साहस प्रदान करती है। डेरे पर लौटकर हम लोगों ने अपने साथ ले जानेवाला सामान अलग किया। झोले में मौके-बेमौके के लिए अमृतधारा आदि औषधियां रखीं। मिश्री, लौंग, इलायची डाली। एक गिलास और तौलिया रखा। कुछ कागज, डायरी और एक-दो किताबें। झोले के अतिरिक्त पानी की बोतल, कैमरा, लाठी आदि लिए। चप्पलों को छुट्टी दी, कैनवास का जूता पहना। यह सब सामान अलग करके बिस्तर बांध दिए। सारा सामान इकट्ठा करके बोझियों को सौंपा और हम लोग जलपान करने चले गए। अनुभवियों ने बताया था कि इस यात्रा में चाय का प्रयोग अधिक-से-अधिक करना चाहिए। कच्चा पानी कम पीना चाहिए। एक गिलास चाय ली, कुछ बिस्कुट खाए और चलने के लिए सारी टोली तैयार हो गई। सुबह 05.25 पर रवाना हुए।

पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि केदारनाथ की यात्रा बहुत कठिन है। बद्रीनाथ की अपेक्षाकृत सरल है। हम लोग दिल्ली से यह सोचकर चले थे कि पहले बद्रीनाथ जाएंगे और यदि शक्ति बची, तो फिर केदारनाथ के दर्शन कर लेंगे, लेकिन बाद में इरादा बदल गया। सोचा कि पहले कठिन यात्रा कर लेनी चाहिए, जिससे सुगम यात्रा के लिए प्रेरणा और साहस बना रहे। इसी निश्चय से हम लोगों की टोली केदारनाथ की ओर बढ़ी।

रुद्रप्रयाग पर अलकनंदा से विछोह हो गया। देवप्रयाग से वह बराबर साथ रहकर हम लोगों का मनोरंजन करती आई थी। अब मंदाकिनी की बारी थी। उसी के किनारे-किनारे हमारी टोली आगे बढ़ी। पैदल चलने में वैसे ही बड़ा आनंद आता है। शांति के साथ कदम आगे बढ़ते जाते हैं। यहां तो मन यह सोचकर और भी प्रसन्न हो रहा था कि हम लोग एक बड़ी यात्रा करने जा रहे थे।

हरेक के कंधे पर एक-एक झोला और पानी की बोतल थी। हाथ में लाठी लिए यात्रियों के कंठों से निकले 'केदारनाथ की जय', 'बद्री विशाल की जय' आदि के उद्घोष से सारा वायुमंडल बीच-बीच में मधुर हो उठता था। हम लोग भी जब-तब उस स्वर में अपना स्वर मिला देते थे। आज की यात्रा में हमें लगभग ग्यारह मील चलकर अगस्त्य मुनि चट्टी पर पड़ाव डालना था।

दिन का प्रकाश फूटा, तो ऐसा प्रतीत हुआ, मानो सामने कोई नई दुनिया है। आगे-पीछे चारों ओर पर्वत मालाएं थीं। इनके बीच पुण्य-सलिला मंदाकिनी मंथर गति से प्रवाहित हो रही थी। पर्वत की हरियाली मन पर जादू कर रही थी। लाठी टेकते-टेकते हम लोग नए लोक में, अपरिचित पथ पर, आगे बढ़ते जा रहे थे। बस में यात्रा करते समय बार-बार आशंका होती थी कि कहीं किसी की तबीयत न बिगड़ जाए। अब वैसा कोई डर नहीं था। सब कुछ जैसे भगवान को सौंपकर हम लोग निश्चिंत हो गए थे।

आगे बढ़ने पर बहुत-से यात्री साथ हो गए। सब एक ही पथ के पथिक थे। जरा-सी देर में कई-एक से परिचय हो गया। उस यात्री-दल में बिहार, राजस्थान, गुजरात, बंगाल आदि अनेक प्रदेशों के यात्री थे।

पांच मील पर पहली चट्टी आई छतौली। बड़ी सुंदर जगह थी वह। हम लोगों ने चलते समय निश्चय किया था कि कोई तेज चले या धीमे, लेकिन छतौली पर सब इकट्ठे हो जाएं, तब आगे बढ़ें। पहले पहुंचकर हम लोग वहां रुक गए और टोली के शेष लोगों के आने की राह देखने लगे। इन यात्राओं में चट्टियां बहुत बड़ा वरदान हैं। चट्टी पड़ाव को कहते हैं। वहां ठहरने के लिए कुछ मकान और सामान के लिए चंद दुकानें होती हैं। यात्री इन चट्टियों में विश्राम लेते हैं और रात्रिवास करते हैं। यदि ये चट्टियां न होतीं, तो बिरले ही इन यात्राओं को कर सकते।

छतौली चट्टी पर हम सब इकट्ठे हुए। कैमरा निकालकर टोली का चित्र खींचा। इस चट्टी पर दूध मिल गया, पिया। कुछ नाश्ता किया और आगे बढ़े। इस यात्रा में कुछ तो पैदल चलने और कुछ जलवायु अच्छी होने के कारण भूख खूब लगती है। यात्रियों को चाहिए कि वे खाने में असंयम न करें, अन्यथा तबीयत खराब हो जाने का डर रहता है। दूसरे, यात्रा में प्यास बहुत लगती है। अपने पास पानी की व्यवस्था रखनी चाहिए। यदि आवश्यकता पड़े, तो पी.डब्ल्यू.डी. के नल से पानी लेना चाहिए। यदि वह सुलभ न हो, तो झरने के पानी को थोड़ी देर रखकर और छानकर पीना चाहिए। पानी में पत्थर के छोटे-छोटे कण होते हैं, वे पेट को नुकसान पहुंचाते हैं। हमें यह बात पहले ही से मालूम थी, इसलिए हमारी टोली के प्रत्येक यात्री के कंधे पर पानी की बोतल थी।

दिन का प्रकाश फूटा, तो ऐसा प्रतीत हुआ, मानो सामने कोई नई दुनिया है। आगे-पीछे चारों और पर्वत मालाएं थीं। इनके बीच पुण्य-सलिला मंदाकिनी मंथर गति से प्रवाहित हो रही थी। पर्वत की हरियाली मन पर जादू कर रही थी।

छतौली के बाद एक मील पर तिलवाड़ा और वहां से दो मील पर रामपुर चट्टी आई। आगे के लिए बस की सड़क तैयार हो रही है, इसलिए काम करते बहुत-से मजदूर यहां मिले। वे बड़े परिश्रम से चट्टानें तोड़कर रास्ता बना रहे थे। पत्थरों से कइयों का शरीर लहूलुहान हो गया था। एक का पैर सूजा था। हमें देखकर उसने दवा मांगी। विष्णु भाई (विष्णु प्रभाकर) ने अपना थैला खोलकर उसके पैर पर टिंचर लगाया। आगे चलकर मालूम हुआ कि सुरंग से एक मजदूर का सारा शरीर रक्तरंजित हो गया था। पता नहीं, बचा होगा या नहीं। जहां-जहां काम लगा है, वहां समुचित उपचार की व्यवस्था अवश्य रहनी चाहिए।

रामपुर पहुंचते-पहुंचते धूप बहुत तेज हो गई, इतनी कि जी हैरान होने लगा। अनभ्यस्त होने के कारण जूते पैरों को काटने और परेशान करने लगे, पर कोई चारा ही नहीं था। पहले सोचा कि रामपुर में रुककर बाकी के लोगों को आ जाने दें, लेकिन फिर विचार आया कि आखिर अगस्त्य मुनि चट्टी तो पहुंचना ही है। रुकने से और भी दिक्कत होगी। अंततः चलते चले।

मंदाकिनी साथ चल रही थी। वह भांति-भांति के दृश्य उपस्थित करके अब तक हम लोगों का मन हरती रही थी, लेकिन इस समय तो धूप के मारे बेहाल हो रहे थे और एक ही बात की धुन थी कि कैसे ही, जल्दी-से-जल्दी पड़ाव पर पहुंचें और आराम करें।

(साभार : 'उत्तराखंड के पथ पर', सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली से संपादित अंश)

वो लम्हा

आर ए बटलर
ब्रिटिश राजनेता

यदि तेज हो दिमाग तो सब कुछ संभव

बच्चे का दिल बैठ गया, वह रो पड़ा। हाथ टूटने पर वह उतना नहीं रोया था, पर जब उसने सुना कि यह हाथ फिर पहले जैसा नहीं हो पाएगा, तो वह फूट-फूटकर रोने लगा। आंसू रुकते नहीं थे। दायां हाथ तो सबसे जरूरी है, अगर यही ठीक नहीं होगा, तो जीवन कैसे बीतेगा?

वह गुलामी का दौर था, पर भारत कटक से अटक तक अखंड था। जितना खूबसूरत उत्कल भूमि का कटक था, उससे कहीं ज्यादा पंजाब का अटक था। अटक की उस दिलकश हरी-भरी बस्ती में अनेक ब्रिटिश परिवार रहते थे। उन्हीं ब्रिटिश परिवारों में एक प्यारा-सा बच्चा हंसी-खुशी बड़ा हो रहा था। उसके पिता भारतीयता का सम्मान करने वाले ईमानदार अधिकारी थे। खैर, वह ऐसा दौर था, जब मोटर वाहन नहीं थे, तो बचपन में ही घुड़सवारी सिखा दी जाती थी। खासकर सेना व प्रशासन से जुड़े लोग या उनके परिवार वाले तो हर हाल में घुड़सवारी सीखते थे कि पता नहीं, कब जरूरत पड़ जाए, तो वह बच्चा भी बहुत हंसते-खिलखिलाते हुए घुड़सवारी सीख रहा था।

सब कुछ ठीक ही चल रहा था। देखने से लगता था कि बच्चा जल्दी ही घोड़े पर नियंत्रण सीख जाएगा, पर उस दिन इधर घोड़े वाले की नजर हटी और उधर घोड़ा किसी चीज को देख बिदक गया। इतने में बच्चा घबराकर घोड़े से नीचे आ गिरा। गिरने का पूरा भार दायें हाथ पर पड़ा और हाथ ऐसे मुड़ा कि हिलाना भी मुश्किल हो गया। ऊपर से लापरवाही हुई कि उस मुड़े हुए हाथ को सीधा करने की गलत कोशिश की गई। समस्या और बढ़ गई। बाद में डॉक्टरों ने बताया कि दायां हाथ एकाधिक जगह टूट गया है। लापरवाही यहीं नहीं थमी, एक दिन उसी टूटे हाथ पर गर्म पानी की बोतल लुढ़क गई। फिर तो हाथ की ऐसी दुर्गति हुई कि डॉक्टरों ने भी बता दिया कि अब वह हाथ कभी पूरी तरह से ठीक नहीं होगा। इतना सुनना था कि बच्चे का दिल बैठ गया, वह रो पड़ा। हाथ टूटने पर वह उतना नहीं रोया था, पर जब उसने सुना कि यह हाथ फिर पहले जैसा नहीं हो पाएगा, तो वह फूट-फूटकर रोने लगा। आंसू रुकते नहीं थे। दायां हाथ तो सबसे जरूरी होता है, अगर यही ठीक नहीं होगा, तो मैं क्या-कैसे करूंगा?

वैसे भी, उस दौर में शारीरिक सुघड़ता अनिवार्य थी, दिव्यांगों या अपंगों के साथ कोई भी बेहतर व्यवहार नहीं करता था। क्या उसकी जिंदगी भी हाशिये पर चली जाएगी? क्या उसे भी किसी न किसी के रहमो-करम पर रहना पड़ेगा? तब मानो, चमत्कार हुआ था, निराशा की गहरी खाई में फंसे बालक तक उसकी दादी की मीठी डांट संजीवनी-सी पहुंची थी- तुम्हारा एक हाथ ठीक नहीं, तो क्या हुआ? दिमाग तो दुरुस्त है। हाथ से नहीं, दिमाग से जीना शुरू करो। अपने दिमाग को विकसित करो और उसी से अपनी आगे की जिंदगी सजाओ।

बालक को यह बात जंच गई। उसने महसूस किया कि वाकई दुनिया में भगवान ने हाथ-पैर लगभग सबको दिए हैं, पर तेज दिमाग तो कम ही लोगों को नसीब होता है। लगे हाथ, शिक्षा और विज्ञान ने यह सुविधा भी दे दी है कि कोई भी व्यक्ति अपने दिमाग को अध्ययन एवं अभ्यास से तेज बना सकता है।

फिर क्या था? वह बालक अपने बौद्धिक विकास में दिलो-जान से लग गया। अच्छी पढ़ाई के लिए गुलाम भारत को छोड़कर इंग्लैंड चला गया। शुरुआत में ज्यादा सफलता नहीं मिली, पर कुछ ही समय में सब उसकी बुद्धि का लोहा मानने लगे। लोग इस बात को भूलने लगे कि इस युवा का दायां हाथ ठीक नहीं है।

दिमाग विकसित हुआ, तो उस युवा ने फैसला लिया कि राजनीति में जाना चाहिए। एक राजनेता ज्यादा प्रभावशाली होता है। महज 27 की उम्र में वह इंग्लैंड में सांसद चुने गए, और आर ए बटलर के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनकी तीक्ष्ण बुद्धि ने उन्हें शिखर पर ले जाना शुरू किया। वह ब्रिटिश शासन के तहत भारत भी आए। उन्हें भारत से बहुत प्रेम था। ब्रिटेन में कुछ गिने-चुने नेता ही थे, जो चाहते थे कि भारत के विभिन्न प्रांतों में लोग अपनी सरकार स्वयं चुनें और भारतीयों से जुड़ा हर फैसला ब्रिटिश शासन न करे। यह भारत में लोकतंत्र की नई नींव थी। उनके प्रयासों से ही भारत अधिनियम 1935 पारित हुआ। इसके लिए वह चर्चिल जैसे भारत विरोधी ब्रिटिश नेता से भी भिड़ गए थे।

इतना ही नहीं, वह ब्रिटेन में शिक्षा को अनिवार्य बनाने के लिए भी सबसे लड़ गए। शिक्षा के सरकारी तंत्र को उन्होंने दुरुस्त करके गरीब ब्रिटिश बच्चों की साक्षरता का इंतजाम किया। कोमल हृदय बटलर ने दोनों विश्व युद्ध देखे थे और वह नहीं चाहते थे कि दुनिया विश्व युद्धों में खर्च होती रहे। उन्होंने आगे बढ़कर प्रयास किए कि शिक्षा व संस्कृति को सहेजने के लिए एक वैश्विक संस्था बनाई जाए। उनकी बड़ी भूमिका के चलते 16 नवंबर 1945 को यूनेस्को की स्थापना हुई। आज विश्व स्तर पर जब भी कहीं शिक्षा और संस्कृति की दिशा में बेहतर प्रयास होते हैं, तो भारत में जन्म लेने वाले आर ए बटलर (1902-1982) को जरूर याद किया जाता है। वह हमेशा इस बात की मिसाल रहेंगे कि दुनिया में सिर्फ दिमागी ताकत से भी तरक्की मुमकिन है।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

अब जब उनके लिए सत्ता का मखमली कालीन दसवीं बार बिछ चुका है, तब सवाल उठना लाजिमी है कि भारतीय राजनीति में नीतीश कुमार अकेली ऐसी शख्सियत हैं, जो अपने दम पर कभी बहुमत नहीं जुटा सके, लेकिन बिहार की सत्ता के वह बरसों से अनिवार्य तत्व हैं। क्यों? आने वाले समय में राजनीति विज्ञान के विद्यार्थी सियासत के इस नीतीश तत्व को कैसे आंकेंगे?

आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

भारतीय राजनीति का नीतीश तत्व

शशि शेखर

आजकल

वह गुजरते 2009 की एक उजली सुबह थी। पटना के होटल में मेरे सामने नीतीश कुमार के भरोसेमंद सहयोगी बैठे थे। मैंने उनसे पूछा कि आपके नेता की सफलता का राज क्या है? वह बोले, नीतीश बाबू राजनीति की बिसात पर ढाई कदम आगे और ढाई कदम पीछे एक साथ चलते हैं। उनके दाएं हाथ को नहीं पता होता कि बायां हाथ क्या करने जा रहा है?

वह यहीं नहीं रुके, रौ में बोलते चले गए- उनका करीबी से करीबी व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि हमारा नेता अगले क्षण क्या करने जा रहा है? नीतीश बाबू राजनीतिक शिष्टाचार का ख्याल रखते हैं और अपने विरोधियों पर भी कभी निजी हमले नहीं बोलते। यही वजह है कि उनके दोस्त आशंकित रहते हैं और सियासी दुश्मन आशान्वित। आशा और आशंका के इस झूले से वह न जाने कब किसको गिरा दें और किसको झुलाने लग जाएं? आज जिनसे लड़ाई है, उसके भी आस-पास उनके दो-चार लोग जरूर होंगे, क्योंकि कल दुश्मनों से दोस्ती की जरूरत पड़ सकती है। वह चाणक्य की इस उक्ति में यकीन रखते हैं कि राजनीति हो या जिंदगी, कोई स्थायी दोस्त या दुश्मन नहीं होता।

नीतीश कुमार का लंबा सियासी करियर इस कथन को चरितार्थ करता आया है।

अब जब उनके लिए सत्ता का मखमली कालीन दसवीं बार बिछ चुका है, तब सवाल उठना लाजिमी है कि भारतीय राजनीति में नीतीश कुमार अकेली ऐसी शख्सियत हैं, जो अपने दम पर कभी बहुमत नहीं जुटा सके, लेकिन बिहार की सत्ता के वह बरसों से अनिवार्य तत्व हैं। क्यों? आने वाले समय में राजनीति विज्ञान के विद्यार्थी सियासत के इस नीतीश तत्व को कैसे आंकेंगे? जवाब जानने के लिए 31 साल पीछे लौटना होगा।

वह वर्ष था 1994, जब नीतीश कुमार ने धुरंधर समाजवादी नेता जॉर्ज फर्नांडीस के साथ समता पार्टी बनाई थी। अगले साल विधानसभा चुनाव होने थे और बिहार की राजनीति में लालू यादव के वर्चस्व को खत्म करने के लिए दूसरे समाजवादी धड़े का यह संयुक्त उपक्रम था। 1995 के चुनाव में समता पार्टी ने नीतीश कुमार को आधिकारिक तौर पर अपना मुख्यमंत्री चेहरा जरूर घोषित किया, लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद वह 7.37 फीसदी मतों के साथ महज सात सीटें जीत सकी। अगले चुनाव, यानी सन् 2000 में समता पार्टी की स्थिति तनिक सुधरी और इस बार 34 सीटों पर विजय हासिल हुई। उस चुनाव में भाजपा के 67 विधायक चुने गए थे। इसके बाद नीतीश कुमार ने शपथ जरूर ली, लेकिन हुकूमत महज एक सप्ताह चल सकी।

इससे उन्होंने सबक लिया कि लालू यादव के तिलिस्म को तोड़ने के लिए जमीनी लड़ाई लड़नी होगी। अगले चुनाव से पहले नीतीश कुमार ने यही किया।

उन्होंने 2005 में प्रदेशव्यापी 'न्याय-यात्रा' निकाली। इसके पहले 2003 में जॉर्ज फर्नांडीस के साथ ही जनता दल यूनाइटेड (जद-यू) बना चुके थे। इस चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन, यानी एनडीए ने विधिवत रूप से उन्हें अपना मुख्यमंत्री उम्मीदवार घोषित किया था। फरवरी 2005 में हुए इस चुनाव में जद-यू को 55 और भाजपा को 37 सीटें मिलीं, लेकिन यह सरकार नहीं बना सके। रामविलास पासवान ने उन्हें मुख्यमंत्री स्वीकार करने से इनकार कर दिया था और इसी के साथ बहुमत का आंकड़ा गुम हो गया था। पासवान की जिद के ही कारण विधानसभा भंग करनी पड़ी थी। पासवान की पार्टी लोजपा के पास 29 विधायकों के साथ सत्ता की चाबी थी।

राष्ट्रपति के नुमाइंदे, यानी राज्यपाल की देख-रेख में नवंबर 2005 में दोबारा चुनाव हुआ था। इस बार जद-यू को 88 और भाजपा को 55 सीटें हासिल हुई थीं। बहुमत के इस आरामदेह आंकड़े के साथ नीतीश मुख्यमंत्री बने, तो एक व्यवधान के बावजूद वह आज तक कायम हैं। इस दौरान

उन्होंने एक बार राष्ट्रीय जनता दल के साथ भी चुनाव लड़ा और जीता, लेकिन यह साझेदारी 'बेर-केर का संग' होने के कारण दो साल से कम वक्त में टूट गई। हालांकि, 2022 में वह दोबारा राजद और कांग्रेस के साथ महागठबंधन का हिस्सा बने। निराशा ने इस बार भी साथ न छोड़ा और यह साझेदारी भी दूसरी वर्षगांठ न मना सकी।

निराश नीतीश फिर एनडीए गठबंधन का हिस्सा बन गए।

यहां यह मानने की भूल मत कर बैठिएगा कि वह कोई दलबदलू या सिर्फ स्वार्थ के लिए सत्ता का कारज साधने वाले शख्स हैं। अगर ऐसा होता, तो वह 2014 के आम चुनाव में अपनी पार्टी के खराब प्रदर्शन की जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफा न देते। उन्होंने उस वक्त जीतनराम मांझी को मौका दिया। हालांकि, यह भरोसा लंबे समय तक कायम न रह सका। नीतीश चाहें या न चाहें, पर भाजपा अपेक्षाकृत बेहतर और स्थायी साझीदार साबित हुई है।

नीतीश कुमार भली-भांति जानते हैं कि अपने सिद्धांतों और सपनों को धरातल पर लाने के लिए पटना के सचिवालय पर काबिज होना जरूरी है। उन्होंने इसे साबित किया है। बिहार की महिलाओं के लिए उन्होंने जो काम किया, वह इतिहास में अपनी मजबूत उपस्थिति के साथ कायम रहेगा। मैं पहले भी निवेदन कर चुका हूं कि बिहार के पुलिस बल में 37 फीसदी से अधिक की दमदार उपस्थिति यहां की महिलाएं रखती हैं। नीतीश ने ही देश में सबसे पहले हर बेघर परिवार को घर और हर घर को नल देने की योजना चालू की है। शराबबंदी उनका कठोर फैसला है। इसका असर राजकीय खजाने पर जो भी हुआ हो, लेकिन बिहार की ग्रामीण महिलाएं इसे हितकारी मानती हैं। उन्हीं के राज में बिहार की सड़कें दुरुस्त हुईं और कानून-व्यवस्था की स्थिति में जबरदस्त सुधार आया।

कोई आश्चर्य नहीं कि यहां की महिलाओं की वह पहली सियासी पसंद हैं। इस बार भी चुनाव से पहले 1.21 करोड़ महिलाओं को दस-दस हजार रुपये देकर उन्होंने उनका वोट आरक्षित करा लिया था। ऐसे में, हैरानी नहीं कि 6 और 11 नवंबर को 71.80 फीसदी मतदान कर महिलाओं ने न केवल अपने ही पुराने कीर्तिमान को ध्वस्त किया, बल्कि पुरुषों के मुकाबले 8.8 फीसदी अधिक मत डालकर एक अणे मार्ग की चाबी नीतीश कुमार के हाथ से फिसलने नहीं दी।

सिर्फ महिलाएं ही क्यों? उन्होंने अति-पिछड़ा और महादलित के नारे के साथ भी अपने वोटबैंक का विस्तार किया। यह वर्गीकरण उनकी सियासी समझ दर्शाता है। इसके साथ इतने सत्ता-वर्षों के बावजूद उनकी 'मिस्टर क्लीन' की छवि कायम है। उन पर निजी भ्रष्टाचार का कोई आरोप नहीं है। काजल की कोठरी में उजला बने रहना आसान नहीं।

इसके बावजूद बहुत कुछ है, जो वह नहीं कर सके। बिहार आज भी प्रति-व्यक्ति आय के मामले में निचले पायदानों पर खड़ा है। वह इतनी लंबी हुकूमत के बावजूद न तो लालू राज में दर-बदर हुए उद्योगों को वापस ला सके और न नए उद्योगों को लुभा सके। प्रतिभाओं और कामगारों का पलायन आज तक बिहार की समस्या बना हुआ है। अब जब वह फिर शपथ लेने जा रहे हैं, तब सवाल उठना लाजिमी है कि क्या वह अपनी ढलती उम्र की इस पारी में पलायन रोकने की दिशा में कोई कारगर काम कर सकेंगे?

हालांकि, यह सवालों का नहीं, बल्कि शुभकामना का वक्त है। आप चाहें, तो नीतीश कुमार को नई पारी की शुभकामनाएं दे सकते हैं।

@shekharkahin

@shashishekhar.journalist